हरिनारायण आप्टे

रामचन्द्र भिकाजी जोशी

MT
891.463 092
Ap 83 J

भारतीय

MT
891.463
Ap83J
092

अस्तर पर छपल मूर्त्तिकलाक प्रतिरूप मे राजा शुद्धाघनक दरबारक ओहि दृश्यकेँ देल गेल अछि जाहि में तीन गोट भविष्यवक्ता भगवान बुद्धक मायरानी मायाक स्वप्नक व्याख्या कय रहल छथि । हिनका लोकनिक नीचा मे एक गोट देवान जी बैसल छथि जे ओहि व्याख्या कें लिपिबद्ध कय रहल छथि । भारत मे लेखनकलाक ई प्रायः सभसँ प्राचीन एवं चित्रलिखित अभिलेख थिक ।

नागार्जुनकोण्डा, दोसर शताब्दी

सौजन्य : राष्ट्रीय संग्रहालय, नयी दिल्ली

भारतीय साहित्यक निर्माता

हरिनारायण आप्टे

लेखक

रामचन्द्र भिकाजी जोशी

अनुवादक

श्रीचन्द्रनाथ मिश्र 'अमर'

साहित्य अकादेमी

Hari Narayan Apte : Maithili translation by Srichandranath Mishra 'Amar' of R. B. Joshi's monograph in English. Sahitya Akademi, New Delhi (1985), **SAHITYA AKADEMI**
REVISED PRICE Rs. 15.00

© साहित्य अकादेमी

Library IIAS, Shimla
MT 891.463 092 Ap 83 J
00117136

प्रथम संस्करण : १९८५

साहित्य अकादेमी

प्रधान कार्यालय
रवीन्द्र भवन, ३५, फ़ीरोज़शाह मार्ग, नई दिल्ली ११०००१

क्षेत्रीय कार्यालय
ब्लाक V-वी, रवीन्द्र सरोवर स्टेडियम, कलकत्ता ७०००२९
२९, एल्डाम्स रोड, (द्वितीय मंज़िल) तेनामपेट, मद्रास ६०००१८
१७२, मुम्बई मराठी ग्रन्थ संग्रहालय मार्ग, दादर, बम्बई ४०००१४

मूल्य
SAHITYA AKADEMI
REVISED PRICE Rs. 15.00

MT
891.463092
AP83J

मुद्रक
जे० सामन्ता मशीनरी कम्पनी प्रा० लिमिटेड (प्रैस डिवीज़न)
१४-ए, कमला नगर, दिल्ली ११०००७

117136
9.12.04

विषय–सूची

१ व्यक्ति आ परिवेश ७

२ हरिभाऊ आप्टेसँ पहिलुक मराठी उपन्यास १८

३ हरिभाऊ आप्टेक उपन्यास : सामाजिक २८

४ हरिभाऊ आप्टेक उपन्यास: ऐतिहासिक ५२

५ अन्यान्य रचना आ निष्कर्ष ७५

परिशिष्ट :

क हरिनारायण आप्टेक मुख्य कृति ८३

ख परिगणित सन्दर्भ–ग्रन्थ ८४

१

व्यक्ति आ परिवेश

हरिभाऊ आप्टे नामसँ सुपरिचित हरिनारायण आप्टे सर्वसम्मतिसँ आधुनिक मराठी उपन्यासक संस्थापक रूपमे जानल जाइत छथि। हिनक १८८५ ई० मे प्रकाशित सर्वप्रथम उपन्यास मधली स्थिति, जकर अर्थ होइछ मध्य स्थिति, प्रकाशित होइते पाठक वर्ग द्वारा हाथे हाथ उड़ि गेलनि। ओना एकर वस्तुतः प्रकाशन 'पुणे वैभव' नामक एक मराठी साप्ताहिक पत्रमे धारावाही रूपमे १८८३ ई० मे आरंभ भेल छलैक। एहिमे लेखकक नाम नहि छलैक। तें जखने एकर एक वा दू अंश प्रकाशित भेल छल होयत कि चारूकातसँ लेखकक नाम जनबाक हेतु चिट्ठीक वर्षा जकाँ होअय लागल। ओहि चिट्ठी लिखनिहार लोकनिमे, जे लोकनि एकर भूरि भूरि प्रशंसाकयने छलथिन से सार्वजनिक क्षेत्र ओ साहित्यिक क्षेत्रक प्रमुख लोक सब रहथि। ताहि समय हरिभाऊक वयस मात्र उन्नैस बरखक छलनि आ ई पूना डेक्कन कालेजमे प्रथम वर्षमे पढ़ि रहल छलाह।

हिनक उपन्यासक प्रसंग आ एक उपन्यासकारक रूपमे हिनक स्थानक प्रसंग विचार करबासँ पहिने ई जानिलेब समीचीन होयत जे केहन परिवारमे हिनक जन्म भेल छलनि, कोन प्रकारक शिक्षा प्राप्त भेल छलनि, कोन परिवेशसँ सम्पृक्त रहैत छलाह आ अपन साहित्यिक चरित्र बनयबामे अपनाकें कोनरूपें सुसज्ज कय सकल छलाह।

हरिभाऊ आप्टेक जन्म ८ मार्च १८६४ ई० मे एक मध्यवित्त परिवारमे भेल छलनि। आस्थापात नीक नहियों रहैत परिवार प्रतिष्ठित छलनि। हिनक पितामहक मृत्यु भय गेलाक कारणें हिनक परिवार आर्थिक दुःस्थितिमे पड़ि गेल छलनि। ताहि समय हिनक पिताक वयस मात्र सोड़ह बरखक छलनि आ ओ विवाहित छलथिन, संगहि परिवारमे तीन गोटे पित्ती आ थोड़ वयसक दूटा पितिआइनि सेहो रहथिन। हिनकर पिता नारायण राव आप्टेकें अध्ययन छोड़ि बम्बैमे डाक-तार विभागक एक निम्नस्तरीय चाकरी करबाक हेतु बाध्य होअय पड़लनि। हिनक एहि निम्न आय पर मिलाजुला कय दस-बारह व्यक्तिक परिवार निर्भर छलनि। हरिभाऊक एक पित्ती माधव रावक विवाह चौदहमे

बरखक वयसमे भय गेल छलनि । अपन शैक्षणिक जीवनमे ओ पूर्णतः तेजस्वी रहलाह आ विधिवेत्ताक रूपमे बम्बैमे यथासमय ओकालति चमकि उठलनि ।

हरिभाऊक शिक्षा बम्बैमे भेलनि, पहिने ठाकुर द्वारक प्राथमिक पाठशालामे तदुत्तर एक मीशन स्कूलमे । परञ्च हिनक वास्तविक शिक्षा १८७८ ई० मे पूना उच्चविद्यालयमे प्रवेश प्राप्त कयलाक बादे आरम्भ भेलनि । एतहि तथा न्यू इङ्लिश स्कूलक जीवनकालमे, जतय १८८० मे प्रविष्ट भेलाह आ १८८२ धरि रहलाह, हरिभाऊ महाराष्ट्रक प्रमुख चिन्तक लोकनिक प्रभाव क्षेत्रमे अयलाह तथा एही अवधिमे हिनक बौद्धिकता आ चरित्र अपन स्वरूप ग्रहण कयलकनि । न्यू इङ्लिश स्कूलमे हिनक शिक्षक लोकनिमे विष्णुशास्त्री चिपलूणकर, गोपाल गणेश आगरकर एवं बाल गंगाधर तिलक सदृश विशिष्ट व्यक्तित्वक लोक छलथिन । ताहि कालमे एहि तेजस्वी लेखक लोकनिक ओजस्वी लेखनक प्रभाव महाराष्ट्रमे छलनि, जकर अनुभव एखनहु लोक करैत अछि । हरिभाऊ एक समुत्सुक पढ़निहार छलाह । विद्यालयीय जीवनमे हिनक अध्ययन क्षेत्र बहुत विस्तृत, वैविध्यपूर्ण छलनि आ पाठ्यविषयक बहिर्भूत विषयहुक आवश्यकतासँ अधिक अध्ययन करैत रहैत छलाह । विद्यालयमे पढ़ैत रहबाक जीवनकालहिमे संस्कृतक प्रमुख नाटक, काव्य, बाणरचित कादम्बरी आ दण्डीक दशकुमारचरित आदिकेँ अनेक आवृत्ति पढ़ि गेल छलाह । १८८१ ई० सँ १८८६ ई० क मध्य कालिदास रचित अभिज्ञान शाकुन्तलम् केँ एगारह खेप पढ़ि गेल छलाह । यूरोपियन लेखक लोकनिमे ई शेक्सपियर, मिल्टन, स्काट, शैली, कीट्स, मोलियर, थैकरे, डिक्केन्स, जेन आस्टेन आदिकेँ पढ़ि चुकल रहथि । अठारहम बरखक अन्त-पन्तनमे, प्रत्युत ताहिसँ किछु पूर्वहि, ई प्रवेशिका परीक्षोत्तीर्ण भेलाह, ताही समय आगरकर द्वारा कयल गेल शेक्सपियर रचित हेमलेटक अनुवादकेर बहतरि पृष्ठमे एक समीक्षा 'विकार विलसित' शीर्षक दय लिखने छलाह जाहिमे बेस तिक्ख-चोख आलोचना कयलथिन आ आगरकर महोदय एहि किशोर शिष्यक प्रतिभाकेँ उदारता पूर्वक स्वीकार कयने छलथिन । बहुधा हरिभाऊ वर्गमे संस्कृत एवं अङरेजी पाठ्यांशक वैकल्पिक अर्थ कहल करथिन आ हिनक शिक्षक बिनु कोनो ननु नच कयने स्वीकार कय लेल करथिन ।

आरम्भिक छात्रजीवनमे ई विष्णुशास्त्री चिपलूणकरसँ बहुत बेसी प्रभावित छलाह । उनैसम शताब्दक चतुर्थ चरण महाराष्ट्रक हेतु एक पैघ बौद्धिक ओ भावनात्मक उत्तेजनाक काल छल । पाश्चात्य शिक्षाक प्रथम प्रतिफल ओही समयमे दृष्टिगोचर भेल जाहिमे सबसँ सहमत नहि भेल जाय सकैत छल । किछु नवीन शिक्षित लोक पाश्चात्य जीवनपद्धतिकेँ अंगीकार कय लेने छलाह जाहि मे किछु अवांछित पक्ष सेहो छल, जेना मदिरापान । किछु गोटे सामाजिक दायित्वक प्रति अनुत्तरदायी भय गेल छलाह आ किछु अपन भाग्यकेँ चमकयबाक

बुद्धिएँ ओही जीवनपद्धतिकेँ सर्वांशतः स्वीकारि चुकल छलाह । एहन व्यक्तिक वर्णन आन्हर, निष्क्रिय आ बिनु सोचने विचारने पाश्चात्य जीवनक अन्धानुकरण कयनिहार आदि शब्दमे कयल जाय सकैत अछि । परन्तु बुद्धिजीवी समाजमे एहि परिवर्तित होइत स्थितिक प्रतिक्रिया दुइ प्रकारक छल । एक वर्ग पाश्चात्य शिक्षा आ एहिमे निहित लाभक समर्थन करैत छल, परंच परम्परागत सामाजिक व्यवस्था आ धार्मिक विश्वासक पुनर्मूल्यांकनक प्रसंग आवश्यक रूपेँ नहि सोचैत छल । एहि वर्गक नेतृत्व विष्णुशास्त्री चिपलूणकर करैत छलाह । ओ प्रखर एवं मर्म भेदिनी लेखनी रखनिहार छलाह जकर उपयोग ओ सामाजिक आ धार्मिक सुधारक पक्षपाती प्रधान व्यक्तिक उपहास करैत हुनका लोकनिकेँ मूर्ख, उपेक्षणीय अथवा देशद्रोही. दम्भी एवं सरकारक चाटुकारक रूपमे चित्रित करबामे करैत छलाह । ओ स्वयं पूना उच्चविद्यालयमे सरकारी सेवामे एक शिक्षकक रूपमे रहि चुकल छलाह आ ओतहि हरिभाऊ छात्रक रूपमे हुनका भेटलथिन । १८८० ई० मे अपन तीसम बरखक वयसमे विष्णुशास्त्री सरकारी सेवासँ त्यागपत्र दय न्यू इङ्लिश स्कूल नामक अपन निजी विद्यालय स्थापित कयलनि । विष्णुशास्त्री अन्यान्यो अनेक संस्थाक स्थापना कलयनि । उदाहरणार्थ ओ दुइ गोट साप्ताहिक समाचारपत्रक प्रकाशन आरम्भ कयलनि मराठीमे 'केसरी' आ अङरेजी में 'मराठा' । ई एहि हेतु जे अपन राष्ट्रिय विचारक प्रचार एवं सार्वजनिक हितमे शिक्षित भारतीय विद्वानक स्वतन्त्र विचारक अभिव्यक्ति हेतु उपयुक्त मंच उपलब्ध भय सकय ।

एहि प्रकारेँ विष्णशास्त्री प्रेरणाक एक ऊर्जा केन्द्र छलाह जनिकर चारूकात अनेक शिक्षित नवयुवक आकृष्ट भेल रहैत छलथिन । तेँ ई सर्वथा स्वाभाविक छल जे हरिभाऊ सन मेधावी ओ ग्रहणशील मस्तिष्कक युवक विष्णुशास्त्री चिपलूणकरसँ प्रभावित भेलाह ।

ठीक ताहीकालमे एक दोसर विचारधारा विकसित भय रहल छल । एहि विचारधाराक अनुयायी लोकनिक मत छलनि जे स्वयं हमरालोकनिक विश्वास आ जीवन-पद्धतिमे किछु दूषण ओ त्रुटि अछि जे हमरालोकनिक विदेशी प्रभुत्वक अधीनताक मूल कारण थीक । बिनु एहि सबकेँ दूर कयने हम सब ने दृढ़, ने स्वस्थ ओ ने प्रगतिशील भय सकैत छी । ई लोकनि हेतुवाद आ तर्कसंग लागल अन्वेषणक भावनाक स्वागत कलयनि । एहि वर्गक प्रबलतम पक्षधर छलाह गोपाल गणेश आगरकर ।

एक तेसरो वर्ग छल जे मध्यम मार्गकेँ नीक मानैत छल । न्यायमूर्ति महादेव गोविन्द राणाडेक नेतृत्वमे ई वर्ग बृटिश शासन एवं ओकरा द्वारा प्रवर्तित शिक्षण पद्धतिकेँ छद्मवेशमे ईश्वरीय आशीर्वाद मानैत छल तथा विश्वास करैत छल जे बृटिश शासनक मनोभाव उदार छैक आ समष्टिरूपमे अपना देशक हेतु हितैषी

ओ कल्याणकर अछि। एकर आशय ई नहि जे ओ लोकनि एहि तथ्यसँ अनभिज्ञ रहथि जे विदेशी शासन अनेक दृष्टिएँ भारतीय जनताक आवश्यकता ओ माङ्क प्रति कठोर आ उदासीन छल। सामाजिक ओ धार्मिक सुधारक जहाँ धरि प्रश्न अछि, एहि वर्गकेँ सावधानता पूर्वक क्रमिक प्रगतिशील कहल जाय सकैछ।

विष्णुशास्त्री चिपलूणकर १८८२ ई० मे मात्र ३२ बरखक वयस मे दिवंगत भय गेलाह। अपन आरम्भिक वयसमे हरिभाऊ विशेषरूपेँ हिनकेसँ प्रभावित रहथि। ओ हिनक मृत्युसँ ततेक शोकाभिभूत भेलाह जे 'शिष्यजन-विलाप' शीर्षक एक शोकगीत रचलनि जकर एक हजार प्रतिमात्र दुइए दिन मे बिकाय गेलनि।

यद्यपि न्यू इङ्लिश स्कूलमे आगरकर हिनक शिक्षक छलथिन, मुदा हरिभाऊ पर ताहि अवधि मे हुनकर साहित्यक अथवा सुधारवादी दृष्टिकोणक विशेष अनुकूल प्रभाव नहि पड़ल छलनि। आगरकरक विकार विलासितक सन्दर्भ मे हिनक आलोचनाक उल्लेख सर्वदा कयल जाइत छनि। परच एहिसँ एक बरख पहिनहु कालिदास आ भवभूतिक प्रतिभाक तुलनात्मक विवेचनक क्रम मे आगरकरक सग शास्त्रार्थ भय चुकल छलनि। आगरकर कालिदासकेँ भवभूतिसँ श्रेष्ठ आ हरिभाऊ भवभूतिकेँ कालिदाससँ श्रेष्ठ स्थान देने छलथिन। ओ ई पूर्ण आत्मविश्वासक सग कय सकलाह, कारण जे हिनका सस्कृत साहित्यक गहन अध्ययन छलनि।

परन्तु क्रमशः आगरकरक प्रति हिनका दृष्टिकोणमे परिवर्तन होअय लगलनि। एकर कारण भेलनि—१९८२ ई० मे कोनहु समय गोविन्द काणेत्कर सँ आ किछुए दिनुक अनन्तर हुनक पत्नी श्रीमतीकाशाबाई काणेत्करसँ हिनक परिचय। काणेत्कर महाशय न्यायिक सेवामे रहथि। हुनक अध्ययन विस्तृत, चिन्तन गम्भीर, दृष्टिकोण प्रगतिशील आ मास्तिष्क सन्तुलित रहनि। ताहि समय महिलाकेँ शिक्षा प्राप्त करबामे, एतेकधरि जे साक्षरो मात्र होयबामे कोन प्रकारक कठिनतासँ सघर्ष करय पड़ैक से विचार करैत ओ अपना पत्नीकेँ शिक्षित कयने छलाह। हुनक पत्नीओकेँ एकर श्रेय छलनि जे ओ अपना पतिक एहि प्रयत्नकेँ पूर्णतः हृदयंगम कयलनि आ यथाशीघ्र एक गुणवती महिला बनि गेलीह। हरिभाऊ हुनका प्रति अतिशय आदर रखैत छलथिन तथा हुनक दृष्टिकोणक सम्मान करैत छलथिन, यद्यपि कखनहु कोनो कोनो अवसरमे मतभिन्नता होइतहु अपन विचार व्यक्त करबामे हिचकिचाइत नहि छलाह। काणेत्कर महाशय हरिभाऊकेँ जे० एस० मिल केर रचनासँ, विशेषतः हुनक नारीक वश्यता (सब्जेक्शन आफ ओमेन) सँ परिचय करौलथिन। हरिभाऊ ओहि पोथीकेँ बेरि बेरि अनेक आवृत्ति पढ़ि गेलाह। एहि पुस्तकसँ आ हरबर्ट स्पेन्सरक तथा बादमे मोर्लेक रचनासँ ततेक प्रभावित भेलाह जे क्रमशः

आगरकरक विचारक समर्थन करय लगलथिन आ अन्ततः हुनक प्रशंसक बनि गेलथिन । सेहो ताहि सीमाधरि जे जखन आगरकर १८८८ ई० मे अपन विचारक प्रचार-प्रसार हेतु अपन पत्र प्रकाशित करबाक निर्णय लेलनि तखन हरिभाऊ हुनका एक महानपुरुष तथा श्रेष्ठ आचार्यक संज्ञा देलथिन आ अतिशय प्रसन्नता ओ उत्साहसँ प्रतिक्रियावादी लोकनिकेँ देखार करबामे सहायता करबाक हेतु प्रस्तुत भय गेलथिन ।

एहीमध्य गोपाल कृष्ण गोखले डेक्कन एजुकेशन सोसाइटी आ फर्गूशन कालेजमे आबि गेलाह । हरिभाऊ हुनक आ राजनीतिमे उदार विचार रखनिहार तथा समाज-सुधारक लोकनिक निकट सम्पर्कमे अयलाह । पछाति दूनू अन्तरंग मित्र बनि गेलाह । गोखलेक संग रानाडेक निकट सहयोगी सेहो भय गेलाह । ई निकटता एतेक बढ़ि गेलनि जे गोखले जखन भारतसँ बाहर रहथि ताहि समय डेक्कन सभाक संयुक्त सचिवक कार्य सम्पादन यैह करैत रहथि । ई संस्था जनहित विषयक अध्ययन आ जनताक अभाव-अभियोगकेँ अभिव्यक्ति देबाक हेतु राणडे द्वारा संस्थापित भेल छल ।

हरिभाऊ अपन विद्यार्थीए जीवनसँ एक बुभुक्षु पाठक रहथि आ हिनक अध्ययन शीलताक प्रति ई अनुराग आजीवन बनल रहलनि । मिल रचित नारीक वश्यता नामक पुस्तक ई अनेक आवृत्ति पढ़ि चुकल छलाह तकर चर्चा पहिनहु कयल जाय चुकल अछि । तहिना ई एक बेरि बाजल रहथि जे मोलेँ रचित एकोपंक्ति छूटल नहि छल जकरा ई नहि पढ़ि गेल होथि । भारतीय भाषासबमे मराठी, जे मातृभाषा रहनि आ संस्कृतक अतिरिक्त बंगला सेहो ततेक नीक जकाँ जनैत छलाह जे कोनो बंगलाभाषीक संग बंगलामे शास्त्रार्थ करब आ तकरा पराभूत करबामे समर्थ रहथि । यूरोपीय भाषा सबमे अङरेजीक अतिरिक्त फ्रेंच आ जर्मन सेहो जनैत छलाह । हिनक पत्राचारमे एकर उल्लेख भेटैछ जे जर्मन भाषाक एक पोथी मङबाय पढ़ने रहथि । हिनका द्वारा कयल गेल विभिन्न विषयक विस्तृत अध्ययन एवं प्रमुख ग्रन्थ सभक गहन अनुशीलन कोनो विश्व-विद्यालयीय उपाधिक अभाव रहितो हिनक विद्वत्ताकेँ ताहिसँ उच्च बना देने छलनि । परंच ईहो सत्य जे एक दीर्घ अवधि धरि विश्वविद्यालयीय उपाधि नहि प्राप्त करबाक कारणेँ ई उदास रहलाह । मुदा तकर क्षतिपूर्तिओसँ बेसी महत्त्वक भेलनि जखन बम्बै विश्वविद्यालय हिनका मराठीक स्नातकोत्तर परीक्षामे परीक्षक नियुक्त कयलकनि ।

मुदा हरिभाऊ ने कोनो पुस्तकीय कीट छलाह ने हस्तिदन्तनिर्मित स्तूपाकार उपन्यासकार । ई सार्वजनिक जीवन मे सक्रिय भाग लैत छलाह । ताहि समयक क्रममे जखन जखन पूनामे प्लेग महामारीक रूपमे पसरि जाइक, ई बहुधा प्राणहु पर संकट उठाय स्वयं-सेवकक काज कयल करथि । ई अनेक बरख

धरि पूनानगरपालिकाक सदस्य नियुक्त कयल गेलाह आ एक सत्रमे नगर-पालिकाध्यक्षो ।

१८९० ई० मे ई 'कर्मणुक' नामक पत्रिका स्थापित कयलनि जकर संपादन अपनहि करैत छलाह आ तकरा बादसँ जीवन भरि जे किछु लिखैत रहलाह से समस्त रचना एही पत्रिकामे प्रकाशित होइत रहलनि । एकर अतिरिक्त आगरकरक मृत्युक पश्चात् ई हुनक सुधाकर नामक पत्रक एवं एक अन्य उदार-वादी 'ध्यान प्रकाश' नामक दैनिक पत्रक संपादनमे सहायता करैत रहलथिन । एहि प्रकारेँ ई पूर्ण ओ सक्रिय जीवन व्यतीत कयलनि । हिनक मित्र-मण्डल विशाल छलनि आ ताहि मित्र लोकनिक संगतिक पूर्ण आनन्दक उपयोग कयलनि ।

उपरिलिखित अंशमे दर्शाओल गेल अछि जे महाराष्ट्रमे उनैसम शताब्दक अन्तिम चरण एक पैघ सामाजिक ओ बौद्धिक उत्तेजनाक काल छल । परंच ताहि पचीस बरखक अभ्यन्तरक दस बरख अर्थात् १८८५ सँ १८९५ ई० क अवधि सर्वाधिक हलिमालिक अवधि छल । एहि मध्य किछु विषय एहन उठल जे उत्तेजनाकेँ ताहि रूपेँ बढ़बैत गेल जाहिसँ अन्तरंगमित्र एक दोसराक शत्रु बनि गेल, जे आजीवन संग मिलि काज करबाक प्रतिज्ञाकयने छल से एक दोसरसँ फुटि गेल आ समाचार-पत्र एवं सभा-समितिक माध्यमसँ सार्वजनिक अन्तर्विरोधक स्तर तर्क वितर्कसँ नीचाँ उतरि गरागरौअलिक रूप धय लेलक । एहन सन बुझबामे आबय लागल जेना सम्पूर्ण महाराष्ट्रक शिक्षित वर्ग दुइ विरोधी शिविरमे विभाजित भय गेल हो—एक सामाजिक सुधारक ओकालति कयनिहार आ दोसर तकर विरोधी । ताहि समयमे समाज-सुधारक प्रश्न दुइ-तीनि विषय पर आबि केन्द्रित भय गेल छल, से छल बाल-विवाह, विधवा-विवाहक विरोध आ स्त्री-शिक्षा । सारांशतः एहि तीनूकेँ समेकित रूपमे-हिन्दू समाजमे महिला वर्गक स्तर ओ अधिकार-कहल जाय सकैछ ।

१८८४-८५ मे बाल-विवाह आ बलात् वैधव्यक प्रसंग बिरामजी मालावारी पर्चा सब प्रकाशित करय लगलाह आ एकरा विरुद्ध कोपोद्दीपक जनमत जगबय लगलाह । भारतीय नेता लोकनिसँ आग्रह कयलापर सन्तुष्ट नहि भय सकलाह तँ ओ पर्चा सब इङ्गलैण्ड पठाय ओहि ठामक समान विचार रखनिहार लोकनिसँ अनुरोध कयलथिन । एहिसँ महाराष्ट्रक रूढ़िवादी लोकनिक मध्य बिहाड़ि उठि गेल । मालावारीक वस्तुतः हिन्दू संस्कृति-सभ्यताक प्रति हस्तक्षेप करबाक अनधिकार चेष्टा पर आपत्ति कयल गेलनि । १८८८ ई० क अन्तमे ई विवाद चरम बिन्दु पर पहुँचि गेल जखन कानूनक आश्रय लय विवाहक वयसकेँ बढ़यबाक प्रयास कयल गेल । सभा कयल गेल, हस्ताक्षर संकलित भेल, एकर पक्ष ओ विपक्षये अनुरोधपरक भाषण भेल, दूनू प्रकारक विचार उपस्थित भेल

आ एहि विवादमे शिष्टाचार आ मर्यादाकेँ दूर फेकि देल गेल । अन्ततः सहमतिक वयस बढ़यबाक विधेयक पारित भय गेल आ १८९१ ई० मे एतत्सम्बन्धीकानून बनि गेल । १८६६ मे भारतीय दण्डसंहिताक अन्तर्गत जे वयसं १० बरख छल से बढ़ाय १२ कय देल गेल ।

एहि विवादमे दुइ गोट विचारणीय प्रश्न छल । पहिल तँ ई जे की एहि प्रकारक सुधार सर्वथा आवश्यक अछि ? दोसर यदि आवश्यके अछि तँ की कोनो विदेशी द्वारा बनाओल गेल कानून द्वारा एकरा कार्यान्वित कयल जयबाक चाहैत छल ? विधेयक पारित भय गेला उतर ई विवाद स्वतः समाप्त भय गेल ।

एहि अवधिमे एक दोसरो समस्या ठाढ़ भेल जे वस्तुतः व्यक्तिगत छल, मुदा ओ एकटा पैघ झंझटकेँ अपनामे लपेटि लेलक । १८८४ मे दादाजी नामक एक गोटे न्यायालयमे ई माङ लय उपस्थित भेलाह जे हुनक पत्नी रखमाबाईकेँ हुनका संग रहबाक आदेश देल जाइनि । रखमाबाई अपना पक्षमे कतोक कारण उपस्थित करैत एकरा अस्वीकार कयलनि । लोअर कोर्ट दादाजीक विरुद्ध निर्णय देलकनि । परन्तु हाइकोर्ट लोअर कोर्टक निर्णयकेँ उनटैत रखमाबाईकेँ आदेश देलकनि जे ओ अपना पतिक संग रहथु नहि तँ जहलक हवा खाथु । रखमाबाई पतिक संग रहबाक अपेक्षा जहलेमे रहब नीक बुझलनि । एहि मामिलामे विवादक विषय ई नहि छल जे कानून की अछि आ न्यायालयक निर्णय विधि-सम्मत अछि वा नहि । विचारणीय ई छल जे कोनो पत्नीकेँ ओकर इच्छाक विरुद्ध पतिक संग रहबाक हेतु बाध्य कयल जयबाक चाही ? एहू प्रसंग दूनू पक्ष एक दोसरासँ खूब थुक्कम फज्झैती कयलक आ बेस कटु वादविवाद भेल, जाहिमे प्रमुख नेतागण सम्मिलितर हलाह । अन्ततः दादाजी स्वयं निर्णय लेलनि जे न्यायालयक निर्णयक अनुपालन पर जोर नहि देल जाय आ हुनक समर्थको लोकनि अनुभव कयलाथिन जे बलात रखमाबाईकेँ पतिक संग राखबसँ नीक जे फराके रहथि । अतः ई समस्या स्वतः समाप्त भय गेल ।

तेसर विवाद शारदासदनकेँ लय ठाढ़ भेल । १८८९ ई० मे पण्डित रमाबाई बम्बैमे एहि सदनक स्थापना कयलनि । प्रथमतः हिन्दू युवती विधवालोकनिकेँ शिक्षित करबाक हेतु ई सदन स्थापित भेल छल, मुदा अन्यान्यो अविवाहिता कन्या लोकनिक नामांकन कयल गेलनि । रमाबाई उच्च कोटिक प्रत्युत्पन्नमति रखनिहारि सुयोग्य विदुषी आ शास्त्र-पारंगत महिला छलीह । हुनक विवाह एक ब्रह्मो (ब्राह्मण) क संग भेल छलनि, परन्तु युवावस्थेमे विधवा भय गेल रहथि । ओ जनैत छलीह जे युवती हिन्दू विधवाक स्थिति केहन दयनीय रहैत छनि । एहि सदनक स्थापना आ संचालनमे समाज सुधार एवं नारीशिक्षाक पक्षधरलोकनिसँ हुनका सहायता भेटल छलनि । परन्तु आर्थिक सहायता विदेशी ईसाई मिशनसबसँ प्राप्त होइत छलनि । कारण आरम्भमे विदेश प्रवासक क्रममे

रमाबाई ईसाई भय गेलि छलीह। निर्णय ई छल जे रमाबाई यद्यपि स्वयं ईसाई छथि, मुदा सदनक अन्यान्य सदस्यालोकनिकेँ ईसाई धर्म स्वीकार करबाक हेतु प्रेरित नहि करथिन। १८९० मे अनेक कारणेँ सदनक प्रधान कार्यालय पूना स्थानान्तरित कय देल गेल तथा किछुए दिनुक पछाति खबरि पसरय लागल जे सदनमे किछु कन्याकेँ ईसाई बना देल गेल अछि। रमाबाईक कहब छलनि जे ओ ककरो ईसाई धर्म अंगीकार करय नहि कहथिन, मुदा अपन इच्छासँ जे स्वीकार करय चाहत तकरा रोकबो नहि करथिन। अन्तमे सहानुभूति रखनिहार हिन्दू लोकनि अपन समर्थन आपस लय लेलथिन आ ई विशुद्ध ईसाई सदन रहि गेल। मुक्ति सदन नामसँ एकरा केदगाँव स्थानान्तरित कय देल गेलैक आ एहि विवादक अन्त भय गेलैक।

एहि सम्पूर्ण अवधि ओ समस्त विवादमे हरिभाऊक हृदय आ हुनक सहानुभूति सुधारवादीक पक्षमे रहलनि, मुदा स्वयं सक्रिय रूपेँ एहिसँ सम्बद्ध नहि रहि सकलाह। एकर कारण हिनक वैयक्तिक जीवन आ घरैया परिस्थिति परिलक्षित होइत अछि। ई सब तेहन विषम छलनि जाहिसँ बहुत अप्रसन्न आ दुखी रहलाह। जखन ई मात्र चारि बरखस रहथि तखने हिनक भाय मारे गेलथिन आ हिनक पिता दोसर पत्नी लय अनलथिन। हरिभाऊ अपन पित्ती माधवरावक जे पत्नी छलथिन ताहि पितिआइनिक संरक्षणमे रहलाह, मुदा ओहो जखन ई आठ बरखक भेलाह तखने १८७२ मे स्वर्गवासिनी भय गेलथिन। तखन परिवारक प्रौढ़ सदस्यक दुलार-मलार मात्र भेटैत रहलनि। सम्पूर्ण परिवार हरिभाऊक पितापर आश्रित रहनि आ पिता डाक-तार विभागमे नोकरी करैत छलथिन। नोकरीमे हुनक बदली सेहो भय सकैत छलनि। हरिभाऊकेँ किछु सहायता अपन पित्ती महादेव चिमनजी आप्टे सेहो कयलथिन, जनिका बम्बैमे ओकालति सँ नीक आय होइत छलनि। विधुर भय गेलाक बाद माधवराव फेर विवाह नहि कयलनि, परन्तु मद्यपान करय लगलाह आ एकटा धौरवीकेँ अपना सग राखि लेलनि। ई सबकाज बहुत अंशधरि अपन शेष परिवारसँ परिकीय बना देलकनि। परिवारक अन्य सदस्य सभक सम्पत्ति, घर-द्वार पूनामे छलनि, हरिभाऊ परिवारक संग रहबाक हेतु १८७८ मे पूनाचल अयलाह। १८७९ मे जखन केवल पन्द्रह बरखक रहथि तँ हिनकर विवाह भय गेलनि।

हरिभाऊ १८८३ मे मैट्रिक परीक्षा उत्तीर्ण भेलाह आ पाँच बरखधरि पढ़ैत रहलो उत्तर प्रीवियस परीक्षोत्तीर्ण नहि भय सकलाह, कारण गणितसँ अतिशय अरुचि छलनि। तेँ अन्ततः १८८८ मे पढ़ब छोड़ि देलनि।

आब ई चौबीस बरखस भय गेल छलाह। दुइ गोट उपन्यास प्रकाशित भय चुकल छलनि, एक लेखकक रूपमे स्थान प्राप्त कय चुकल छलाह, परन्तु एहिसँ कोनो विशेष अर्थलाभ नहि भेल छलनि। कोनो परीक्षा उत्तीर्ण नहि

रहथि, तेँ कतहु जीविकाप न नहि भय सकलाह । जीवन निर्वाह योग्य अपन तेहन साधन नहि छलनि । विवाहित रहथि आ सुधारवादी प्रवृत्तिक लोक; तेँ अपना पत्नीकेँ शिक्षिता बनयबाक प्रयास कयलनि । हिनक इच्छा छलनि जे हिनक पत्नी काशीबाई कानिटकरकेँ आदर्शमानि तकर अनुगमन करथु, जे हिनका दृष्टिमे विवाहिता आ शिक्षिता नारीक आदर्श स्वरूप छलथिन । किन्तु हरिभाऊक परिवारमे सुधारवादी प्रयासक घोर विरोध छलनि आ हिनक पत्नी अपनहु लिखबा-पढ़बाक इच्छुक नहि भेलथिन । एहिसँ अपना पत्नीसँ हिनका बहुत निराशा भेलनि । परिवारमे कनिष्ठ रहलाक कारणेँ अपना विचार पर जोर देबाक स्थितिमे नहि रहथि । फलतः अपनाकेँ कुण्ठित आ असहाय अनुभव करय लगलाह । हिनक पित्ती हिनकासँ बहुत आशावान छलथिन आ हुनक इच्छा छलनि जे हरिभाऊ विधिशास्त्रमे उपाधि प्राप्त करथि आ हुनक निर्देशनमे काज करथि, मुदा हुनको निराश होअय पड़लनि ।

१८८८ ई० सँ हिनका पित्तीमे परिवर्तन आबि गेलनि । ओ समाज सुधारकक सिद्धान्तसँ हटि, रूढ़िवादी वर्गक कट्टर समर्थक बनि गेलथिन । पूनामे आनन्दाश्रम नामसँ एक संस्थाक निर्माण कयलनि आ ओकर संचालनक हेतु एक न्यास बना देलथिन । संस्थाक उद्देश्य छलैक प्राचीन संस्कृत ग्रन्थक संकलन-संरक्षण, संपादन ओ प्रकाशन तथा विद्वान ब्राह्मण, साधु ओ संन्यासीक सेवा-सत्कार करब । ओतय एक शिवमन्दिर छलैक जाहि मे शास्त्रोक्त विधिएँ नियम-निष्ठासँ पूजा होइत छलैक ।

माधवराव हरिभाऊकेँ ओहि संस्थानक प्रभारी बना देलथिन आ हिनका परिवार साहुजक भरण-पोषण हेतु एक निर्धारित राशि लय लेबाक अनुमति दय देलथिन । एहिसँ हिनकामे किछु आर्थिक स्थायित्व अयलनि, परन्तु संगहि हिनका दुविधामे राखि देलकनि । अपना विचारसँ ई कट्टर सुधारवादी रहथि आ न्यासक प्रबन्धकक रूपमे अनुगमन ओ समर्थन करय पड़ैत छलनि रूढ़िवादी जीवन पद्धतिक । ई स्थिति हिनका बहुत पीड़ित करैत छलनि, मुदा एहिसँ बहरयबाक कोनो उपाय नहि छलनि । ई एकसरे आश्रममेर हैत छलाह आ हिनक आङनवाली पहिने जकाँ शेष परिवारक संग रहैत छलथिन ।

१८९१ मे हिनकर पत्नीक देहान्त भय गेलनि । ताहि समय ई मात्र सत्ता-इस बरखक रहथि जे वयस फेर विवाह करबाक हेतु उपयुक्त छलनि । एक सुधारकक रूपमे हिनका हेतु उचित छलनि जे कोनो विधवासँ विवाह करथि अथवा आजीवन फेर विवाह करबे नहि करथि । हिनका सोझाँ न्यायमूर्ति महादेव गोविन्द राणाडेक घटना उदाहरण स्वरूप छलनि । राणाडे विधुर भेला पर अपन पिताक दुराग्रह पर एकतालिसम बरखक वयसमे एगारह बरखक कन्यासँ विवाह कयने रहथि । परिणामतः राणाडे अपनाकेँ सुधारवादी आ

रूढ़िवादी दूनू पक्षसँ आलोचनाक पात्र बना लेलनि। हरिभाऊ सेहो राणाडेक आचरणक अनुमोदन नहि कयने रहथिन। आब हिनका अपनहु परीक्षाक घड़ी आबि तुलयलनि। अपना परिवारमे स्थितिकेँ देखैत कोनो विधवासँ विवाह करबाक प्रश्ने नहि उठैत छलनि। तेँ आजीवन अविवाहिते रहि जयबाक निर्णय लेलनि आ सम्पूर्ण परिवारकेँ एहि निर्णयसँ अवगत करा देलथिन। किन्तु हिनक दोसर विवाहक कथा-वार्त्ता चलय लागल छलनि, कन्याक अन्वेषण सेहो आरम्भ भय गेल रहनि। परिवारक लोक हिनका प्रतिकठोर आ प्रतिकूल रूखि पकड़ि लेने छलनि। एहिसँ ई आओरो विरुझि गेल छलाह। हिनका अपन पितामही बड़ बेसी मानैत छलथिन, तेँ हुनकासँ बहुत निकट छलाह। ओ जीविते छलथिन। ओ हठ पूर्वक दोसर विवाह करबाक वचन हिनकासँ लय लेलथिन। ओ कहलथिन जे जँ ई से नहि करताह तँ ओ शान्तिपूर्वक मरिओ नहि सकतीह।

हरिभाऊक दोसर विवाह १८९२ मे भय गेलनि। ओहि समय अट्ठाइस बरखक छलाह आ नवकी कनिञा मात्र एगारह बरखक, दूनूमे सत्रह बरखक जेठाइ-छोटाइ। हिनका ठीक ओहने काज करबाक हेतु बाध्य होअय पड़लनि जेहन काजक हेतु ई राणाडे पर दोषारोपण कयने छलथिन। जेँ हेतु ई विवाह हिनका पर थोपल गेल छलनि तेँ ई तेहन रूखि धयलनि जेना ई विवाह भेले नहि होइक। ई पहिने जकाँ आश्रममे रहब जारी रखलनि आ पत्नी शेष परिवारक संग रहथिन। केवल भोजन करबाक हेतु गामपर आबथि। एक प्रकारेँ ई हिनक आचरण अपना पत्नीक प्रति अनुचित मानल जयतनि।

अन्ततः हिनक आङनवाली हिनका दाम्पत्यक दायित्व-बोध करौलथिन आ अपना-अपना संग आनन्दाश्रममे रखबाक हेतु मनाय लेलथिन, मुदा ई सब विवाहक एगारह बरखक बाद १९०३ ई० मे भेलनि। हरिभाऊ अपना स्त्रीक प्रति ने कोनो दुर्व्यवहार कयलथिन ने निर्दय रहलथिन, मुदा विगत एगारह बरख तँ दूनू प्राणीक हेतु दासण यन्त्रणाक अवधि रहलनि। तथापि आनन्दाश्रमक सहवासक जीवन दूनू गोटेक हेतु आनन्दमय रहलनि, कारण हरिभाऊ स्वभावेँ कोमल हृदय आ स्त्रीवर्गक प्रति सहानुभूतिशील व्यक्ति रहथि। ई दोसर पत्नी सामान्य लिखलि पढ़लि छलथिन, ई ताहिमे आओरो प्रोत्साहित करैत रहलथिन।

एही बीच १८९४ मे हिनक पित्ती मरि गेलथिन आ पिता १८९६ मे सेवानिवृत्त भय परिवारक संग रहबाक हेतु पूना आबि गेलथिन। ओ १९१५ ई० धरि जीवैत रहलथिन। आने लोक जकाँ ओहो कट्टर रूढ़िवादी रहथिन। ओ हरिभाऊक विचारसँ सहमत नहि छलथिन, मुदा सक्रिय विरोधो नहि कयलथिन। विरोध कइयो ने सकैत छलथिन, कारण ताहि कालधरि हरिभाऊक

स्तर ऊपर उठि गेल छलनि, एक लेखकक रूपमे स्थापित आ ख्यात भय चुकल छलाह आ सार्वजनिक जीवनमे सेहो हिनक स्थान प्रमुख बनि चुकल छलनि।

१९०६ ई० मे हरिभाऊकेँ एक कन्या भेलनि जकरा स्वभावतः बड़बेसी दुलारमलार करैत छलथिन, मुदा दुर्भाग्यवश १९१३ मे ओ हिनका जीवनमे एक रिक्तता छोड़ि दिवंगता भय गेलनि। हिनक व्यक्तिगत जीवनक ई विस्तृत विवरण किछु अंशधरि एक उपन्यासकारक रूपमे हिनक जीवनक हेतु प्रासंगिक छनि। हिनकर सुधारवादी दृष्टिकोण, सुधारवादी लोकनिक संग सम्पर्क, परिवारमे हिनक स्थान, ताहिसँ हिनक सम्बद्धता आ अपना पित्ती पर आश्रित रहब ई सब हिनका विपरीत दिशामे मोड़ैत रहलनि आ ताहिसँ ई एक प्रकारक मानसिक तनावसँ पीड़ित रहलाह। श्रीमान ओ श्रीमती काणित्करकेँ लिखल हिनकर चिट्ठीसब मे एकर झलक भेटैत अछि। हिनका अपना एकटा घर नहि छलनि, जे चित्तकेँ बहुत बेसी कचोटैत रहलनि, परन्तु एहन यातनामे रहितहु ई टुटलाह नहि। ने ककरोसँ विरक्त भेलाह ने ककरो प्रति कटु। एहि सब स्थितिकेँ छाती वज्र कय सहैत रहलाह आ मस्तिष्ककेँ विकृत नहि होअय देलनि।

स्वभावसँ ने ई आन्दोलनकारी रहथि ने प्रचारक। अध्ययन करैत रहब व्यसन छलनि आ लिखैत रहब उत्कण्ठा। १८९० ई० मे कर्मणुक नामक पत्र चलबय लगलाह आ जाहिमे बादक सब उपन्यास प्रकाशित भेलनि। ताहि पत्रक उद्देश्य छलैक पाठककेँ सूचना देब, आनंद प्रदान करब आ शिक्षित करब। विवादकेँ एकरासँ फराके राखल गेल। मुदा ओ परिवेश, जाहि मे ई जीलाह आ सार्वजनिक जीवनक हिनक अनुभव, हिनका निकटसँ मानव-मस्तिष्क आ प्रतिकूल विचार-प्रवाहक अध्ययन करबाक पर्याप्त सुअवसर देलकनि। हिनक रचनामे एहि अनुभवक उपयोग बेस नीक जकाँ भय सकलनि। ३ मार्च १९१९ मे ई दिवंगत भय गेलाह।

हरिभाऊ आप्टेसँ पहिलुक मराठी उपन्यास

प्राचीन कालहु मे मराठी भाषामे कथा-साहित्य कोनो अपरिचित विधा नहि छल । तेरहम शताब्दक 'महानुभव' साहित्यमे कल्पित खिस्सा आ व्याख्या कयल नैतिक कथा उपलब्ध होइत अछि । धार्मिक व्यवहार सभक पालन करबाक गुणक प्रशंसासँ परिपूर्ण खिस्सासब स्त्रीसमाजमे प्रचलित छल । धार्मिक सम्प्रदायक प्रचारकलोकनि विभिन्न देवी देवताक महिमावर्णनसँ परिपूर्ण खिस्सा सब सुनाओल करथिन । अपन पौत्र-पौत्री, नाति-नातिनकेँ पितामही-मातामही लोकनि भूत-पिशाच, परी-अप्सरा सभक खिस्सा कहल करथिन । एतदतिरिक्त महाभारत, रामायण आ भागवतक कथा सब सेहो प्रचलित छल, मुदा छपल पोथी नहि होयबाक कारणेँ मौखिक परम्परामे ई सब सुरक्षित छल ।

सम्प्रति कथा-साहित्यसँ जे तात्पर्य हमरा लोकनि बुझैत छिऐक से पहिले पहिल बृटिश शासन काएम भेलाक बाद सभक समक्ष उपस्थित भेल, जखन प्रेससब फुजलैक, शैक्षणिक संस्थासब सरकार तथा ईसाई मिशन सभक द्वारा स्थापित भेलैक आ पाठ्य-ग्रन्थ ओ अन्यान्य प्रकारक पोथीसब छपि-छपि प्रेससँ बहराय लगलैक । आरम्भमे आख्यायिका आ नेनाभुटकाक ज्ञानवर्द्धन ओ शिक्षा सम्बन्धी खिस्सा सब प्रकाशित होअय लागल । ओहि सबमे मनोरंजन केँ बड़ थोड़ स्थान प्राप्त छलैक । मराठीमे प्रथम प्रकाशित भेनिहार उपन्यास वन्यान द्वारा लिखित पिल्ग्रिम्स प्रोग्रेसक अनुवाद छल, जकर अनुवाद हरिकेशवजी पाथरे 'यात्रिक क्रमण' नामसँ कयने छलाह, ई.१८४१ मे प्रकाशित भेल छल । मुदा वास्तविक अर्थमे कठिनतासँ एकरा उपन्यास कहल जाय सकैत अछि । जेना कि सुविदित अछि जे ई बाइबिल पर आधारित एक दृष्टान्त रूपक थीक ।

उपर्युक्त संस्थासबमे शिक्षा प्राप्त कयनिहारक संख्या जहिना बढ़ैत गेल ताही संग क्रमशः पाठकक एक वर्ग सोझाँ अबैत गेल जे सुधार, निर्देशन आ मनोरंजनक हेतु पढ़बाक योग्य सामग्रीक माङ करय लागल । जे लोकनि स्वयं एहन आवश्यकताकेँ पूर्ण करबाक स्पृहासँ प्रेरित छलाह तेहन लेखक लोकनि एहि माङकेँ पूर्ण करय लगलाह । १८५६ मे बम्बै विश्वविद्यालयक स्थापना

भेलाक पछाति स्नातक उपाधिधारीलोकनि बहराय लगलाह आ ताहिसँ विभिन्न क्षेत्रमे भिन्न-भिन्न उद्देश्यसँ लिखबाक प्रेरणा प्राप्त होइत गेलनि । तकर बाद थोड़-बहुत शिक्षित आ थोड़-बहुत बैसल समय कटनिहारक वर्ग सोझाँ आयल । ताहि सबमे सत्तारूढ़ वर्गक राजकुमार, जनिका लोकनिकेँ शिक्षक पढ़बैत छलथिन, किछु धनाढ्य भूपति, सरकारी कर्मचारी आ ताहि लिखलि-पढ़लि युवतीलोकनिक नाम लेल जाय सकैत अछि जे लोकनि पाठशालामे भरती भेलि छलीह अथवा अपना पतिसँ वा खानगी शिक्षकसँ लिखब पढ़ब सिखने रहथि ।

जहिना जहिना लोक शिक्षित होइत गेल तहिना तहिना यूरोपीय आ भारत सहित अन्यान्यदेशक राजनीतिक एवं सांस्कृतिक इतिहाससँ परिचित होअय लागल, एहिसँ भारतक राजनीतिक पराधीनता, सामाजिक पिछड़ापन आ गत्यवरोधक कारणसँ परिचय होअय लगलैक । एहिसँ धार्मिक एवं सामाजिक सुधारक माङकेँ प्रोत्साहन भेटय लगलैक । ताहीकालमे किछु शिक्षित लोक भारतक प्राचीन संस्कृति आ परम्पराक पुनरुज्जीवी शक्ति सब पर ध्यान देबाक हेतु तत्पर भेलाह । एहि तरहेँ समय अयलापर विचारमे परस्पर दुइ विरोधी दल प्रकट भेल । ताहिकाल सब दिस बौद्धिक उत्तेजनाक वातावरण छल । जे लोकनि बदलैत स्थिति आ समयक माङक प्रति सचेत रहथि, से सब दैनिक, साप्ताहिक आ मासिक पत्र-पत्रिका सभक संचालन करय लगलाह । भिन्न-भिन्न पक्षक विचारकेँ उद्‌बुद्ध कयनिहार उपन्यास, नाटक आ लेख आदि लिखाय लागल । पाठक लोकनिक रुचिक अनुकूल विभिन्न प्रकारक साहित्यक प्रकाशन होअय लागल । ई विषय ओहि उपन्यास सबहुमे प्रतिविम्बित देखि पड़ैछ जकरा सभक प्रकाशन एहि अध्यायमे उल्लेखनीय अवधि अर्थात् १८३० ई० सँ १८८५ ई० मध्य भेल छल आ जाहि समय हरिभाऊक सर्वप्रथम उपन्यास प्रकाशमे आयल छलनि ।

१८५७ ई० सँ १८७९ ई० क मध्य एक प्रमुख साहित्य विधाक रूपमे उपन्यास अपन गोड़ीजमा चुकल छल आ पाठक वर्गमे पूर्ण लोक-प्रिय भय चुकल छल, परन्तु ओ सब लोकप्रिय उपन्यास अत्यधिक कल्पनाश्रित छल जे एक दिस कादम्बरी आ दशकुमार चरित सदृश संस्कृत ग्रन्थसँ प्रभावित छल तँ दोसर दिस, अरवियन नाइट्स इन्टरटेनमेण्ट सहित अरबी-फारसीक ओहि कल्पना-बहुल कथा सबसँ, जे सब अङरेजीमे अनूदित छल आ जकर प्रकाशन १८६१ सँ १८७३ क मध्य भेल छलैक । ओहि उपन्यास सभक नायक-नायिका राजपरिवारसँ सम्बद्ध होइत छल आ ओकरा सभक मित्र आ सहयोगी लोकनि कुलीनपरिवारसँ । नायक निश्चितरूपसँ प्रेमक देवता मदनक प्रतिरूप आ वीरताक साक्षात् प्रतिरूप तथा नायिका रतिक समान । मुख्य पात्र, स्थिति, प्रकृति आ ऋतु-वर्णन, पात्र पर सम्भावित विपदा अथवा दुःख सब किछु रूढ़

रहैत छलैक आ कथाक समापन आश्चर्यजनक अथवा कल्पनापर आधारित रहैत छलैक । भाषा कृत्रिम आ अलंकारसँ बोझिल होइत छलैक । कारण एहि उपन्यास सभक उद्देश्य पाठकके उत्तेजनामूलक आनन्द देव रहैत छलैक, (पाठकमे बैसाड़ीमे पड़ल लोक आ शिक्षित स्त्री समाज मुख्यतः रहैत छल) संगहि दुष्टाचरणक अधलाह प्रभाव आ गुणमय जीवनसँ उत्पन्न भेनिहार लाभक ज्ञान करायब रहैत छलैक । तेँ उपन्यासक समापन सुखमय होइक, अर्थात् नीकपात्र पुरस्कार पबैत छल आ दुष्ट पात्र दण्ड ।

उदाहरण स्वरूप हम एतय संक्षेपमे लक्ष्मणशास्त्री हाल्वे रचित, १८६१ मे प्रकाशित 'मुक्तमालाक' कथावस्तुक रेखाचित्र उपस्थित करैत छी । एहिमे उपरिवर्णित कल्पनाश्रित उपन्यासक सब चारित्रिक वैशिष्ट्य विद्यमान अछि आ एकरा युगप्रवर्त्तक मानल जाइत अछि ।

मुक्तमाला जकरा नाम पर उपन्यासक नामकरण भेल छैक, इरावतीक एक जागीरदार (ववुआन) शान्त वर्माक कन्या थिकनि । ओकर विवाह राजा भयानकक उपमन्त्री धनशंकरसँ भेल छैक । ओ राजा दुष्ट आ दुराचारी शासक अछि आ ओही प्रकारक दुष्ट आ दुराचारी सहयोगी एव पार्षदसँ घेड़ायल रहैत अछि । एही सबमे एक गोटे शुक्लाक्ष नामक व्यक्ति अछि जे शान्तवर्माक भातिज थिकैक आ धनशंकरक अनुशंसा पर भयानकक परिचारक रूपमे ओकरा नियुक्त कयल गेलैक अछि ।

शुक्लाक्षक आकांक्षा छलैक जे धनशंकर आ मुक्तमालाक हत्या कय देल जाइक जाहिसँ शान्तवर्माक जागीरक उत्तराधिकार, अन्य उत्तराधिकारीक अभावमे भातिज रहलाक कारणेँ एकरे प्राप्त होइक । एही आकांक्षाक अनुसार उपन्यासक घटनाचक्र घटित होइत छैक । ओ धनशंकरकेँ कारागारमे राखि दैत छैक । पछाति एकटा बोरामे सियाकय नदीमे फेकि देवाक प्रबन्ध करैत अछि । भाग्यवशात् किछु मलाह धनशंकरकेँ बचा लैत छैक जे सब एकरा चीन्हैत छैक आ स्वस्थ बनयबाक सुव्यवस्था कय दैत छैक । तकर बाद ई वैरागीक छद्मवेष बनाय तीर्थयात्रा पर चलि पड़ैत अछि ।

एहि सब विषयसँ अनभिज्ञ मुक्तमाला कारागारमे अपना पतिसँ भेट करबाक इच्छुक अछि, एहि हेतु ओ एक ऐन्द्रजालिकक सहयोग लैत अछि । शुक्लाक्ष एही व्यक्तिकेँ गुप्तरूपसँ मुक्त मालाक मूड़ी काटि कय प्रमाण स्वरूप समक्ष आनि रखबाक हेतु नियुक्त कय रखने अछि । मुदा ऐन्द्रजालिक मुक्त-मालाक सौन्दर्यसँ मोहित भय जाइत अछि । तेँ ओकर मूड़ीकाटि लेबाक बदलामे ओकरा एक कन्दरामे बन्द कय अबैत अछि आ अपना खबासनीकेँ कंठ मोकि, मारिकय ओकर हाथ–टाङ शुक्लाक्षक सोझाँ उपस्थित करैत अछि । शुक्लाक्ष ऐन्द्रजालिककेँ दण्ड दैत छैक आ मुक्तमालाक उदेसमे चलि पड़ैत अछि ।

एही मध्य मुक्तमालाकेँ संयोगसँ एकटा सुरंग देखबामे आबि जाइत छैक आ अपन विश्वासी सेवक गुलालसिंहक सहायतासँ ओहि कन्दरासँ बहराय उज्जैन दिस बिदा भय जाइत अछि, मुदा शुक्लाक्ष ओकरा पिठियाठोक कय रहल छैक। उज्जैनक समीप एक नदीक दोअर पर कोनो खाली मकानमे जाय मुक्तमाला फँसि जाइत अछि। संयोगवशात् ओकर बालसंगी सोमदत्त, जे निराश भय अपन घर त्यागि देने छल, मुक्तमालाकेँ ओहिठामसँ मुक्त कय दैत छैक। सोमदत्तोकेँ उज्जैनमे बन्दी बना लेल गेल छलैक, मुदा जेलरकेँ घूस दय ओ ओहिठामसँ पड़ाय गेल छल।

मुक्तमाला आ धनशंकरकेँ मुइल बुझि कय शान्तवर्मा अपन स्त्री आ अन्य परिजनकेँ संगलय दीर्घ तीर्थयात्रापर बहराय जाइत छथि।

अन्तमे एहन संयोग लगैत छैक जे एमहर-ओमहर छिड़िआयल सब लोक एकट्ठा भय जाइत अछि आ प्रसन्नताक वातावरण व्याप्त भय जाइत छैक। जखन ई सब जयपुर घुरैत जाइत छथि तँ ओहिठाम राजा भयानक आ ओकर दरबारी सभक विरुद्ध प्रजाकेँ विद्रोह करैत पबैत छथि। प्रजा ओकरा सबकेँ दण्डित करैत छैक आ ओकर सुशील स्वभावक भायकेँ राजगद्दीपर बैसबैत छैक। पुरान आ विश्वासी मन्त्रीकेँ अपन पुरना पदपर पुनः स्थापित कयल जाइत छैक। धनशंकरकेँ सेहो अपन पद प्राप्त भय जाइत छैक। एहि तरहेँ सभकेँ द्विगुण आनन्द प्राप्त होइत छैक।

ई कथावस्तु ओहि समय प्रकाशित होअयवाला कल्पनाश्रित उपन्यासक परिचय देत। १८६७ मे एन० एस० रिस्वुद रचित उपन्यास 'मंजुघोष' अविश्वसनीय आपद्ग्रस्त स्थिति आ संयोगात्मक पलायनक अर्थमे मुक्तमाला सँ आगाँ बढ़ि गेल अछि। एहि उपन्यासक नायक एक हवाइ जहाजक प्रयोग करैत अछि जे नगद टाका दय कीनल गेल अछि आ ओहि हवाइ जहाजकेँ मोड़ि सोड़ि कय बकसामे बन्द कय क्यो लय जाय सकैछ। ई नायिकाक घरक खिड़की बाटेँ आबि आ जाय सकैत अछि, तैयो एहिपे चारि गोटे खुसफैलसँ बैसि सकैत अछि। भारतसँ चारि हजार माइल उत्तर-पूबमे उड़ैत अछि, मुदा देशक नामोल्लेख नहि कयल गेल अछि।

एक उपन्यासक रूपमे मंजुघोष मुक्तमालासँ निम्नकोटिक अछि, मुदा ताहि समयमे एहने उपन्यास सब पढ़निहारक मध्य लोक-प्रिय छल। से ततेक जे १८६१ सँ १८७६ क मध्य एहन चौदह गोट उपन्यास प्रकाशित भेल छल।

ताहि समय किछु शिक्षित व्यक्तिक माथमे किछु नवीन विचार जड़ि पकड़ि रहल छलनि, जेना कन्याकेँ शिक्षा देवाक आवश्यकता, नवयुवती विधवा-लोकनिकेँ पुनः विवाह करबाक अनुमति देब, युवतीकेँ विधवा भेला पर माथ मुड़यबाक प्रथाक अन्त करब आदि आदि। ओहि कल्पनाश्रित उपन्यास सबमे

एहू विचार सबकेँ स्थान भेटलैक । उदाहरणार्थ मुक्तमालामे मुक्तमालाकेँ माथ मुड़यबाक अवसर तखन उपस्थित होइल छैक जखन ओकरा स्वामीकेँ मृत बुझल जाइत छैक । (ई भिन्न बातभेल जे पछाति ओकर स्वामी जीवित भेटि गेलथिन आ ई विधि नहि भय पौलकैक) ताहि समयमे एहि प्रश्नकेँ एतेक गंभीरतासँ लेल जाय लागल छलैक जे एहि प्रसंग कटु विवाद उत्पन्न भय गेल छलैक । हरिभाऊक महानकृति 'पण लक्ष्यान्त कोण घेतो ?' मे ई प्रश्न कथामे निर्णायक घटना बनि जाइत छनि । लक्ष्मण शास्त्रीक एक दोसर उपन्यास रत्नप्रभा (१८६६) मे विधवाक पुनर्विवाहक प्रश्न आयल छनि । विचित्र पुरीमे कन्याकेँ शिक्षित बनयबाक महत्व पर जोर देल गेल अछि, अन्यथा एहि उपन्यासमे असम्बद्ध तत्त्वक विचित्र फेंट फाँट छैक जाहिमे घोर अन्धविश्वास, दूषित शासन आ आधुनिक विचार एक संग मिझड़ायल छैक ।

एहि सबमेसँ किछु उपन्यास एखनहु लोकप्रिय अछि आ समय-समय पर एहि सभक पुनः प्रकाशन सेहो होइत छैक, मुदा मराठी उपन्यासक मुख्यधारामे एकरा सबकेँ नहि मानल जाइत छैल ।

मराठीमे यथार्थवादी उपन्यास जे लिखायल से छल 'यमुना पर्यटन' (१८५७) जे बाबा पद्मन जी लिखने रहथि । ई १८५४ मे ईसाई भय गेल रहथि । एहि उपन्यासक उपशीर्षक थिकैक 'हिन्दू विधवाक स्थितिक वर्णन' । एकर उद्देश्य छैक सामान्यतः हिन्दू विधवा लोकनिक, विशेषतः महाराष्ट्रक ब्राह्मणी विधवाक स्थितिक वर्णन आ हुनका लोकनिक भाग्यकेँ सुधारबाक हेतु कयल जाइत काज मे सहायता पहुँचायब । १८८२ मे प्रकाशित एकर दोसर संस्करणक भूमिकामे लेखक एहि विषयकेँ नीक जकाँ स्पष्ट कयने छथि ।

ई उपन्यास विनायक आ यमुना नामक मध्यम वर्गक शिक्षित हिन्दू दम्पतीक कथा थीक । स्वामी आ स्त्री दूनू कतहु दूरक यात्रा पर बिदा भेल अछि । बाट मे एहि दूनूकेँ एहन एहन हिन्दू विधवा लोकनिसँ भेट होइत छैक जकरा सबकेँ ठकि लेल गेल छैक आ भिखारि बनाय देल गेल छैक अथवा अनैतिक जीवन बितयबा दिस धकेलि गेल छैक । ओ सब अपन एहि दयनीय जीवनसँ पीड़ित अछि । यात्रासँ घुरतीमे विनायक एक दुर्घटनामे बड़ बेसी आहत भय जाइत अछि । ओकर स्थिति गंभीर भय जाइत छैक आ ओ दिवंगत भय जाइत अछि । ओ अपने तथा ओकर स्त्री गुप्त रूपसँ ईसाई धर्म स्वीकार कय लेने छल । जखन विनायक अपन अन्त निकट अछि से अनुभव कयलक, यमुनाकेँ बपतिस्मा देबाक हेतु कहलकैक आ यमुना से पूरा कय देलकैक । विनायकक मुइला उत्तर यमुना ईसाई बनि गेलि आ विनायक द्वारा देल गेल परामर्शक अनुसार सगाइ अर्थात् दोसर विवाह कय लेलक ।

एहि उपन्यासमे कतोक उपकथा सबमे हिन्दू विधवा सभक स्थितिक वर्णन भेल अछि जे सजीव अछि आ सहानुभूति उत्पन्न करैत अछि। तेँ एहन अनुमान करबामे कोनो आपत्ति नहि होयबाक चाही जे ई उपन्यास जखन प्रकाशित भेल होयत तँ समस्याक गंभीरता दिस पाठकक ध्यान अवश्य आकर्षित कयने होयत। परन्तु ई उपकथा सब केवल क्रममे आयल अछि, एहिसँ कथावस्तु संघटित नहि भय पबैत अछि। विभिन्न व्यक्तिमे विचारकेँ लय मतभेद आ रेकातोकीतँ भेल अछि, मुदा एहिसँ तनावक सृष्टि नहि भय सकल अछि। एकर अतिरिक्त यद्यपि दूनू मुख्य पात्रक हृदयक बहुत निकट अछि तथापिई साई तत्त्व उपन्यासमे असम्बद्ध जकाँ अछि। एहि कथाकेँ सम्पूर्ण उपन्यासक आयतनमे विकसित कयल जाय सकैत छल, मुदा बाबा पद्मनजीमे उपन्यासक रचनाशीलता नहि छलनि। परिणामतः ई उपन्यास एकगोट लघु प्रबन्ध भय गेल अछि।

जे किछु हो, किन्तु एतबा अवश्य कहल जाय सकैछ जे आगाँ अयनिहार यथार्थवादी उपन्यासक ई अग्रदूत थीक। यमुनाक चरित्रकेँ बड़ मृदुतासँ चित्रित कयल गेल अछि। ई संवेदनशील, बुझनुक, दयालु हृदय रखनिहारि, अतिशय धार्मिक आ सामाजिक दायित्वक बोध रखनिहारि अछि। विनायक एक प्रेमी पति उदार, दयालु, हृदयक आ प्रगतिशील विचारक व्यक्ति अछि। दूनू पात्र प्राणवन्त अछि। मुदा बाबा पद्मनजी मुख्यतः लघुप्रबन्धक लेखक छलाह, उपन्यासकार नहि। एही कारणेँ ई पोथी मराठी उपन्यास-धाराक विकासमे एक प्रस्थान बिन्दु तँ अछि, मुदा स्वयं उपन्यासक रूपमे विकसित नहि होइछ।

दोसर यथार्थवादी उपन्यास विनायक कोंदेवओक रचित 'शिरस्तेदर' थीक जे उपेक्षिते जकाँ रहि गेल। यद्यपि १८८१ मे ई प्रकाशित भेल छल, मुदा वास्तव मे ई १८७२ मे लिखल गेल छल। यमुना पर्यटन जकाँ शिरस्तेदर सेहो एक विशेष सामाजिक उद्देश्यसँ लिखल गेल छल। एकर उद्देश्यक प्रसंग, जेना लेखक अपने स्पष्ट कयने छथि जे कचहरी सबमे आ यूरोपीय भद्रलोकक अधीन चाकरी करैत कतोक शिरस्तेदार आ काकूँन लोकनिक बेमानी आ भ्रष्टाचार केँ देखार करब, ई दर्शायब जे गरीब जनताक विनाश आ ओकरापर अत्याचार करबाक हेतु ई सब अपन क्षुद्र अधिकारक कोन तरहे दुरुपयोग करैत जाइत अछि, सरकारकेँ एहन परामर्श देब जाहिसँ अत्याचारक एहि सम्पूर्ण व्यवस्था पर; यदि सर्वांशतः नहि तँ आंशिको रूपसँ प्रतिबन्ध लगाओल जाय।

ई कथा कोनो राजस्व न्यायालयक एक शिरस्तेदार द्वारा जे वरीय लिपिकक पदपर अछि, दोष स्वीकार कयल जयबाक रूपमे कहल गेल अछि। ओकर अर्थात् वर्णन कयनिहारक चाकरी दस टाकाक मासिक अल्पवेतनसँ आरम्भ होइत छैक। सेवा आरम्भ कयलाक तुरन्ते बाद चलाकीसँ कोना कमायल जाइत छैक से सीखि जाइत अछि। आ किछु समय बीतैत, बितबैत घूस लेब आरम्भ

कय दैत अछि। अन्तमे ईर्ष्यावश अपने अधीनस्थ लिपिक द्वारा ओकरापर घूस लेबाक आरोप लगाओल जाइत छैक। तकर जाँच होइत छैक, आरोप प्रमाणित भय जाइत छैक आ कठोर कारावासक दण्ड देल जाइत छैक।

कारागारमे अपन दिन गनैत, समय बितबैत ओ भूतपूर्व शिरस्तेदार अपन बीतल दिनक स्मरण करैत अछि, अपन अपराध आ अनैतिक काजकेँ स्वीकार करैत अछि. पश्चात्ताप करैत अछि आ ईश्वरसँ क्षमायाचना करैत अछि। यैह अपराध स्वीकार शिरस्तेदरक कथावस्तु थीक।

कतोक अर्थमे ई उपन्यास यमुना पर्यटनसँ नीक ढंगक अछि। कथा अपन चरमोत्कर्ष पर पहुँचबा धरि अर्थात् भ्रष्टाचारीकेँ कारागार पठयबा धरि क्रमशः डेगेँ डेगेँ आगाँ बढ़ैत अछि। कथानायकक चरित्र नहुएँ नहुएँ उद्घाटित होइत छैक आ एहि प्रक्रियामे अधिक ओझरायल जाइत छैक आ विभिन्न तथ्यकेँ प्रकट करैत छैक। विभिन्न व्यक्तिमे विरोध आ मतभेद छैक आ सेहो मानव स्वभाव पर प्रकाश दैत छैक। कथा बहुत सरल ढंगसँ बिनु कोनो आलंकारिक भाषाक प्रयोग कयने कहल गेलैक अछि आ अतिशयोक्तिक प्रयास नहि कयल गेल छैक। कथामे आत्मालोचनक अन्तः प्रवाह छैक जे अपराध स्वीकार करबाक स्थितिमे सर्वथा स्वाभाविके थिकैक। सरकारी कार्यालय सभक क्रिया-कलापक सजीव वर्णन कयल गेलैक अछि। एहि तरहेँ ई उपन्यास मराठीमे यथार्थवादी उपन्यास-धाराक विकासमे एक अगिला डेग थीक। ई रोचक बुझना जाइछ जे शिरस्तेदारक लेखक एहि उपन्यासमे आत्मकथात्मक शैली केँ अपनौलनि अछि। ई शैली पात्रक चरित्रकेँ भीतरसँ उद्घाटित करबाक सन्दर्भमे सबसँ बेसी समीचीन होइत अछि। ई शैली रचनाकारक हेतु विशेष कौशल, अन्तर्दृष्टि आ संयमक अपेक्षा रखैत अछि। ई विचार करैत जे शिरस्ते-दारक लेखक प्रकृत्या उपन्यासकार नहिओ होइत अपना प्रयासमे सफल भेल छथि, से हुनका हुतु विशेष श्रेयक वस्तु थिकनि।

एहि दूनू उपन्यासक रचयिताकेँ ई चेतना नहि छलनि जे भविष्यमे लिखायबाला यथार्थवादी उपन्यासक हेतु ई लोकनि मार्ग प्रशस्त कय रहल छथि।

मराठी उपन्यासक इतिहासकार लोकनि यमुना पर्यटनक उल्लेख मात्र नहि कयने छथि. प्रत्युत एकरा मराठीक प्रथम यथार्थवादी उपन्यास सेहो मानलनि अछि, मुदा ओ लोकनि शिरस्तेदार पर पूर्ण गंभीरतासँ विचारनहि कयलनि, जखन कि अनेक अर्थमे यमुना पर्यटनसँ बेसी महत्त्वक काज एहिसँ भेल छैक, मात्र एतबाकेँ छोड़ि कय जे एकर अन्तमे आ कय ठामि धार्मिक प्रवचन अनेक बेसी मात्रामे लादल छैक। एकर कारण प्रायः ई रहलैक जे १८५७ सँ १८८१ क मध्य अनेक कल्पनाश्रित उपन्यास प्रकाशित भेलैक आ ताहिमेसँ किछु बहुत

वेसी लोकप्रिय भेल । जँ शिरस्तेदर जहिया लिखायल तहिए प्रकाशित भेल रहैत तँ संभवतः एकरो अपन उचित स्थान प्राप्त होइतैक ।

जाहि उपन्यासक प्रसंग हमरा-लोकनि आब बिचार करय जाय रहल छी, ओकर रचनाकार एहिसँ पूर्ण सतकँ छलाह जे ओ की लिखि रहल छथि आ किएक लिखि रहल छथि, जेना कि ओ कयलनि । ओ उपन्यास नारायणराव आ गोदावरी शीर्षकसँ १८७९ मे प्रकाशित भेल ।

ओहि समय जाहि प्रकारक कल्पनाश्रित उपन्यास सब प्रकाशित भय रहल छल, ई उपन्यास ताहि सभक विरोधमे लिखल गेल छल आ एकर सम्पूर्ण उद्देश्य छलैक साहित्यिक कलाक एक रचना उपस्थित करब । ई उपन्यास महाराष्ट्रक मध्यमवर्ग आ निर्धनवर्गक जीवन सँ सम्बद्ध अछि, नहि कि धन-सम्पन्न आ राजपरिवारक जीवनसँ । एतदतिरिक्त कल्पनाश्रित उपन्यासक अन्त जेना निरपवाद रूपमे सुखान्त होइत छैक ताहि रूपेँ एकर अन्त सुखान्त नहि भेल छैक। लेखक आमुखमे अपन उद्देश्य आ योजनाकेँ स्पष्ट कय देने छथि। ओ कहैत छथि-यदि हम चाहैत छी जे दैनन्दिन घटैत घटनाक चित्र उपन्यासक माध्यमसँ उपस्थित करी तँ हमरा ओही रूपमे ओकरा चित्रित करय पड़त जाहि रूपमे ओ अछि । हमरा निश्चित रूपेँ दर्शाय पड़त जे भद्रलोककेँ कोन प्रकारेँ विपत्ति सभक सामना करबाक हेतु बाध्य कयल जाइत छैक आ अन्तमे ओहि मिथ्या अभियोगक कारणेँ ओ ध्वस्त भय जाइत अछि। हम एही दृष्टिकोणसँ ई उपन्यास लिखलहुँ अछि—एतदतिरिक्त हमरा सभक नाटक आ उपन्यास साधारणतः सुखान्त होइत अछि, एहि अभ्यासक विपरीत हम एहि उपन्यासक रचना दुःखान्त रूपमे कयलहुँ अछि—जहाँधरि हम जनैत छी, ई अपना ढंगक मराठीमे प्रथमे उपन्यास थीक ।

एहि उपन्यासक घटनास्थल बम्बैक लगक वसाइ नामक स्थान थिकैक आ नारायणराव तथा गोदावरी नामक दम्पतीक कथा थिकैक जे पारम्परिक सहमतिसँ प्रसन्नतापूर्वक विवाह करैत अछि, मुदा दुर्जन सभक प्रपञ्चसँ एकरा दूनूक दुखद अन्त होइत छैक । एहि जोड़ीक विवाहक किछुए दिनुकबाद दुख आरम्भ भय जाइत छैक ।

दुर्जन सभक एक झुण्ड अछि, जकरा सभक कुदृष्टि गोदावरी पर छैक नारायणरावकेँ सुदूर स्थानमे बदली करबाय बाट परसँ हटाय देल जाइत छैक । ओतय ओकरा ई विश्वास देयाओल जाइत छैक जे ओकर आङनवाली विश्वासपात्र नहि रहि गेलैक । नारायणराव स्वयं अपना पत्नीकेँ देखि कय एहि बातक सत्यताक प्रति विश्वस्त होअय चाहैत अछि । ओकरा वसाइ आनि कय घटनामे ताहि तरहेँ हेरा-फेरी कय देल जाइत छैक जे ओकरा स्त्रीक विश्वासघातकताक प्रसंग कनेको सन्देह नहि रहि जाइत छैक । ओ अपना स्त्रीकेँ

विनु बूझय देनहि, खाद्यमे माहुर मिला कय मारि दैत अछि। शीघ्रे ओकरा पता लागि जाइत छैक जे ओ दुष्ट सभक प्रपंचक आखेट बनि गेल अछि। अन्तमे ओ ओहि दलक सब सदस्यक हत्या कय अपनहु आत्महत्या कय लैत अछि।

कथावस्तु एकदम ओझरायल आ किछु स्थल दुर्बल सेहो छैक। ओथेलोक प्रभाव बहुत स्पष्ट छैक। जे किछु हो, उपन्यास लिखबाक लेखकक ई प्रथम प्रयास छलनि से मानि लेला उतर ई अवश्य कहल जाय सकैछ जे ओ जे किछु सोचने छलाह तकरा पूर्ण करबामे सफल भेलाह। ओ मध्यवित्त वर्गसँ सम्बद्ध लोकक प्रसंग यथार्थ कारुणिक कथा लिखय चाहैत छलाह आ से पूर्ण कयलनि। एहि तरहेँ यथार्थवादी मराठी उपन्यास-धारामे ई उपन्यास महत्वपूर्ण घटना थीक।

एहि कथाक किछु लक्षण परवर्ती उपन्यास सबमे आ हरिभाऊ आप्टेक उपन्यास एवं नाटक सबमे सेहो यदा कदा प्रयोग कयल प्राप्त होइत अछि। एक दरिद्र व्यक्तिकेँ एक सुन्दरी कन्या छैक, जे यौवनक निकट पहुँचय पहुँचय पर छैक आ अविलम्ब कन्यादान करब आवश्यक छैक। ओकरा टाका नहि छैक (अथवा ओ लोभी अछि) आ तेँ ओ एहन व्यक्तिक ताकमे अछि जे ओकरा पुष्ट टाका दय सकैक। जेँ हेतु ताहि समयमे छठम सातम बरखमे कन्याक आ चौदहम पन्द्रहम वयसमे बालकक विवाह भय जाइत छलैक, तेँ यौवनक निकट पहुँचलि एहि कन्याक हेतु उपयुक्त वर एहन लोक भय सकैत छलैक जे विदुर हो, युवा हो अथवा वयसाहु हो, जागीरदार (बबुआन) अथवा धनिक, मुइल वा कृपणव्यक्तिक बेटा हो। एहन लोककेँ साधारणतः एहन मित्र होइत छैक जे ओकरा मद्यपान आ व्याभिचरमे प्रवृत्त करौने रहैत छैक। ओ मित्र ओहि उत्तराधिकारीकेँ कोनो एहन सुन्दरी युवतीसँ विवाह करबाक हेतु बहकबैत छैक जकरा पछाति अपना हेतु राखि लेबाक आशा रखैत अछि। एहन मौगी सेहो होइत अछि जे कुट्टनीक काज करैत अछि, एहन भ्रष्टाचारी सरकारी अधिकारी आ सतमाय होइत अछि जे अपना सतधीक संग दुर्व्यवहार कय ओकरा आत्महत्या अथवा एहन लोकसँ विवाह करबाक हेतु बाध्य करैत छैक जे मुट्ठी गरम कय दैक अथवा विआहिकय लय पड़ाइक।

एहि अध्यायकेँ समाप्त करबासँ पहिने उपन्यासक अन्य कोटि अर्थात् ऐतिहासिक उपन्यास पर विचार करब रोचक होयत। ठीक जेना उपरि चर्चित यथार्थवादी उपन्यास सब ओहि उपन्यास सभक पूर्वसूचना थीक जाहि सभक रचना पछाति हरिभाऊ आप्टे कयलनि, तहिना एक ऐतिहासिक उपन्यास अछि जकरा ऐतिहासिक उपन्यास-धाराक पूर्व सूचना कहल जाय सकैत अछि। से उपन्यास छल 'मोचनगद', रचयिता छथि आर० बी० गूंजिकर। ई १८६७ आ १८७० क मध्य धारावाही रूपमे आ १८७१ मे पुस्तकाकार प्रकाशित भेल रहय।

मोचनगद ऐतिहासिक उपन्यासक एक आदर्श प्रतिरूप मानल जाइत अछि। भारतीय भाषासबमे ऐतिहासिक उपन्यास भिन्न-भिन्न उद्देश्यसँ लिखल जाइत रहल। जाहि सबमे एक उद्देश्य रहल विगत इतिहासक रोमांचक वर्णनसँ मनोरंजनक सामग्री उपस्थित करब, दोसर राजनीतिक उद्देश्यमे प्रयोग करब। एक राजनीतिक दृष्टिसँ विजित देशमे इतिहासक उपयोग पाठक समुदायमे देशभक्ति-मूलक राष्ट्रीय चेतनाकेँ उद्बुद्ध करबाक हेतु कयल जाइत अछि, एहि तरहेँ विदेशी प्रभुत्वक विरुद्ध विद्रोहक आधार भूमि तैयार होइत अछि। ग्रांट डफ्स रचित हिस्ट्रीआफ दि मराठाज (मराठाक इतिहास) क प्रकाशन भेला उत्तर मराठाक इतिहासक प्रति रुचि जगलैक। टाड क एनाल्स आफ राजस्थान (राजस्थानक पूर्वकथा) राजपूत लोकनिक इतिहासक प्रति रुचि जागृत कयलक। किछु मराठा ओ राजपूत नायक आ मराठा-राजपूत इतिहासक किछु घटना स्वयं सहज भावेँ दोसर उद्देश्यक दिस प्रवृत करौलक। ऐतिहासिक उपन्यास लिखबाक तेसर उद्देश्य विगतकेर पुनर्निर्माण आ उपलब्ध ऐतिहासिक स्रोतक सहायतासँ ओहि अवधिक वातावरण आ चेतना पर पुनः अधिकार प्राप्त करब होइछ। मोचनगद एही श्रेणीमे अबैत अछि। एहि उपन्यासक कथावस्तु शिवाजीक कालक थीक। एहिमे शिवाजी आ हुनक किछु सहकर्मी लोकनिक उल्लेख छनि आ शिवाजीक चरित्र आ कार्यकलापक प्रसंग जनताक मनोभावनाक वर्णन कयल गेल छैक। किन्तु उपन्यास शिवाजीक प्रसंगमे नहि अछि आ लेखक ताहि अवधिक चेतना आ वातावरणकेँ पकड़बामे सफल भेल छथि।

ई शैली शीघ्र लोकप्रिय भय गेल आ एकक बाद दोसर ऐतिहासिक उपन्यास समक्ष आबय लागल। हरिभाऊक साहित्यिक कृति सबमे आधाक अग्रोन-पग्रोनमे ऐतिहासिक उपन्यास छनि आ एकरा ई ततेक लोकप्रिय बनौलनि जे पछाति मराठा इतिहाससँ सम्बद्ध उपन्यासक क्रम आरम्भ भय गेल आ एखनहु लिखल जाय रहल अछि।

यैह साहित्यिक वातावरण महाराष्ट्रक छल जखन हरिभाऊ लिखब आरम्भ कयने रहथि। उपन्यास लेखनक मुख्य तीन धारा अर्थात् कल्पनाश्रित, यथार्थ-वादी आ ऐतिहासिकमे अन्तिम दुइ धारामे नहि केवल योगदाने कयलथिन, अपितु ओकरा उपलब्धिक चरम शिखर धरि पहुँचाय देलथिन।

३

हरिभाऊ आप्टेक उपन्यास : सामाजिक

हरिभाऊ आप्टे १८८३ मे अपन प्रथम उपन्यास लिखब आरम्भ कयलनि आ अन्तिम उपन्यास १९१७ मे समाप्त कयलनि । एहि ३४ बरखक अवधिमे ई २२टा उपन्यास लिखलनि । एहिमे एगारह गोट सामाजिक आ एगारह गोट ऐतिहासिक । सामाजिक उपन्यास सबहुमे दसटा महाराष्ट्र, विशेषतः पूनाक समकालीन सामाजिक जीवनसँ सम्बद्ध आ अन्य एक गोट फ्रेंच उपन्यासक अङरेजी रूपान्तरक अनुवाद छनि । एगारह गोट ऐतिहासिक उपन्यासहुमे एक गोट कर्नल मीडोज टेलरकेर उपन्यासक अनुवाद थिकनि ।

ई अध्याय हरिभाऊक सामाजिक उपन्यास समक प्रसंगक थीक । ई उपन्यास सब महाराष्ट्रक शिक्षित, अर्द्धशिक्षित आ अशिक्षित मध्यमवर्गक लोकक जीवनक आधार पर लिखल गेल अछि । उपन्यास सबमे शिक्षा आ एकर अभाव दूनूकेँ समान रूपेँ स्पष्ट कयल गेल छैक । कोनो पात्रक वर्णनमे एना करब आवश्यक मानल जाइत छलैक, कारण जे ताहि समयमे थोड़बे लोक शिक्षित छल आ अङरेजी शिक्षाक प्रभाव पर एकर समर्थक आ विरोधी दूनू वर्ग सूक्ष्मतासँ दृष्टि रखने छल । भारत वर्षक अन्यभाग जकाँ महाराष्ट्रमे पैघ पैघ जमीन्दार नहि छलाह । एहि उपन्यास सबमे सर्वसाधारण सामाजिक परिदृश्यसँ ऊपर प्राप्त भेनिहार पात्र सबमे सूदपर टाका लगौनिहार, ओकील, सरकारी अधिकारी आ क्रमशः दरिद्र भेल जाइत बबुआन (जागीरदार) लोकनि छथि । राजपरिवारक सदस्य आ बृटिश अधिकारी कतहु-कतहु छथि, मुदा हुनका लोकनिक स्थान महत्त्वपूर्ण नहि छनि । निम्न वर्गक लोकमे पूजा-पाठकेँ जीविका रूपमे अपनौने ब्राह्मणलोकनि, अपना सम्बन्धी लोकनि पर आश्रित विधवालोकनि, एक संग दूदू ठाम चाकरी करैत जीवन निर्वाह कयनिहार लोक आदि आदि भेटैतअछि। कतोक ठक आ धूर्त सेहो अछि ।

हरिभाऊक आरम्भिक उपन्यास सबमे अधिकतर हिन्दू महिला लोकनिक स्थिति पर विचार कयल गेलैक अछि । ओकरा सभक विवाह छोट वयसमे, कखनहु-कखनहु छओ-सात बरखक वयसमे बारह-तेरह बरखक छौँड़ासँ कय

देल जाइत छलैक (हरिभाऊक अपनो विवाह पन्द्रहमे बरखमे भेल छलनि) कतोक कन्या किशोरी होइत होइत विधवा भय जाइत छलि आ जँ ओ अपेक्षाकृत सुम्यस्त आ सचेत परिवार नहि अछि तखन तँ कहिओ अन्त नहि भेनिहार दुःख आ परवशतामे ओकर जीवन बीति जाइक। किछु स्त्रीगणक संग ओकर स्वामी, जकरा सबके मद्यपान आ व्याभिचारक लति रहैत छलैक, दुर्व्यवहार करैक, मारैक-पीटैक आ घरसँ निकालि दैक। एहि सभक निराकरणक हेतु कन्या सबके शिक्षित करब आ पुरुष वर्गमे प्रवुद्ध दृष्टिकोणक बोधके बढ़यबाक परामर्श देल गेल। स्त्रीगणक भाग्य सुधारबाक सन्दर्भमे हरिभाऊ गोविन्दराव आ हुनक स्त्री श्रीमती काशीबाई काणित्करक प्रवुद्ध मैत्री आ मिल ओ स्पेन्सरक अध्ययनसँ बहुत प्रभावित भेल छलाह।

प्रथम अध्यायमे कहल गेल अछि जे हरिभाऊ अङरेजी आ यूरोपीय साहित्यिक नीक अध्ययन कयने छलाह। ई केवल शेक्सपियरे नहि, प्रत्युत मोलिएर, जोला, थैकरे, डीकेन्स, स्काट, जेनआस्टिन आ जार्ज इलियटक कृति सभक सेहो बारम्बार अध्ययन कयने रहथि। किन्तु ई परम आश्चर्यक विषय जे ई अपन प्रथम उपन्यास जी० डब्लू० एम० रेनाल्डसँ प्रभावित भय लिखब आरम्भ कयने रहथि। एकर कारण ओहि साहित्यिक परिवेशमे पाओल जाय सकैछ, जाहिमे ई लिखब आरभ कयने रहथि। जनिका लोकनिके विश्वविद्यालयक शिक्षा भेटल छलनि आ जनिका लोकनिके साक्षरण रहैत छलनि संगहि पढ़बाक प्रवृत्ति छलनि से बहुधा अङरेजीक उपन्यास पढ़ब पसिन्न करैत छलाह। थोड़-बहुत शिक्षित लोक, साक्षर स्त्रीगण आ बैसाड़ी रहनिहारलोक, जे सब मात्र मनोरंजन हेतु पढ़ैत अछि, मराठीक कल्पनाश्रित उपन्यास पढ़ैत छलाह, जे लोकप्रिय तँ बहुत छल, मुदा समकालीन जीवनसँ असम्बद्ध छल। पाठकके प्रवुद्ध आ सुसंस्कृत करबाक अभिलाषासँ लिखल गेल यमुना पर्यटन आ शिरस्तेदर सदृश यथार्थतापूर्ण उपन्यास सबसँ पूर्णतः मनोरजन नहि भय पबैत छलैक आ एहिमे पर्याप्त पाठकीय खाद्य सेहो नहि रहैत छलैक। हरिभाऊके नवीन प्रकारक उपन्यास आ नवीन प्रकारक पाठक दूनूक सृष्टि करबाक छलनि। ओ एक कथाकार आ सामाजिक चेतनायुक्त लोक रहथि। हिनका ओहि प्रकारक उपन्याससँ लोकके विमुख करबाक छलनि जे लोकप्रिय छल आ ओहन पाठक सँ नीक, शिक्षित पाठकके उपन्यास पढ़बाक हेतु तकबाक छलनि। ई हल्लुक काज नहि छल। ओहि प्रकारक अभद्र उपन्यास पाठक वर्गके उत्तेजना आ मनोरंजन दूनू प्रदान करैत छल। प्रायः यैह कारण छल जे हरिभाऊक किछु उपन्यासमे रहस्य आ अद्भुत साहसिकताक तत्त्व प्राप्त होइत अछि जे साधारणतया यथार्थवादी सामाजिक उपन्यासमे उपयुक्त नहि होइत अछि। जखन डीकेन्स आ थैकरे अपन रचना प्रकाशित करब आरम्भ कयने रहथि, तहिया

अङ्रेजी उपन्यास सय बरखसँ किछु बेसिए पुरान भय चुकल छल । जखन हरिभाऊ लिखब आरम्भ कयलनि तखन मराठी उपन्यास मात्र पचीस बरख पुरान छल । तेँ हेतु ई सम्भवत: सोचलनि जे हिनका सर्वप्रथम अपना पाठक केँ जीवनक आकर्षक पक्ष आ मध्यमवर्गीय जीवनक क्रिया-कलापक वर्णन कय मनोरंजनक माध्यमसँ प्रबुद्ध बनयबाक छलनि । प्राय: रेनाल्ड एहि हेतु एक नीक प्रस्थान-बिन्दु छलथिन, कारण जे ओ नीक मनोरंजन उपस्थित कयने छलाह । एतय ईहो ध्यातव्य जे ताहि समय अङरेजी माध्यमसँ शिक्षित पाठकक मध्य रेनाल्ड बहुत लोकप्रिय भय गेल छलाह । रेनाल्डसँ प्रभावित भेनिहारमे हरिभाऊ एकसरे नहि छलाह । विष्णुशास्त्री चिपलूणकर, जनिका हरिभाऊ बहुत सम्मान दैत छलथिन; रेनाल्डकेँ पढ़बाक बहुत प्रेमी रहथि ।

तेँ हेतु जखन हरिभाऊ अपन प्रथम उपन्यास मधली स्थिति लिखबाक निश्चय कयलनि तँ रेनाल्डक दि मिस्टरिज आफ ओल्ड लन्दनकेँ रूपान्तरित करबाक हिनक योजना छलनि । मुदा जहिना ई प्रथम अध्यायक रूपान्तरण कयलनि, तहिना अनुभव कयलनि जे एहिसँ नीक स्वतंत्रे उपन्यास लिखब होयत । कारण जे रूपान्तरणमे विदेशी मौलिक उपन्यासक पात्रसभक भावना, विचार तहिना विधि-व्यवहार सब भारतीय पात्रक चरित्रमे मिश्रित भय जायत । ई उपन्यासकेँ कुस्वादु खिच्चड़ि बनाकय राखि देत, तेँ ई रेनाल्डक रूपान्तरणक विचार छोड़ि, स्वतन्त्र रूपसँ उपन्यास लिखब आरम्भ कयलनि । किन्तु आमुख मे कहलनि अछि जे जेँ हेतु ई मूल उपन्यासक प्रसंग बहुत गम्भीरतासँ सोचने छलाह तेँ मधली स्थितिक आरम्भिक तीन चारि अध्याय पर प्रभावक किछु चिह्न देखल जाय सकैत अछि। ई आजकालच्या गोष्ठी (समकालीन जीवनक कथा) नामक सामान्य शीर्षकक अन्तर्गत प्रकाश्यमान उपन्यास-मालाक प्रथम उपन्यास कहल गेल छल । हिनक उद्देश्य एहि कथासबमे महाराष्ट्रक समकालीन सामाजिक जीवनक चित्रण करब छलनि । उपन्यासमे व्यक्ति आ स्थिति सभक आधार यथार्थ जीवनमे अछि, मुदा कोनो व्यक्ति विशेष वा स्थिति विशेषक प्रतिनिधित्व करबाक अभिप्राय नहि ।

ई उपन्यास पुणे वैभवमे धारावाही रूपमे प्रकाशित भेल छल । किछु खंड प्रकाशित भेल छल कि एकर अतिशय प्रशंसा आ गुणग्रहणक प्रसग पत्र सब सम्पादकक कार्यालयमे मिस पड़य लागल । पत्र लिखनिहारमे विद्वान लोक आ सुपरिचित समीक्षक लोकनि रहथिन । १८८८ मे ई उपन्यास पुस्तकाकार प्रकाशित भेल ।

ताहि समय लिखल जाइत उपन्यास सबसँ ई ततेक भिन्न छलैक जे एकरा नवीन ढंगक उपन्यास मानल जाय लगलैक । एकर भाषा सोझ, सरल आ जन-कंठक छलैक । ई ओ भाषा छल जकरा पाठक सबदिन बजैत छल । एहिमे

साहित्यिक आडम्बर अथवा शैलीक अलङ्करण नहि रहैक। स्थान आ व्यक्तिक वर्णन ततेक सावधानीसँ आ विस्तार तेहन ध्यानपूर्वक कयल गेल छलैक जे पाठक सुविधासँ चीन्हि लैत छल। प्रामाणिक वर्णनानुसार कोनो नायक अथवा नायिका एहि उपन्यासमे नहि छल। जाहि संसारमे पाठक रहैत छलाह आ चलैत-बुलैत छलाह, उपन्यासोक संसार सैह छलैक। हरिभाऊ एहि उपन्यासक संग पाठक आ उपन्यासक मध्य निकट सम्बन्ध स्थापित कयलनि।

मधलीस्थिति शीर्षकक व्याख्या करबाक प्रयत्न कयल गेल अछि। एकर शाब्दिक अर्थ भेल मध्यस्थान अथवा मध्य अवस्था। लेखक स्वयं एहि रूपेँ विश्लेषण कयने छथि—'आजकालच्या गोष्ठी' समकालीन जीवनक वर्णनकरैत कथासब थीक। वर्तमान कथा मध्यवित्तलोकक कथा थीक। तेँ एकरा मधली स्थिति कहल गेल अछि। आजकालच्या गोष्ठी उपन्यासमालाक अगिला कथा होयत गणपत राव। एहिमे हम हुनका सभक स्थितिक वर्णन करय जा रहल छी जे लोकनि शिक्षा पाबि उच्चतर दशामे आबि गेल छथि आ हमरा सभक समाज नीक स्थितिमे आवय से सतत सोचैत छथि। हम गणपतरावमे देखौलहुँ अछि जे मधलीस्थितिक विष्णु आ यमुना नीक शिक्षाक माध्यमसँ उच्चकोटिमे पहुँचि गेल छथि आ हुनक विचार सेहो उच्चकोटिक छनि।

तकरोबाद हम तेसर कथा लिखय चाहैत छी जाहिमे निम्नस्तरीय व्यक्तिक जीवनक वर्णन हो। हम देखबय चाहैत छी जे मधलीस्थितिक गन्या आ नन्या कुशिक्षाक कारणेँ निम्न दशामे अवनति करैत आबि गेल अछि। निम्नस्थितिक अर्थ निम्नस्थितिक लोक। ई हमर सामान्य योजना अछि।

हरिभाऊ गन्या आ नन्याक प्रसंग लय उपन्यास लिखलनि नहि।

अन्यलोकनि महाराष्ट्रमे समाज पर पश्चिमी शिक्षाक प्रभावक अर्थमे व्याख्या करबाक चेष्टा कयलनि अछि। प्रथम अवस्था ओ छल जाहिमे तावत धरि महाराष्ट्रमे पश्चिमीशिक्षा लागू नहि भेल छल। दोसर वा मध्य अवस्था ओ छल जाहिमे महाराष्ट्रक लोक पश्चिमी शिक्षा ग्रहण करब आरम्भ कय देने छल आ तकर प्रभाव ई छल जे लोक ओहिसँ अन्धबनाय देल गेल छल। ओ लोकनि भारतीय प्रत्येक वस्तुक आलोचना करथि आ पश्चिमी जीवन पद्धति (खान-पान, ओढ़न-पहिरन) आ दोषधरिकेँ अङ्गेजि लेने छलाह। तेसर अवस्था ई छल जे पश्चिमी शिक्षाक प्रकाशमान प्रभाव देखि पड़य लागल छल। एहि व्याख्याक अनुसार मधलीस्थिति बिचला अवस्थाक प्रतिनिधित्व करैत अछि।

ई दूनू प्रकारक व्याख्या अपनामे सत्यक तत्त्व रखैत अछि। मधलीस्थिति ताहि समयक पूनाक मध्यवित्तलोकक एक निश्चित भागक आ क्रियाकलापक शब्दचित्र प्रस्तुत करैत अछि। वर्णनक आधार-भूमि कोनो पैघ नहि अछि, मुदा आध दर्जन परिवार आ पचाससँ अधिके पात्र एहिमे सम्मिलित अछि। ई

उपन्यास तीन व्यक्तिक पापपूर्ण क्रिया-कलापक वर्णन करैत अछि, ओ सब थीक—गोविन्दराव जे ओहि खण्डक प्रमुख खलनायक अछि आ दुइ गोट महिला काकूबाई आ थामाबाई जे ओकर अपराधकर्ममे संग देनिहारि अछि। गोविन्द राव विनायक रावक विरुद्ध अपन चक्रचालि चलबैत अछि जे एक धनिक सूदपर टाका लगौनिहारक एक मात्र बेटा थीक, जकर मृत्यु किछुए दिन पूर्व भेलैक अछि। परिवारमे विनायक रावक माय आ ओकर समर्थि आ गुणवती स्त्री सरस्वती छैक। गोविन्दरावकेँ जहिना ज्ञात होइत छैक जे विनायकराव अपना घरक मालिक अपने अछि कि अपन जाल खिड़ावय लगैत अछि। ओ विनायक रावकेँ एक सामाजिक क्लबसँ परिचित करबैत छैक जकर सदस्य शिक्षित मध्यमवर्गक विरोधी खीमाक प्रतिनिधित्व करैत छैक। एहि क्लबमे मुख्य कार्य-कलाप छैक साँझक पहर एकत्र होयब, दारू पीब आ गप्प लड़ायब आ कहिओ कहिओ गयबाक हेतु बाईजीकेँ बजायब। विनायकराव अपना घरकेँ फेरसँ मरम्मति करबैत अछि, सजबैत अछि आ समय-समय पर घर पर मद्यपान आ गाना-बजानाक आयोजन सेहो करैत अछि।

पछाति विनायक राव अपना मायकेँ घरसँ निष्कासित कय दैत अछि, आङनवालीक संग दुर्व्यवहार करय लगैत अछि आ निर्दयतापूर्वक ओकरा पीटैत छैक। एक दिस गोविन्दराव विनायकरावक माथमे ओकरा स्त्रीक विश्वस-नीयताक प्रति सन्देहक बीजवपन करैत छैक आ दोसर दिस विनायक रावक मद्यपान आ छुतहड़पनीक आलोचना करैत सरस्वतीकेँ मोहि लेबाक प्रयत्न करैत अछि। जखन ओ एकर चक्रचालिमे नहि फँसैत छैक आ ओकर प्रस्तावपर कानबात नहि दैत छैक तखन गोविन्दराव एकरा पतिकेँ आरो अधिक पीड़ा देबाक हेतु प्रोत्साहित करैत छैक। अन्तमे ओ एहन जोगाड़ धरबैत अछि जे विनायकरावकेँ अपना स्त्रीपर सन्देह भय जाइत छैक आ ओकरा घरसँ बैलाय दैत छैक।

तावत धरि गोविन्दराव विनायकरावकेँ नीक जकाँ मूड़ि लेने रहैत छैक आ ओकरासँ विशेष किछु प्राप्त होयबाक आशा नहि देखि काकूबाई आ थागाबाई नामक दूनू युवतीक संग, जकर ओ सब अपहरण कयने छलैक, पड़ाय जयबाक हेतु सोचैत अछि। किन्तु ओ तीनू ट्रेनसँ पूना छोड़य-छोड़य पर होइत अछि, ठीक ताहि समय एक व्यक्ति, जे गोविन्दरावक विगत जीवनसँ परिचित अछि, एक पुलिस दलक संग अबैत अछि आ एकरा सबकेँ गिरफ्तार करबा दैत छैक। तकर बाद जाँच होइत छैक, मजिस्ट्रेट द्वारा सजाय भेटैत छैक। गोविन्दराव द्वारा ठकि लेल टाका विनायक रावकेँ आपस भेटि जाइत छैक। विनायकरावकेँ अपना स्त्रीक निरपराध होयबाक विश्वास भय जाइत छैक तेँ ओ अपन पत्नी आ मायकेँ घुरा कय लय अनैत अछि।

पाँच सय पृष्ठक अओन-पओनमे पसरल एहि कथाक रूपरेखा किछु रिक्त सन आ बहुत अंशमे असन्तोष-जनक अछि। तीन चारि परिवार गोविन्दरावक दुराचरणसँ प्रभावित होइत अछि, मुदा सब किछु नीक जकाँ समाप्त होइत अछि।

मधलीस्थितिमे कनोक स्वाभाविक दोष छैक। तथापि हरिभाऊ अपन मार्ग ताकि लैत छथि। वर्णन आ विश्लेषण अनावश्यक रूपेँ नमरि गेल छैक। घटना सब ततेक क्षेपक अध्याय सबसँ बँटायल छैक जे पाठककेँ एकसँ दोसर घटनाक सम्बन्ध मोन पाड़य पड़ैत छैक। अनेक तरहक सम्बोधनक प्रयोग भेलैक अछि, किछु पात्र सभक हेतु, किछु पाठकक हेतु आ किछु कोनो व्यक्ति विशेषक हेतु नहि भय, मात्र विस्मयादिबोधक छैक। ई उपन्यासक त्रुटि कहल जाय सकैत छैक जे मध्यमवर्गीय समाजक अवांछनीय आ दुराचारी मात्रसभक जीवन आ कार्य-कलापक व्यापक वर्णन कयल गेल छैक आ नीकलोक अथवा प्रबुद्ध तत्त्वक वर्णन एकदम छोड़ि देल गेल छैक। किन्तु एहि रूपेँ करब लेखकक अभीष्ट छनि, जे किछु हो, एतय एकटा अपवाद अछि आ से एक परिवारकेँ लय, जाहिमे नरोपन्त आ राधाबाई एवं ओकरा समक कन्या यमुना आ बालक विष्णु नामक युवक अछि, जकर पालन-पोषण आ शिक्षाक प्रबन्ध नरोपन्त करैत छैक। ई परिवार विशेष वर्णनक अपेक्षा रखैत अछि, कारण जे एहि परिवारक विष्णु आ यमुना हरिभाऊक अगिला उपन्यास गणपतरावमे प्रौढ़ व्यक्तिक रूपमे उपस्थित होइत अछि।

तथापि एहि न्यूनताक अछैतो ई उपन्यास एखनहुँ रुचिपूर्वक पढ़ल जाइत अछि। यद्यपि वृत्तमे ई उपन्यास सीमित आ एकांगी अछि, तैयो ओहि अवधिक समाजक एक वर्गक प्रामाणिक चित्र उपस्थित करैत अछि, व्यक्ति आ स्थानक वर्णन सटीक, अर्थपूर्ण, भाषा स्पष्ट आ सरल तथा कथोपकथन प्रारम्भिक उपन्यासस भिन्न ढंगक जनकंठक अनुरूप, स्वाभाविक आ कुशलतासँ प्रयुक्त छैक।

मधलीस्थितिकेँ पुस्तकाकार प्रकाशित होयबासँ पहिनहि हरिभाऊ अपन दोसर उपन्यास गणपतरावक छपाइ (१८८६ मे) आरम्भ कय चुकल छलाह, ई अपूर्ण रहि गेल छलनि। एकर पात्र आ गठन मधलीस्थितिसँ सर्वथा भिन्न स्थिति आ महत्त्वक छैक। गणपतराव, जकरा नाम पर उपन्यासक नामकरण छैक, एक सरकारी अधिकारीक पुत्र थीक आ पूनाक डेक्कन कालेजमे बी०ए० मे पढ़निहार एक छात्र। ओ बीस बरख वयसक आ विवाहित अछि। ओकर मित्र नाना सहपाठी आ समवयस्क छैक, मुदा अविवाहित। नाना चारिए बरखक छल तँ पितृहीन भय गेल, ओकर आ ओकरा मायक भरण-पोषण ओकर पित्ती करैत छथिन। नानाक बहिन गोदावरीक विवाह एक पुजेगरीक बालकसँ भेल छैक आ ओकरा स्वामी आ सासु बड़ दुख देल करैत छैक।

मधलीस्थितिक नरोपन्त आ राधाबाई एहू उपन्यासमे भेटैत छथि। हुनक कन्या यमुनाक विवाह विष्णुक संग भय गेल छैक आ ओकर दोसर नाम लक्ष्मी राखि देल गेल छैक। विष्णु सेहो गणपतराव आ नानाक संग कालेजमे पढ़ैत अछि, मुदा एक वरख पाछाँ अछि।

गणपतराव अपनहि बहुत सचेतन आ समाजसुधारक प्रसंग व्यग्र अछि। ओ अङरेजी आ संस्कृत साहित्य नीक जकाँ पढ़ने अछि आ समाजसुधारक सन्दर्भमे मिल एवं स्पेन्सरक मत दृढ़तापूर्वक कहनिहार अछि। गणपतराव आ नानाकेँ एक सुसंस्कृत परिवार सँ शीघ्रे नीक चीन्हा-परिचय भय जाइत छैक आ ओ सतत ओतय जाइत अबैत रहैत अछि। ओहि परिवारमे कृष्णराव, ओकर पत्नी रमाबाई आ ओकर कन्या द्वारका छैक। ई निर्विकल्प रूपसँ अन्तर्निहित छैक जे नाना आ द्वारकाक विवाह यथासमय होयतैक।

जे किछु हो, एहि उपन्यासमे बहुत किछु घटित नहि होइत छैक। नानाक पित्ती टाकाक कारणेँ ओकर विवाह एक कुरूप आ अशिक्षिता कन्याक संग करबाक ओरिआओन करैत छथिन, मुदा नाना से करब अस्वीकार करैत छनि। ताहि कारणेँ ओकर पित्ती ओकरा मायकेँ घरसँ निष्कासित कय दैत छथिन आ हुनका घरक द्वार दूनू मायपूतक हेतु बन्द भय जाइत छैक। गोदावरीक प्रति दुर्व्यवहार ताहि सीमाधरि पहुँचि जाइत छैक जे गणपतराव आ नाना ओकर विदागरी कराय लय अनबाक निश्चय करैत अछि। एहीठाम आबि उपन्यास अकस्मात् समाप्त भय जाइत छैक। ई १८९३ क आरम्भिक समय छलैक। उपन्यास एहि द्वारेँ स्थगित भय गेलैक जे जाहि मासिक पत्रमे ई प्रकाशित होइत छलैक तकर प्रकाशन बन्द भय गेलैक। यद्यपि हरिभाऊ एकर बाद अनेक उपन्यास लिखलनि, मुदा एकरा कहिओ पूर्ण नहि कयलनि। हमरा लोकनि केवल अनुमान कय सकैत छी जे पूर्ण भेला पर एहि उपन्यासक समापन कोन प्रकारेँ होइतैक।

अपन वर्तमान रूपमे, ताहि समयमे हिन्दू नारीक स्थिति आ ताहिमे सुधारक उपायसँ सम्बद्ध एहि उपन्यासक प्रमुख विषयवस्तु थिकैक। उपन्यास एहि प्रश्नसँ सम्बद्ध वाद-विवाद आ कथोपकथनसँ भरल अछि। समाधानक हेतु स्त्रीगणकेँ शिक्षित करब, विवाहक वयसकेँ बढ़ायब, विधवाक पुनर्विवाह पर सँ प्रतिबन्ध हटायब ई सब सुझाओल गेल अछि। गणपतराव अपना उत्साह मे एहि प्रकारक समाजक स्वप्न देखैत अछि जाहिमे स्त्रीगण उच्चशिक्षा पाबि गेल रहत, साहित्यक अध्ययन करत आ तकर आनन्द उठाओत आ समान रूपेँ पुरुषक संग वाद-विवादमे भाग लेबाक योग्य बनि गेल रहत। हरिभाऊक उपन्यास सबमे ई प्रथम उपन्यास थिकनि जाहिमे गम्भीर सामाजिक समस्या पर विचार विमर्शकेँ स्थान देल गेलैक अछि। आगाँ हम सब देखब जे ई स्वप्न

हिनक अग्रिम उपन्यासमे किछु अंश धरि सत्य भय रहल छनि ।

जतय धरि उपन्यास लेखनक सम्बन्ध अछि, हमरा लोकनि हरिभाऊकेँ एक प्रौढ़ कलाकारक रूपमे आब देखैत छिऐनि । मधली स्थितिमे ई अपन मार्ग तकैत छलाह । गणपतरावमे मार्ग भेटि चुकल छनि । पात्र सब बहुआयामी आ वृहत अंशधरि समग्रतामे वर्णित छनि । नानाक पितिआइनिक चित्रण विशेष रूपेँ उल्लेखनीय वूझल जयवाक चाही । ओ मदोद्धत, अपन जिद्दपर अड़ल रहनिहारि आ अपना पतिकेँ मुट्ठीमे रखवाक अभ्यासी माउगि थिकथिन । तकर अछैतो आकर्षक । हुनकर रूपरंग, वर्णित आकृति, विशेषरूपेँ आँखि आ बजबा-भुकवाक छविछटा वेस प्रभावोत्पादक छनि । हरिभाऊक द्वारा ई सब स्पष्टतासँ वर्णित भेल अछि । दु:खक बात ई जे एकरा पूर्ण नहि कय सकलाह ।

ताही समय, जखन गणपतराव लिखैत रहथि, हरिभाऊ अगिला आ तेसर उपन्यास अपन उत्कृष्ट कृति, पण लक्ष्यान्तकोण घेतो ? (मुदा के ध्यान दैत अछि ?) अपन साप्ताहिक पत्र कर्मणुकक हेतु, जे १८९० मे आरम्भ कयलनि, लिखि रहल छलाह ।

पण लक्ष्यान्त कोण घेतो ? कतोक दृष्टिएँ हरिभाऊक सामाजिक उपन्यास मे सर्वाधिक प्रतिनिधि रचना थिकनि आ पाठकक मस्तिष्क पर गंभीर प्रभाव छोड़ैत छनि । ई उपन्यास मध्यमवर्गीय हिन्दूक संयुक्त परिवारक जीवन, युवा आ पुरान पीढ़ीक मध्य रूढ़िवादी आ सुधारवादी विचारक विवाद आ ताहि परिवारक स्त्रीगणक स्थितिक प्रामाणिक चित्र प्रस्तुत करैत अछि । एहिसंग अन्यान्यो कारणसँ एहि उपन्यासपर विस्तारसँ विचार अपेक्षित अछि ।

ई उपन्यास आत्मकथा शैलीमे लिखल गेल अछि आ किछु अंशधरि एक अर्द्धशिक्षित युवतीक जीवनकथा थीक । ई कोनो असाधारण साहित्यक शैली नहि थीक, मुदा हरिभाऊ तेहन निपुणतासँ ई कथा उपस्थित करैत छथि जे यथार्थ आ कल्पनाक संसारक मध्यक सीमा-रेखा घूमिल भय गेल अछि ।

ई स्पष्ट करैत छथि जे हिनका एहि उपन्यासक पाण्डुलिपि एक एहन मित्रक कार्यालयक माध्यमसँ प्राप्त भेलनि जे एहि प्रसंग जनैत छलथिन । ओ हरिभाऊकेँ ओहि युवतीक, जे आब नहि जीवैत अछि, भाय गणपत रायसँ परिचय करवैत छनि । ओ भाय, अर्थात् गणपतराव, हरिभाऊकेँ पाण्डुलिपि हाथमे दय दैत छनि पाण्डु लिपि, हरिभाऊकेँ ततेक पसिन्न छनि जे ओ एकरा कर्मणुक मे प्रकाशित करय चाहैत छथि । मुदा ओ कथा स्वभावत: अपूर्ण छलैक आ हरिभाऊ एकर पूर्ण-रूप चाहैत छलाह, तेँ गणपतरावकेँ निष्कर्ष रूपक अन्तिम अध्याय लिखि देबाक प्रार्थना कयलथिन जे ओ पूर्ण कय देलकनि । गणपतराव किछु कागतक पन्ना सेहो देलकनि, जाहिमे किछु आरो सूचना छलैक जे मुख्य पाण्डुलिपिमे जोड़ नहि छलैक ।

हरिभाऊ कहैत छथि जे गणपतराव द्वारा देल गेल पाण्डुलिपिए पणलक्ष्यान्त कोण घेतो ? उपन्यास थीक । ई कथा मुख्यत: दुइ परिवारक आ संयोगवश किछु आनलोकक थीक । ई कथा यमु द्वारा कहल गेल अछि आ ई ताहि समयसँ आरम्भ होइत अछि जखन ओ आठ अथवा नओ वरखक छलि । पूनामे निवास करैत ओकरा परिवारमे ओकर माता-पिता, बारह बरखक ओकरासँ जेठ भाय दादा आ एक छोट बहिन सुन्दरी छैक । ओकरा पिताक मायबाप सेहो जिविते छथिन, मुदा किछु दूरक गाममे रहैत छथिन, जाहि ठाम हुनका लोकनिक घर आ खेतपथार छनि । ई एक सुव्यस्त परिवार अछि । यमुक पिता समाहरणालयमे प्रधान लिपिक छथिन । अपना पिताक संग हुनकर सम्बन्ध खूब मधुर नहि छनि । हिनक अपनहु परिवारमे धीया-पूता हिनकासँ डेरायल रहैत छनि आ जहाँधरि संभव होइत छैक हिनकासँ छीह कटैत रहैत छनि । माय बुद्धिमती, प्रतिभाशालिनी आ चतुराछैक । धीया-पूताकेँ मायक प्रति बेस आदर आ प्रेम-भाव छैक आ माइए ओकरा सभक चरित्रकेँ सुघड़ बनबैत छैक ।

जखन ई कथा आरम्भ होइत छैक तखन कनिञा पुतराक विवाहक तैयारी होइत रहैत छैक । यमु, ओकर भाय दादा आ ओकर परोसक सखी थाकी ओहि ठाठ बाटसँ होइत विवाहोत्सवमे लीन अछि, बीच बीचमे ओकरालोकनिमे मुँहा ठुट्ठी, काइ-कुँइ, जे नेनासभक खेलमे स्वाभाविक थिकैक, भय रहल छैक कि ताही मध्य अकस्मात् ओकर पिता कार्यालयसँ आबि जाइत छथिन आ सबकेँ क्रोधित भय डपटि दैत छथिन । विवाहोत्सवमे बाधा भय जाइत छैक आ धीया पूतासब भयभीत चिड़ै चुनमुन्नीजकाँ फुर्र भय जाइत अछि । नेनाभुटका सभक हेतु प्राय: एना होयब कोनो अस्वाभाविक नहि थिकैक, कारण एहन बात सब परिवारमे होइते रहैत छैक आ यमु सेहो संयोगेवश एहि घटनाक वर्णन करैत अछि । परन्तु पाठकक दृष्टिकोणसँ एकर प्रतीकात्मक महत्त्व छैक । ई घटना संकेत करैत अछि जे जखन मानवप्राणी नीक भावनामे जीवनक आनन्द हृदयसँ भोगैत रहैत अछि तखन भाग्य कोनरूपेँ ओकरा पर प्रहार करैत छैक ।

किछु मासक बाद रघुनाथक संग यमुक विवाह भय जाइत छैक जे दादाक स्कूलमे ओकरासँ तीन बरख उपरका कक्षामे पढ़ि रहल छैक आ प्रवेशिका परीक्षामे बैसयवाला अछि ।

जे समय यमु बम्बैमे बितौलक से ओकरा जीवनक सबसँ अधिक आनन्दप्रद समय रहलैक । किन्तु एहि प्रकारक सुखमय जीवन प्राय: जीवन भरिमे अन्तिमे छलैक, कारण एक दिन सबगोटे मिलि कय एलिफेंन्टा गुफा देखय जयबाक योजना बनौलक तँ अकस्मात् रघुनाथ दु:खित पड़ल आ बारह घंटाक अभ्यन्तरे ओकर मृत्यु भय गेलैक । ई एक एहन अनभ्र वज्रपात छलैक जाहिसँ यमुक सुखमय जीवनक सब अपना चूर चूर भय गेलैक । एतय स्मरणीय थीक जे

उपन्यासक आरम्भमे कोना कनिआ पुनराक उल्लासमय विवाहक अवसर पर पिता द्वारा बाधा उपस्थित कयल गेल छलैक। परन्तु दुर्दैव ओकर पाछु कय रहल छलैक। जँ एकरा एकसरि छोड़ि देल जइतैक तँ प्रायः पतिक आकस्मिक मृत्युक शोक पर काबू पाबि जाइत आ भायक साहाय्य तथा पतिक मित्र लोकनिक प्रोत्साहन पाबि, नहि सम्पूर्णतः सुखमय तँ कमसँ कम सार्थक जीवन बितयबाक योग्य अवश्य भय जाइत।

किन्तु एकरा पूना धुरि कय आबय पड़लैक, ओतय छलसँ एकरा केश कटबा लेबाक हेतु बाध्य कयल गेलैक। ई काज यमुक अपन अपना भायक आ दिवंगत स्वामीक इच्छा आ विचारक विरुद्ध छलैक। एहि घटनासँ भेल आघात एकरा हेतु बड़ पैघ छलैक। एकर स्वास्थ्य घटय लगलैक। मानसिक उद्विग्नतासँ शान्ति पयबाक हेतु अपन जीवनक कथा लिखबाक हेतु आग्रह कयल गेलैक, मुदा स्वास्थ्य ततेक तेजीसँ खसय लगलैक जे जल्दीए बेचारी मरि गेलि।

यमुक संगी दुर्गीक जीवन-कथा ठीक एकर समानान्तर चलैत छैक। दुर्गीक घरवाला लफाँड़ि रहैक, स्कूल छोड़ि देने छलैक, सिकरेट पीब, चोरि करब आ जूआ खेलायब, सब लुतुक पोसि लेने छल आ आङनवालीसँ केवल वासनाक तृप्ति चाहैत छल। जखन ओ एकरासँ टाका मङैक आ ई अपना नैहरसँ आनिकय नहि दैक, तँ घुमधुमा देल करैक। दुर्गीकेँ एहि पतिसँ एकटा बेटा छलैक, मुदा जीवनसँ तेना अकछि गेल छलि जे हफीम खा कय बच्चाक संग अपनहु मरि जाय चाहैत छलि।

पण लक्ष्यान्त कोण घेनो ? एक आशावान्, विकासशील युवकक जीवन सम्बन्धी एहन दुःखान्त घटना थीक जकर बलिदान दम्भ, कठोरता आ अपन मतावलम्बनक बदलामे कयल गेलैक अछि। मुदा विस्तृत सन्दर्भमे ई ताहि समयक सर्वसाधारण नारी वर्गक कथा थीक। स्त्रीवर्गक संग पोसुआ पशुजकाँ व्यवहार कयल जाइत छलैक, जेना यमु स्वयं एक स्थलमे कहैत अछि। पुरूषक सनकक अनुसार ओकरासँ प्रेम अथवा ओकरा दण्डित कयल जाइत छलैक, भोजन देब अथवा मारब, मारब-पीटब आ थकुचिकय राखि देब, सब ओही पर आधारित छलैक। ओ केवल उपभोगक वस्तु बूझल जाइत छल नहि कि समानताक व्यवहार करबाक योग्य। कोनो व्यक्ति ई ध्यान नहि दैत छलैक जे ई वर्ग की अनुभव करैत अछि अथवा ओकर की इच्छा छैक। एहि शीर्षकसँ यैह अर्थ बहराइत छैक जे 'मुदा के ध्यान दैत अछि' ?

संगहि ई उपन्यास ईहो दर्शबैत अछि जे स्त्रीगण कपटी, क्रूर आ निर्दय भय सकैत अछि, कोन तरहेँ आन स्त्रीक जीवनकेँ नष्ट कय सकैत अछि आ पुरुषकहेतु असहनीय बनि सकैत अछि। सासुरमे यमुक ममियाँ सासु आ ननदि तहिना नैहर मे ओकर सतमाय आ भाउजि एहन स्त्रीगणक उदाहरण थिकैक।

हरिभाऊ द्वारा एहि विभिन्न नारी वर्गक चरित्र एहन स्पष्ट आ सूक्ष्मतासँ रेखांकित कयल गेल अछि जे हिनक पर्यवेक्षण शक्तिसँ सबकेँ आश्चर्य चकित होअय पड़ैत छैक। दोसर विशेष रूपेँ उल्लेखनीय बिन्दु स्त्रीसमाज द्वारा प्रयुक्त भाषाक प्रयोगमे हरिभाऊक कुशलता थीक। एहि उपन्यासमे नारी पात्रक विविधता अछि आ प्रत्येक पात्रक मुहेँ पात्रक सर्वथानुरूप भाषाक प्रयोग हरिभाऊ द्वारा कयल गेल अछि। एहन प्रतीत होइछ जे ई उपन्यास कोनो निष्कपट, संवेदनशील आ स्वभावसँ स्नेही कोनो नारी द्वारा लिखल हो आ ओ जाहि प्रकारक भाषाक प्रयोग कयलक अछि से पूर्णतः पात्रक चरित्र आ स्वभावसँ मेल खाइत छैक।

एहि उपन्यासमे हरिभाऊ एक उपन्यासकारक पूर्ण उच्चताधरि पहुँच गेलि छथि। सब मिलाकय एहिमे तीन दर्जनक अओन-पओनमे चरित्र छैक आ सब अपन अपन स्वतन्त्र परिचिति रखैत, सब प्राणवन्त तथा स्पन्दनशील अछि। उपन्यासक आधारभूमि बहुत पैघ नहि छैक, मुदा अपन विषयवस्तुमे पूर्ण सम्पन्न, आ हरिभाऊ पात्र सभक प्रति पूर्ण न्याय कयने छथि।

एहिसँ अगिला उपन्यास यशवंतराव खरे (१८९२-९५) सेहो गणपतिराव जकाँ अपूर्ण छनि। तथापि अनेक अर्थमे, जहाँधरि ई गेल अछि, एकरा पूर्ण कहल जाय सकैत अछि। एहि उपन्यासक विषयवस्तु आ चिन्तनधारा गणपतरावक सर्वथा प्रतिकूल अछि। गणपतराव एक प्रौढ़ युवक बी० ए० क परीक्षामे बैसनिहार आ विवाहित अछि। ओकर विवाह सुस्थिर आ मस्तिष्क परिपक्व छैक आ शिक्षा समाप्त कयला पर की करय चाहैत अछि से जनैत अछि। तदतिरिक्त गणपतिराव एक सम्पन्न राजकीय कर्मचारीक पुत्र थीक। दोसर दिस यशवन्तराव एक निर्धन परिवारक थीक। जखन उपन्यास आरम्भ होइत छैक तँ ओ बारह बरखक रहैत अछि। पिता मरि गेल छथिन। यशवन्तरावक एक छोट भाय आ एक बहिन सहित सम्पूर्ण परिवारक निर्वाहिक हेतु एकर माय थोड़ थोड़ वेतनपर घरक काज करबाक हेतु बाध्य भय जाइत छैक।

गणपतरावमे समाजसुधार, मुख्यतः कन्याकेँ शिक्षित करब, विवाहक वयसकेँ बढ़ायब आ विधवाकेँ पुनर्विवाह करबाक अधिकार देबापर बेसी जोर देल गेल अछि। दोसर दिस यशवन्तराव खरेमे समाज-सुधारक विपरीत राजनीतिक सुधारपर बल देल गेल अछि। वास्तवमे एहि उपन्यासमे समाज-सुधारक उपहास कयल गेल अछि आ समाजसुधारक समर्थक लोकनिकेँ समाजक शत्रुक रूपमे वर्णित कयल गेलनि अछि।

युवक यशवन्तराव, जे स्कूलमे पढ़ैत अछि, अपन अध्ययन जारी रखबाक हेतु एक सम्पन्न संरक्षकक शरणमे जयबाक हेतु बाध्य होइत अछि। पहिने एक रायबहादुरक संरक्षणमे रहैत अछि जे अपनाकेँ समाज-सुधारक कहैत

छथि आ वृटिश शासनक समर्थक छथि। किन्तु ओ अपने, आङनक स्त्रीगणसब आ बालवच्चा सहित सम्पूर्ण परिवार, सब अपन स्थिति आ प्रतिष्ठाक ततेक अहंकार रखैत अछि आ ओ सब तेहनक्रूर अछि जे यशवन्तरावक प्रति दुर्व्यवहार करैत छैक आ अपमानित करैत रहैत छैक। ई संवेदनशील बालक केवल हार्दिक आघाते नहि अनुभव करैछ, अपितु समाज-सुधारकेँ नापसिन्न करय लगैछ आ नारीवर्गक प्रति द्वेषी बनि जाइत अछि। ओ ईहो अनुभव करय लगैछ जे माय ओकरा स्नेह नहि करैत छैक आ क्रमशः माय आ परिवारसँ चित्त फाटि जाइत छैक आ ओ एकाकीपन अनुभव करय लगैत अछि।

जीवनक एहि शोचनीय स्थितिमे श्रीधर पन्तसँ परिचय भय जाइत छैक, ओ खूब पढ़ल लोक आ कट्टर राष्ट्रवादी छथि। ओ यशवन्तरावक प्रति सहानुभूतिशील छथिन, यशवन्तराव शीघ्र हुनक संरक्षण आ देख-रेखमे चल अबैत अछि। तदुत्तर यशवन्त रावक कालेज जीवन धरि श्रीधरपन्त ओकर निर्देशक आ विश्वासी परामर्शदाता रहैत छथिन। ओ यशवन्तरावक चरित्र, व्यक्तित्व आ विचारकेँ एक मोड़ दैत छथिन। यशवन्तरावक चरित्र श्रीधरपन्त-हिक संरक्षकताक उपजा थीक। अपन परामर्श दाताक अनुरूप ओहो राजनीतिक सुधारक प्रबल समर्थक आ समाजसुधारक कटु विरोधी बनि जाइत अछि।

गणपतराव उपन्यासमे गणपतरावकेँ मिल रचित सबजेक्शन आफ ओमेनक प्रति आस्था छैक। यशवन्तराव खरेमे यशवन्तरावकेँ इटलीक महान देशभक्के मैजिनीक प्रति आस्था छैक।

एहिठाम उपन्यास समाप्त भय आइत अछि। एहिमे यशवन्तरावक जीवनक आठ रचनात्मक बरखकेँ, बारहमसँ बीसम बरखक वयसधरिकेँ, समाहित कयल गेलैक अछि। यशवन्तराव खरेमे पहिलुक तीनू उपन्यासक अपेक्षा चरित्रक आ व्यक्तित्वक विकासक वर्णनमे अधिक सुधार परिलक्षित होइत अछि। प्रथम उपन्यास मधलीस्थितिमे पात्रक विशेष विकास नहि भय सकल छैक। ओना ओ एकसर छैक, निर्जीव नहि। गणपतरावमे चरित्र सभक रेखांकन मधलीस्थितिक अपेक्षा नीक छैक। काशीनाथपन्तक स्त्री सीताबाईक चरित्र बेस प्रभावोत्पादक रूपमे अंकित भेलैक, अछि। पण लक्ष्यान्तकोण धेतो ? एक डेग आरो आगू अछि। हम देखैत छी जे यमु एक कन्यासँ क्रमशः एक प्रौढ़क रूपमे विकसित होइत अछि, जेना एकटा फूलक कोँढ़ी सुन्दर फूलक रूपमे फुला जाइत अछि। हरिभाऊ हमरालोकनिकेँ बिनु कोनो वाचनिक कथनसँ एहन विकास देखौलनि अछि। मुदा यशवन्तराव खरे, जे करीब पाँचसय पृष्ठक सम्पूर्ण उपन्यास अछि, ताहिमे केवल एक मात्र व्यक्तित्वक रचना आ विकासक वर्णन कयल छैक। एहिमे बहुत विस्तार पूर्वक देखाओल गेल अछि जे मनुष्यक व्यक्तित्वक विकास कोन प्रकारेँ जँ ओकर अन्तर्निहित रुचि आ क्षमताक अन्तः क्रिया पर निर्भर

होइत छैक तँ दोसर दिस ओकर स्थिति आ परिस्थिति पर जाहिमे ओ रहैत अछि। दोसर कोटिक पात्र सभक वर्णन सेहो प्रभावोत्पादक भेलैक अछि।

एहि उपन्यासमे हम विचार आ विचारधाराक पारस्परिक संघर्षक विस्तृत वर्णन पबैत छी जे समकालीन महाराष्ट्रक एक चारित्रिक विशेषता छलैक। एहि पुस्तकक पहिले अध्यायमे एकर आभास देल गेल अछि। श्रीधरपन्त ओहि लोकक प्रतिनिधि थिकथिन जे लोकनि राजनीतिक माङ पर विशेष जोर दैत छथिन आ समाजसुधारकेँ गौण स्थान दैत छथिन। किछु गोटे तँ एतेक धरि कहैत छथिन जे समाजसुधारक कोनो प्रयोजने नहि छैक।

पाठक केवल अनुमान कय सकैत अछि जे गणपतराव अपन विचारक प्रचार हेतु की कयने रहैत, कोन प्रकारक जीवन बितौने रहैत, की अपन विचारमे मोड़ अनबाक हेतु बाध्य भेल रहैत? अपन अगिला उपन्यास मी (स्वयं) १८९३-९५ मे हरिभाऊ आत्मकथात्मक शैलीसँ पलटि अबैत छथि, मुदा एहि उपन्यासमे लेखक भाऊ छथि जे पछाति संन्यासी बनि जाइत छथि आ अपन नाम भवानन्द राखि लैत छथि।

एहि उपन्यासक तुलना हम पछिला तीनू उपन्याससँ कय सकैत छी आ परस्पर अन्तर देखाय सकैत छी। गणपतराव आ पणलक्ष्यान्त कोण घेतो? क मुख्य विषय-वस्तु स्त्रीवर्गकेँ शिक्षित करब आ स्थिति एवं स्तरमे सुधार करब थिकैक। ई कथावस्तु सामाजिक थीक। यशवन्तराव खरेमे सामाजिक सुधारक विपरीत राजनीतिक सुधार पर विशेष बल देल गेल अछि। मी मे दूनूकेँ समान महत्त्व दैत हम पबैत छी आ संगहि ईहो जे सम्बद्ध व्यक्तिक रुचि आ क्षमतापर छोड़ि देल गेल छैक जे ओ एक क्षेत्रमे काज करय अथवा दूनूमे। यदि कोनो व्यक्तिकेँ आत्म-विश्वास छैक जे हम दूनू क्षेत्रमे काज कय सकैत छी तँ करबाक हेतु स्वतन्त्र अछि। गणपतराव आ यशवन्तराव खरे दूनू उपन्यास अपूर्ण अछि। तेँ हेतु हम नहि जनैत छी जे गणपतराव आ यशवन्तराव खरे अपना विचारक प्रचार लेल की करितय। ओना बहुत पछातिक उपन्यास 'कर्मयोगमे' हमरा लोकनि देखैत छी जे गणपतराव पुष्कलवेतन पौनिहार एक सरकारी अधिकारी बनि गेल अछि आ अपन सुधारवादी विचारकेँ बकोटने अछि।

दोसर दिस मी मे व्याख्याकार भाऊ पहिल डिग्री आर्ट्समे, तदुत्तर कानूनक डिग्री प्राप्त कय अपन शिक्षा पूर्ण करैत अछि आ तखन समाज-सेवामे जीवन बितयबाक निर्णय लैत अछि। ओ भाषण दैत अछि, अपन विचारक प्रचार हेतु एक पत्र प्रकाशित करैत अछि आ एक मठ स्थापित करैत अछि। जतय पुरुष आ स्त्री समर्पित भावनासँ काज कय सकय। ओ अपन सम्पूर्ण समय आ शक्ति एहिमे लगा देबाक योग्य हो, तेँ संन्यासी भय जाइत अछि। जानसँ फाजिल काज करैत रहलाक कारणेँ ओ क्लान्त भय जाइत अछि आ मरि

जाइत अछि, जेना पणलक्ष्यान्त कोण घेतो ? मे भेल छैक, कथाकेँ पूर्ण करबाक हेतु एहिमे भवानन्दक चेला रमानन्द द्वारा एक अध्याय जोड़ि देल जाइत छैक ।

यशवन्तराव खरे श्रीधरपन्तक प्रभावमे रहि यशवन्तरावक बाल्यावस्थासँ युवक होयबा धरि व्यक्तित्व आ चरित्रक क्रमिक विकासक वर्णन लेखक द्वारा अन्य पुरुषमे भेल अछि । मी मे थोड़-बहुत जीवनक ओही अवधिकेँ लेल गेलैक अछि, मुदा उपन्यासक प्रमुखपात्र भाऊ द्वारा कथा उत्तम पुरुषमे कहल गेलैक अछि । यशवन्तराव आ भाऊ दूनूगोटे दुइ विशिष्ट व्यक्तिक निर्देशकत्व आ प्रभावमे अबैत अछि । यशवन्तरावकेँ प्रभावित कयनिहार एक आक्रामक आ दृढ़ इच्छाशक्ति रखनिहार व्यक्ति अछि जे अनका प्रति, विशेषत: ओकरासँ भिन्न विचार रखनिहार व्यक्तिक प्रति आदर भाव नहि रखैत अछि । दोसर दिस भाऊक परामर्शदाता आ निर्देशक शिवरामपन्त श्रीधरपन्तसन प्रभावशाली व्यक्ति तँ नहि अछि, मुदा अतिशय उदारचेता आ सन्तुलित विचारक, संगहि विचारमे दृढ़ आ तदनुकूल आचरण करबाक हेतु उद्यत रहनिहार लोक अछि, ओ सामाजिक आ राजनीतिक दूनू सुधारकेँ समान महत्व दैत अछि आ आवश्यक मानैत अछि । ओ अपन कन्या सुन्दरीकेँ शिक्षेत्रा नहि दैत अछि, अपितु ओकरा आजीवन अविवाहिता रहि समाज-सेवामे जीवन समर्पित कय देबाक अनुमति सेहो दैत छैक । ई कहल जाय सकैत अछि जे शिवरामपन्त तेहन दयालु व्यक्ति अछि जकरा हरिभाऊ आदर्श पुरुष मानि सकैत छलाह ।

पणलक्ष्यान्तकोण घेतो ? मे यमु आ ओकर भाय दादा एहि दुइ व्यक्तिक, जेना यमु अपने वर्णन कयने अछि, चरित्रकेँ स्फुटित आ क्रमहि विकसित होइत हम देखैत छी, मी मे चरित्रक स्फुटन आ विकास तीन व्यक्तिक भेल देखयमे अबैत अछि आ से थीक कथा कहनिहार भाऊ स्वयं ओकर बहिन ताई आ शिवरामपन्तक कन्या सुन्दरी । एक नारीक संसार तथा परिणामत: ओकर अनुभव आ पर्यवेक्षणक क्षेत्र सीमित होइत छैक । ओकर रुचि सेहो स्वभावत: अपन परिवार आ निकट सम्बन्ध धरि सीमित रहैत छैक । दोसर दिस एक पुरुषक संसार, ओकर पर्यवेक्षण क्षेत्र, अनुभव आ रुचि बहुत विस्तृत होइत छैक । एहि दूनू उपन्यासमे ई अन्तर नीक जकाँ उल्लखित अछि जे स्पष्टरूपसँ देखल जाय सकैत अछि । ई हरिभाऊक जीवनक पर्यवेक्षण शक्तिमात्र नहि प्रदर्शित करैत अछि, अपितु पात्र सभक मस्तिष्कमे प्रवेश करबाक हुनक क्षमता सेहो प्रदर्शित करैत अछि ।

मी मे ताई यमुक तुलनामे सर्वथा भिन्न व्यक्ति अछि । यमु स्नेहमयी आ प्रेम करबाक योग्य एक नवयुवती अछि आ अपन पतिक संग रहैत बम्बैक ओकर जीवन, अवधि छोट रहितो, पूर्ण आनन्दमय छलैक । पतिक मृत्युक बाद ओ बहुत दिनधरि जीवित नहि रहलि । ताईक प्रारम्भिक जीवन विपत्तिक विरुद्ध

संघर्षक छैक आ ओ कठोर पदार्थसँ निर्मित अछि। ओ चेतनासँ युक्त, दृढ़ इच्छा-शक्ति रखनिहारि आ आत्मनिर्भर रहनिहारि अछि, मुदा विचारवान, कार्य आ उत्तरदायित्वक प्रतिसूक्ष्म ज्ञान रखनिहार सेहो अछि। भाऊ आ ताईक पिता अनुत्तरदायी आ आत्मप्रशंसी लोक छथिन जे अपना परिवारकेँ अपना सारक माथपर थोपि, सबकेँ छोड़ि घरसँ दूर चल जाइत छथिन। ओ यदाकदा किछु दिनुक हेतु आबि पुनः सभक हेतु कटु आ दुखद जीवनकेँ छोड़ि दूर चल जाइत छथिन। ताईक माय स्वच्छन्द विचारक, अपना बात पर अड़ल रहानहारि, घीयापूताक प्रति कर्कश होयबाक समय दुःसाध्य आ अपन करनीसँ की परिणाम होयत ताहिसँ असावधान रहनिहारि छैक। ताई जखन नेना छाले तखने ओकर विवाह एक साठि बरखक बूढ़क संग ओकर तेसर स्त्रीक रूपमे कराय देल गेलैक। ओ बुढ़बा पियक्कड़ आ व्यभिचारी लोक छैक, ओकरा संग जीवन असहनीय देखि ताई नैहर घुरि अबैत अछि आ अपन भायक प्रोत्साहन आ शिवरामपन्तक सहायतासँ अपनाकेँ शिक्षित करय लगैत अछि। ई सब अपन माय आ मामाक इच्छाक प्रतिकूल करैत अछि। ओ जे किछु करैत अछि से सब स्वीकृत मर्यादाक विरुद्ध छैक आ ओकरा आलोचना, अपमानजनक मिथ्या अपवाद, सामाजिक प्रताड़न सभक सामना करय पड़ैत छैक। मुदा ओ एहि सबसँ अविचल रहैत अछि। ई सब होइतो अपना स्वामीक अन्तिम बेर दुःखित पड़ला पर ओ ओकरा लग जाइत अछि आ ओकर सेवा शुश्रूषा करैत छैक। अपन शिक्षा सम्पन्न कयलाक बाद अपना भायक मठमे सम्मिलित भय जाइत अछि आ सामाजिक काजमे अपनाकेँ समर्पित कय दैत अछि। मराठी उपन्यासमे एहि प्रकारक नारी-चरित्र पहिले पहिल उपस्थित भेल अछि। रखमाबाई आ पण्डिता रमाबाई जकाँ एहन नहि भेल रहितैक तँ ताईकेँ अवास्तविक पात्र मानल जइतैक।

सुन्दरी एहि प्रकारक दोसर असाधारण पात्र अछि। ओ आ भाऊ सुन्दरीक पिता शिवरामपन्तक भद्र आ प्रेरणाप्रद निर्देशनमे सगसंग बढ़ैत आ विकसित होइत अछि। जहिना-जहिना ई सब युवावस्था दिस अग्रसर भेल जाइत अछि तहिना-तहिना एक दोसराक प्रति आपकता आ आकर्षण वयसक अनुरूप अति-सूक्ष्म रूपसँ परिवर्तित भेल जाइत छैक।

शिवरामपन्तक इच्छा छनि जे ताई जकाँ सुन्दरी सेहो अपनाकेँ शिक्षित करय, अविवाहिता रहि समाजक हेतु काज करय। मुदा स्वभावसँ ताईसँ भिन्न प्रकारक अछि। ओ बहुत किछु यमु जकाँ सवेदनशील, कोमलहृदया, स्नेहशीला आ प्रेममयी अछि। शिवरामपन्त किछु अंशमे निराश भय जाइत छथि, मुदा समानता रहलाक कारणेँ ई विवाह दूनूक हेतु सुखद होइतैक। मुदा प्रस्ताव किछु विलम्बसँ अबैत छैक। कारण जे भाऊ पहिनहि विचार स्थिर कय चुकल

अछि जे आजीवन एकसरे रहब आ समाज सेवामे अपनाकेँ समर्पित कय देब। शिवरामपन्त दोसर बेर निराश होइत छथि, मुदा विचारवान होयबाक कारणेँ एकरा कोनो अन्यथा नहि बुझैत छथि।

कथाकेँ ई मोड़ देबामे लेखक कहाँधरि ठीक छथि से विवादक विषय भय सकैत अछि, मुदा एहिमे कनेको सन्देह नहि जे लेखक बहुत कुशलतापूर्वक एहि घटनाक आ सूक्ष्म स्थिति सभक चित्रण कयलनि अछि।

पणलक्ष्यान्तकोण घेतो ? क तुलनामे मी केर भावात्मक स्वर कटु आ रूक्ष छैक। कर्त्तव्यबोध आ अनुशासनबोध प्रथम स्थान रखैत अछि आ भावना एवं आवेग पाछाँ छुटि जाइत छैक। ई तथ्य उपन्यासकारक रूपमे हरिभाऊक विकासशील योग्यताकेँ अवश्य स्पष्ट करैत, जँ उपन्यासमे सबतरि ओही स्वरकेँ राखि पबितथि। उपन्यासक सामाजिक कथावस्तु पूर्ण विस्तृत आ सुसंघटित अछि। एहिमे ओहि सब समस्याकेँ सम्मिलित कयल गेल अछि जे सब ताहि समय सामाजिक रूपमे सचेतन मध्यम वर्गीय शिक्षित लोकक मस्तिष्कमे छलैक।

आब हमसब जग हेँ असे आहे (संसार एहन अछि) १८९७-९९, भयंकर दिव्य (भयानक कठिन परीक्षा) १९०१-९३, मायेचा बाजार (मायाक संसार) १९१०-१९१२, एहि तीनू उपन्यास पर एक संग विचार करब। एहि क्रममे आजच (१९०४) केँ छोड़ि देबैक, कारण जे एहि पर हरिभाऊक अन्तिम सामाजिक उपन्यास कर्मयोगक संग विचार कयल जायत। ई दूनू उपन्यास एक समान आ अपूर्ण छनि।

ई तीनू उपन्यास हरिभाऊक आन उपन्यास सबसँ भिन्ने नहि, प्रत्युत किछु अंशमे सन्तुष्ट करबामे झूस पड़ैत छनि। 'जग हेँ असे आहे' राधाबाई आ ओकर बेटा सीतारामक कथा थिकैक। राधाबाई विधवा अछि। आ पतिक मृत्युक बाद ओकरा सतौत (जेठकी सौतनिक बेटा) आ सतपुतहु सतबैत छैक, अकच्छ आ अपमानित करैत दुर्व्यवहार करैत छैक। अन्तमे ओ दूनू बेकती घरसँ निकालि दैत छैक आ ओ नैहर चल अबैत अछि। ओकर बाप शीघ्रे मरि जाइत छैक आ एकरा पता लगैत छैक जे एकर पिताक घर दुआरि एकरे मृतपतिक नामेँ प्रकारान्तरसँ एकरा सतौत लग, भरना छैक। तकराबाद तँ सतौत, सत-पुतहु आ ओकर दोस-महीम सभक द्वारा पीड़ित होयबाक लक्ष्य बनि जाइत अछि, मुदा ई शान्त आ सदाचारिणी महिला अछि आ तेहने बेटा सेहो छैक। अन्ततः समय ओहि पापी सभक विरुद्ध पलटा खाइत छैक, राधाबाई आ ओकरा पुत्र केँ अपेक्षित हक भेटि जाइत छैक आ ओ सब आनन्दित भय जाइत अछि। एहि तरहेँ अधलाह पर नीकक विजय होइत छैक। एहि उपन्यासमे घटना दुइ भिन्न अवसर पर घटित होइत छैक। पूर्वभागमे पहिल अवसर सदाशिव, पेठ पूनासँ सम्बद्ध अछि, जकरासँ हरिभाऊक पूर्ण परिचित छथि आ दोसर भागमे ओ

अवसर खुश्चेव वाद (ई नाम स्वयं भ्रष्टाचारक द्योतक अछि) क काल्पनिक राज्यसँ सम्बद्ध अछि । राधाबाईक सतौत चित्तोपन्त ओहि राज्यक दीवानक रूपमे अपन नियुक्ति कराय लैत अछि आ एतहिसँ राधाबाईक आ ओकर बेटाक विरुद्ध कूट प्रबन्ध आ विद्रोह परिचालित होइत छैक। हरिभाऊ एहन वातावरण सँ परिचित नहि छथि, तेँ चित्रण प्रभावोत्पादक नहि छनि । कथाक आरम्भ होइते रोचकताक ह्रास होअय लगैत छैक, पात्र रूढ़ होअय लगैत छैक, स्थिति कृत्रिम सन लगैत छैक, आकस्मिक घटना पर अधिक निर्भरता बढ़ि जाइत छैक आ उपन्यास नीतिमूलक कथाक अतिरिक्त किछु नहि रहि जाइत अछि । मात्र किछु पात्रक चित्रण प्रभावोत्पादक भय सकलैक अछि ।

भयंकर दिव्य (१९०१-१९०३) आ मायेचाबाजार (१९१०-१९१२) केँ एक संग राखल जाय सकैछ, कारण जे कतोक विन्दुपर दूनूमे समानता छैक। ई दूनू उपन्यास महाराष्ट्रमे सामाजिक सुधार आन्दोलनक प्रगतिक संकेत तँ करैत अछि, मुदा हरिभाऊक उपन्यासकारक रूपमे लेखन-कौशलक प्रगतिक संकेत नहि करैत अछि ।

भयंकर दिव्य कमलाक कथा थिकैक जे बलवन्तराव आ द्वारकाबाईक बेटी थीक । द्वारकाबाई बलवन्तरावसँ विवाह करबासँ पहिनहि विधवा छलि। ई दर्शबैत अछि जे बलवन्तराव समाज-सुधारक रहथि। ओ अपन कन्या कमलाकेँ चौदहम पन्द्रहम वयसधरि कुमारि रहय दैत छथिन आ एहि अवधिमे ओकरा नीक शिक्षा दैत छथिन। ताहूसँ बेसी ओ प्रभाकर आ पद्माकर नामक युवककेँ अपनाओतय आबय आ कमलासँ भेट-घाट, गप्प-सप्प करबाक अनुमति दैत छथिन । समय अयला उतर पद्माकर कमलासँ विवाह करबाक हेतु बलवन्त-रावक अनुमति चाहैत अछि आ से प्राप्त कय लैत अछि । ओकर पिता दादा साहेब सेवा निवृत्त सरकारी अफसर छथिन आ समाजसुधारक विरोधी, तेँ एहि विवाहकेँ स्वीकृति नहि दैत छथिन । परन्तु हुनक विरोधक अछैत, आ बेटाकेँ त्यागिओ देलापर, ई विवाह भइए जाइत छैक ।

दैवात् शीघ्रे बाधा सब उपस्थित होअय लगैत छैक । क्यो हुनकालोकनिसँ आशा कय सकैत अछि जे ओ लोकनि सुधारवादी आ सुधारवादक विरोधी होयबासँ ऊपर उठथि । परन्तु उपन्यास एहि अर्थमे आगाँ नहि बढ़ैत अछि । ई रहस्य कथा दिस घुरि जाइत अछि । बाधा जे एकरा लोकनिकेँ खेहारैत छैक तकर कारण राजाराम नामक धूर्त्त, कपटी आ प्रपंची व्यक्ति अछि । ओ पद्माकरक मस्तिष्ककेँ प्रभाकर आ कमलाक विरुद्ध विषाक्त बनबैत छैक आ विश्वास करबैत छैक जे कमला एकर विश्वासपात्र नहि रहि गेलैक अछि । ओ पद्माकरक अक्षरक नकलमे कमलाकेँ गारिसँ भरल एक चिट्ठी लिखैत छैक आ कमलाकेँ उद्विग्न बना दैत छैक । अन्तमे जेना तेना राजाराम एक जालरन्ध्रमे

फँसि जाइत अछि आ अपन कयल कुकर्मकेँ स्वीकार करैत अछि। तकरबाद सन्देह आ आशंकाक मेघ फाटि जाइत छैक, वातावरण साफ भेल जाइत छैक, सब भद्रलोकमे एकता भय जाइत छैक, सब प्रसन्न भय जाइत अछि। मुख्यतः ई उपन्यास घटना-प्रधान अछि, कतोक घटनाक माध्यमसँ पद्माकरक अधीर आ प्रवंच्य स्वभाव आ कमलाक स्वच्छ आ निर्दोष चरित्रक नीक वर्णन कयल गेलैक अछि। कमलाक प्रति क्रमशः परिवर्तित होइत दादासाहेबक व्यवहारक विलक्षण वर्णन कयल गेल अछि जे दादासाहेब मूलतः एक नीक लोक छथि।

उपर्युक्त अंशमे जाहि दुइ उपन्यासक चर्चा कयल गेल अछि, ताहि तरहेँ मायेचा बाजार (१९१०-१२) सेहो पूर्ण उपन्यास अछि आ एहिमे ओहि दूनूक अपेक्षा प्रायशः मानवहित पर बेसी ध्यान देल गेल अछि, मुदा प्रतिपादन खूब प्रभावपूर्ण नहि भय सकलैक अछि। दुइ कथाक भिन्न-भिन्न प्रवाह एक संग चलैत छैक, किन्तु दूनूक उचित रूपेँ सामंजस्य नहि भेल छैक।

एहि उपन्यासमे ओना तीन गोट भिन्न भिन्न गुटक लोकक जीवनक घटनाकेँ आधार बनाओल गेल अछि, मुदा मुख्य कथा ताहिमेसँ दुइए गुटसँ सम्बन्ध रखैत अछि। पद्मावती एक समाजसुधारक आबासाहेबक कन्या थिकनि। ओ एकरा हेतु किछु शिक्षाक व्यवस्था कयलथिन अछि आ चौदहम-पन्द्रहम बरखक वयसमे बालासाहेब नामक एक गरीब युवकसँ विआहि देलथिन अछि। पद्मावतीकेँ दूटा भाय छैक, मुदा आबासाहेब ओकरा सभक संग तेहन रुक्ष व्यवहार करैत छथिन जाहि कारणेँ दूनू घर छोड़ि पड़ाय गेल अछि। माय सोचैत छैक जे आबासाहेब अपन समस्त स्नेह आ समर्थन अपना बेटीएकेँ दय देने छथि आ बेटा सभकसंग दुर्व्यवहार करैत छथि। तेँ ओ बेटीक प्रति असहानुभूतिशील भय गेलि अछि। विवाहक बाद बालासाहेब आबासाहेबक आश्रममे आबि रहय लगैत अछि। ओकरा ओकालति पढ़बाक हेतु इङलैण्ड पठा देल जाइत छैक। ओ सोचैत अछि जे विवाहमे ओकरा ठकि लेल गेलैक अछि आ तकर बदला लेबय चाहैत अछि। ओ स्वभावसँ दुष्ट, शंकालु आ कुटिल अछि।

एक दोसर परिवार दादासाहेबक थिकनि जनिका एक कन्या मालती, एक पुत्र वसन्तराव आ पत्नी छथिन। मालती सेहो शिक्षा प्राप्त कयने अछि आ ओकर विवाह मधुकरसँ भेलैक अछि जे विवाहक बाद आइ० सी० एस० परीक्षाक तैयारीक हेतु बिलेंत विदा होइत अछि। ईहो ओही समय इङलैण्ड बिदा होइत अछि जखन बालासाहेब बिदा होइत अछि।

एहि दूनू परिवारमे बहुत बेसी अपेक्षा-पात छैक आ एक दोसर परिवारमे आयल गेल करैत अछि। वसन्तराव आ पद्मावतीमे बाल्यकालेसँ मित्रता छैक आ दूनूक पारस्परिक अनुभूति संवेदनापूर्ण छैक। वसन्तरावक हृदयमे पद्मा-

वतीक प्रति तेहन हनुराग छैक जे ओ आजीवन अविवाहिते रहय चाहैत अछि। पद्मावती अपन व्यवहार मे सावधान रहबामे पूर्ण पटु अछि। बालासाहेबक इङ्लैण्ड रहैत अनुपस्थिअोमे वसन्तराव पूर्ववत् पद्मावतीक ओतय गेल करैत अछि। एहीकारणें बालासाहेबकें अपना प्रति पद्मावतीक अनुराग सन्दिग्ध बुझाइत छैक। ओ इङ्लैण्डसँ समय समय पर कखनहु अपमानित करैत आ कखनहुँ चाटुकारितापूर्ण चिट्ठी लिखल करैत छैक।

उपन्यास प्रारम्भ होइतहि आबासाहेब मरि जाइत छथि। इङ्लैण्डसँ घुरलापर बालासाहेब पद्मावतीसँ आबासाहेबक आलमारीक कुंजी आ हुनकर बनाओल वसीयतनामा मङैत छैक। पद्मावती अस्वीकार कय दैत छैक। ओ दृढ़ इच्छाशक्ति रखनिहारि विश्वासी अछि, मुदा एक मनुष्यक रूपमे एकरा प्रति सम्मान भाव नहि छैक।

एहि विन्दु पर आगाँ चलि ई कथा दूनूक मध्य दीर्घकालीन संघर्ष आ तनातनीक कथा बनि जाइत अछि। बाला साहेब पीवय लगैत अछि, ठक सभक संगतिमे पड़ि जाइत अछि आ ओ अपनाभरि सब सम्भव उपायसँ पद्मावतीकें उछन्नर करय लगैत छैक। हरिभाऊक स्तरक उपन्यासकारक हेतु ई अत्युत्तम सामग्री थिकनि। दू गोट चरित्र बेस मिश्रित आ दूनूक सम्बन्ध बेस जटिल छैक। परन्तु कथामे ततेक घीच-घाच आ औत्सुक्य उत्पन्न करबा पर ततेक बेसी ध्यान देल गेल छैक जे सामाजिक आ मनोवैज्ञानिक हितक हनन होअय लगैत छैक। मुदा हरिभाऊ द्वारा चित्रित एहि दुइपात्रक पार्थक्य अतिशय प्रभावपूर्ण आ स्थितिक निर्वाह कौशलपूर्ण अछि।

उपन्यासक तेसर मौलिक अंश मथुराबाई नामक एक युवती विधवाक भाग्य-सँ सम्बद्ध अछि। ओकर पति संगहि मायबाप सब मरि गेल छैक आ अपन छोट भाय-बहिनिक पालन-पोषण करबाक दायित्व छैक। से एक स्कूल मास्टरनी बनि ओ पूरा करैत अछि।

ओकर परोसिया दिगम्बरपन्त ओकर पिताक मित्र होयबाक दाबा करैत छैक आ सहायता देबाक आ सुरक्षा करबाक लाथें अपनाकें ओकरा पर थोपि लैत अछि आ ओकर अहठधर्मी एवं अधार्मिक व्यवहारक आलोचना करैत छैक। ई ओकरा बातकें कानबात नहि करैत छैक आ ने अपन बाट बदलैत अछि, से देखि ओ एकरा उछन्नर करय आ एकर प्रसंग मिथ्या निन्दा पसारय लगैत छैक। अन्तमे ई खिसिया कय ओ स्थान छोड़ि दोसर ठाम चल अबैत अछि जे पद्मा-वतीक घरक लग पड़ैत छैक। दूनूमे शीघ्रे मित्रता भय जाइत छैक, मथुराबाई प्रसन्न भय जाइत अछि। पद्मावती बहुत दिनसँ दुखिताहि छलि। ओ अपन समस्त सम्पत्ति मथुराबाईक नामें लिखि अपन बेटाक भरण-पोषणक भार सौंपि अपने मरि जाइत अछि।

मधुकरकेँ भारत आपस अयला उत्तर मधुकर आ मालतीक कथा क्षीण पड़ि जाइत छैक। एहि तरहेँ ई उपन्यास मुख्यत: पद्मावती, दोसर मथुराबाईक भाग्यसँ सम्बद्ध रहि जाइत अछि।

वस्तुत: पद्मावतीक विषय व्यक्तिगत सम्बन्ध आ तनावक थिकैक, जखन कि मथुराबाईक घटना सामाजिक तनावक। जे कठिनता मथुराबाईकेँ सहय पड़ैत छैक आ जाहि तरहक प्रतिकूल कार्यकलाप आ अपमानजनक प्रचारक सामना करय पड़ैत छैक ताहिसँ ओहि संकटक पता चलैत अछि। जाहि बाटेँ ताहि समयक मध्यम वर्गीय हिन्दू समाज गुजरि रहल छल। किछु विधवा स्वतन्त्र भय रहलि छलि आ शिक्षा प्राप्त कय रहलि छलि। परन्तु पुरान व्यवस्थामे आत्म केन्द्रित अभिभावक एकर विरुद्ध छल आ एकरा पसिन्न नहि करैत छल। एहि तरहेँ सामाजिक दृष्टिकोणसँ मथुराबाईक कथा बेसी महत्त्वक अछि आ जतय-धरि ई कथा बनि सकल अछि, एकर प्रतिपादन नीक जकाँ भेलैक अछि। मुदा सम्पूर्णता मे पद्मावती एक कथाकेँ उपन्यासमे प्राथमिकता प्राप्त छैक। दूनू कथाक सामंजस्य उचित ढंगेँ नहि छैक आ औत्सुक्य उत्पन्न करबाक प्रयास सेहो बेसी छैक जाहि कारणेँ उपन्यासक प्रभावोत्पादकता घटि गेलैक अछि।

आजच (एही दिन) १९०४-१९०६ आ कर्मयोग (१९१३-१७) दूनू अपूर्ण अछि। विषयवस्तुक दृष्टिसँ एहि दूनूकेँ गणपतराव, यशवन्तरावखरे आ मी कर श्रेणीमे अथवा एक डेग आगू राखल जाय सकैछ।

गणपतरावमे नारी-मुक्ति, नारी-शिक्षा, विवाह क वयस बढ़ायब आ व्यवहारमे पुरुषक समान स्थान देबा पर जोर देल गेलैक अछि। यशवन्तराव खरेमे राजनीतिक सुधार पर ई जोर छैक। मी मे दूनू केँ समान महत्त्व देल गेलैक अछि। आजच क आधारभूमि आरो विस्तृत कयल छैक। उपन्यास एक बाद–विवादसँ आरम्भ होइत अछि आ भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेसक १९०१ ई० क अधिवेशनसँ घूरल अबैत चारि व्यक्ति एहि वाद-विवादमे भाग लेनिहार अछि। एहिमेसँ किछु गोटे एहिसँ पहिलुको उपन्यासमे देखल जाइछ। एहिमे एक समाज-सुधारक समर्थक गणपतराव दोसर राजनीतिक सुधारक समर्थक यशवन्तराव आ तेसर गोटे कृष्णराव थिकथि जे यशवन्तरावखरेमे कृष्णबापूक रूपमे उपस्थित भेल छथि। कृष्णरावक विचार छनि जे हमरालोकनि भारतीय जाधरि उद्योगक स्थापना नहि करब ताधरि हमरासभक कोनो भविष्य नहि होयत। चारिमव्यक्ति नारायणराव थिकाह, जे एहि उपन्यासमे पहिले पहिल अय लाह अछि। हुनक विचार छनि जे बिनु राजनीतिक स्वतन्त्रता प्राप्त कयने हम सब कोनो प्रगति नहि कय सकैत छी।

ई वाद-विवाद ट्रेन यात्राक क्रममे चलैत छैक आ उपन्यासक कतोक अध्याय धरि चलैत रहैत छैक। एक स्टेशन पर अद्वैतानन्द स्वामी ओहि डिब्बामे अबैत

छथि आ ओहि वाद-विवादमे योगदान करैत छथिन । हुनका विश्वास छनि जे कोनो आन्दोलन ईश्वर आ धर्ममे विश्वास पर बिनु आधारित रहने सफल नहि भय सकैछ आ ओ निरर्थक होयत । उपन्यास दू सय पृष्ठधरि चलैत अछि । मुदा कथानकमे कोनो प्रगति नहि होइत छैक आ ने कोनो संकेत भेटैत छैक जे कथाक अन्त कोन रूपेँ होइतैक । अनुमानमात्र कयल जाय सकैछ । उपन्यास विवाद आ तर्कक दलदलमे फँसि गेल अछि ।

आजच जकाँ कर्मयोग सेहो अपूर्ण अछि । उपन्यासक नायक चन्द्रशेखर गणपत राव (एहि नामक उपन्यासक नायक) आ सरस्वतीबाईक बेटा थिकैक । सरस्वती बाई गणपतरावक दोसर स्त्री आ नानाक बहिन थिकैक जकर नैहरक नाम गोदावरी थिकैक । ओ गणपतरावसँ समन्ध करबासँ पहिने विधवा छलि । नाना, ओकर स्त्री यशोदाबाई ओकरा सभक बेटी लालावती सेहो एहि उपन्यासमे अछि ।

चन्द्रशेखर प्रथम श्रेणीमे एम०ए० परीक्षामे उत्तीर्ण भेल अछि । सबकेँ ओकरासँ आशा छैक जे ओ अपन जीवन समाज-सेवामे समर्पित कय देत । चन्द्रशेखर स्वयं अनिश्चयमे अछि जे ओकरा की करबाक चाहिऐक । तत्काल किछु विश्राम, किछु आनन्द-विनोद पसिन्न छैक, सोचब-विचारब, तकरबाद योजना बनाओब । अपन पिता जकाँ ईहो नास्तिक अछि । अनिश्चयक स्थितिमे रहैत, एकक बाद एक योजनापर सोचैत रहबाक अवधिमे एक स्वामीसँ भेट भय जाइत छैक । ई स्वामीजीक व्यक्तित्व, परिष्कृत व्यवहार आ वाक्पटुतासँ बेस प्रभावित होइत अछि । स्वामीजी अनिश्चयक स्थितिमे रहब, कोनो योजनाकेँ कार्यरूप देबामे अक्षम रहबाक हेतु चन्द्रशेखरक आलोचना करैत छथिन । ओ एहि बातपर जोर दैत छथिन जे ईश्वरपर बिनु विश्वास कयने कोनो क्रिया (कर्म) निरर्थक थीक । व्यक्ति मात्रमे ओहि शक्तिक प्रति विश्वास रहबाक चाहिऐक जे एहि संसारक सृष्टि कयने छथि आ एहिपर जनिकर नियन्त्रण छनि आ ओ जे किछु करैत छथि से एहि विश्वक कल्याण हेतु होइछ। एहने मानसिक स्थितिमे किछु दिनुक हेतु चन्द्रशेखर अपन माम नानाक ओतय चल जाइत अछि समय बितयबाक हेतु। ओतय एकरा ताई (मी मे वर्णित) सँ भेट होइत छैक जे बहल (मी मे वर्णित) द्वारा स्थापित एक आश्रमक संचालन करैत अछि । ताईक व्यक्तित्व, आश्रमकेँ संचालित करबाक उपाय आ आश्रमक विभिन्न विभागसँ चन्द्रशेखर बहुत प्रभावित होइत अछि, जाहिसँ ओ अनुभव करैत अछि जे ओकरा कार्यक्षेत्र भेटि गेलैक अछि । एहि ठाम आबि अपूर्णतेक स्थितिमे उपन्यास छोड़ि देल गेल अछि ।

यद्यपि उपन्यास अनेक अध्याय धरि चलैत अछि, मुदा एहिमे एकदम गति नहि अयलैक अछि । एहिमे एक आरो कथा छैक, जाहिमे जीवन आ क्रिया-

शीलनाक अधिक निर्वाह भेलैक अछि। ई कथा एक भाऊसाहेब नामक व्यक्तिक परिवारसँ सम्बद्ध अछि। भाऊ साहेब कालेजमे गणपतरावक समकालीन छथिम आ जनिका अपन संस्कृत भाषाक प्रवीणतापर गर्व छनि। ओ सुधारवादक विरोधी, दम्भी आ अपन परिवारकेँ चलयबामे स्वेच्छाचारी छथि, मुदा चाटु-कारितासँ सुविधा पूर्वक जितलो जाय सकैत छथि। ओ अपनाकेँ अभिनयकलामे पटु मानैत छथि आ विक्रमशील नामक एक गुंडा अवारासँ ततेक प्रभावित छथि जे ओकर सहायतासँ एक नाटक खेलयबामे लागि जाइत छथि। भाऊ साहेबक घरपर रिहर्सल (प्रागभ्यास) होइत छनि। हुनकर रक्षिता आ पालिता नर्मदा विक्रमशीलक प्रभावमे आबि जाइत अछि आ अवसर अयलापर चन्द्रशेखर एक दिन साँझक झलफलमे ओकरा विक्रमशीलक संग देखैत छैक। ओ अनुभव करैत अछि जे विक्रमशीलक नीचतासँ नर्मदाक रक्षा करब एकर कर्त्तव्य थिकैक।

चन्द्रशेखरक हेतु ई एक दोसर दिशा थिकैक, जेमहर अपनाकेँ मोड़ि सकैत छल। मुदा आगाँ बढ़ला उत्तर उपन्यासमे हमरालोकनि नहि जानि पबैत छी जे वस्तुतः ओ की कयने होयत।

भाऊ साहेबक गृह सम्बन्धी मानवधर्मी नाटकक बहुत रास अंश छनि। मुदा एतय धरि कथाक अंश मुख्य कथांशसँ सांयोगिके रूपमे सम्बद्ध अछि। दूनू कथांशकेँ कतेक दूर धरि संघटित कयल जाय सकैत छल से हमरालोकनि नहि जनैत छी। अतः एहि अन्तिम सामाजिक उपन्यासहुक प्रसंग हमरा लोकनि अनुमानेटा कय सकैत छी।

सामान्यतः जखन हमसब एहि उपन्यास सब पर विचार करैत छी तँ देखि सकैत छी जे हरिभाऊ महाराष्ट्रक आधा दर्जन मध्य आ निम्नमध्य वर्गीय परिवारक नीसो व्यक्तिक आ तीस-पैंतीस बरखक अवधिकेँ समेटैत ओकरा सभक जीवन आ भाग्यक कथा एवं एहि तरहेँ महाराष्ट्रक सामाजिक इतिहास लिख-बाक योजना बनौने होयताह। एक उपन्याससँ दोसर उपन्यासमे क्रमशः हम सब देखि सकैत छी जे एहि अवधिमे स्त्री गणक स्थिति अपेक्षाकृत नीक होइत गेलैक अछि। ओकरासबकेँ शिक्षा देल जाय रहल छैक, ओकर विवाहक वयस क्रमशः बढ़ाओल जाय रहल छैक आ विरोधक अछैतो विधवासभक पुनर्विवाह भय रहलैक अछि आ जे विवाह नहि करैत अछि ताहिमेसँ किछु नौकरी-चाकरी करबाक योग्य अथवा समाज-सेवा करबाक योग्य अपनाकेँ बनाय लैत अछि। ई यर्थाथिक अनुरूप अछि।

सामाजिक-राजनीतिक क्षेत्रमे सामाजिक आ राजनीतिक सुधार त्यागि नहि देल गेल अछि, प्रत्युत ओहिमे किछु सीमाधरि संशोधन कयल गेलैक अछि आ राष्ट्रीय जीवनक आर्थिक आ औद्योगिक महत्त्वपर सेहो विशेष जोर देल गेल

गेलैक अछि। आध्यात्मिक विषय पर सेहो जोर देल गेलैक अछि आ आध्यात्मिक रीतिसँ सामाजिक-राजनीतिक काज करवाक महत्त्व दर्शाओल गेलैक अछि।

परन्तु उपरिचर्चित विश्लेषण उपन्यासक केवल सामाजिक कथावस्तुसँ सम्बद्ध अछि। हमरा लोकनिकेँ एक उपन्यासकारक रूपमे हरिभाऊक समस्त उपलब्धि आ मराठी उपन्यासमे हुनकर योगदानसँ सम्बन्ध अछि। यदि हमरा-लोकनि हिनक उपन्यास-लेखनसँ पूर्व प्रकाशित अथवा समकालमे लिखल जाइत उपन्यास सभक संग हरिभाऊक उपन्यास सभक तुलना करब तँ पायब जे हिनक उपन्यास सब जीवनक निकट छनि। ओ स्वयं अपन कथाकेँ आजकालच्या गोष्ठी समकालीन जीवनक कथा कहने छथि। हिनका उपन्यासमे जे आदर्श आ काल्पनिकता देखि पड़ैत अछि से बाहरसँ थोपल नहि छनि, प्रत्युत उपन्यासक पात्र सभक लालसा आ आकांक्षासँ उत्पन्न भेल छनि। से पुनि यथार्थतासँ परिपूर्ण अछि। ओ जाहि भाषाक प्रयोग कयने छथि से दैनन्दिन जीवनमे प्रयोगमे आबयवाला भाषा थिकनि आ प्रयोग कयनिहारक हेतु सर्वथा उपयुक्त छनि। मुख्यपात्रसब भिन्न-भिन्न व्यक्तिक रूपमे आयल अछि, नियतरूपमे नहि। पात्र सभक विकास आ उभार कौशलपूर्ण ढंगसँ कयल गेलैक अछि। यमु, भाऊ, ताई यशवन्तराव एहि प्रसंगमे सर्वोत्तम उदाहरण थीक।

विशेष परिस्थिति सबमे पात्र सभक विचार आ अनुभूतिक विश्लेषण आ वर्णन समग्रतामे कयल गेलैक अछि। जाहि परिवेश आ वातावरणमे पात्र जीवैत अछि, विकसित होइत अछि आ काज करैत अछि, सेहो सब यथार्थ जीवनक थिकैक आ ताहिसँ घनिष्ठ रूपमे जुटल छैक। एकर सर्वोत्तम उदाहरण पण लक्ष्यान्तकोण घेतो ? थीक, मुदा मी आ यशवन्तराव खरेमे सेहो हम देखि सकैत छी। यदि यशवन्तराव खरे उपन्यास पूर्ण मेल रहैत तँ सम्भवतः पण-लक्ष्यान्त कोण घेतो ? क संग एकर पूर्णरूपसँ तुलना कयल जाय सकैत छल। ओहि उपन्यासमे पात्रक चरित्रक एक तरहेँ अधिकार पूर्वक खोधामा कयल गेल अछि आ यशवन्तरावक चरित्रमे मोड़ अननिहार शक्तिकेँ स्पष्टतासँ दर्शाओल गेल अछि।

यद्यपि हरिभाऊक किछु उपन्यास अपूर्ण छनि आ किछु जे पूर्णो छनि ताहू मे किछु पूर्ण सन्तोष-प्रद नहि छनि, जे होयबाक चाहैत छलनि, मुदा ईहो निस्सन्देह जे मराठीमे हरिभाऊक उपन्यासक प्रभाव लेखनपर ताहि रूपेँ पड़लैक जे बादमे मराठी उपन्यासक से स्थिति नहि रहितैक जे हरिभाऊसँ पहिने छलैक। एक दिस ई वी० एम० जोशी आ अन्य व्यक्ति द्वारा लिखल गेल उपन्यास सब आ दोसर दिस पछाति प्रकाशमे आयल ओहि यथार्थवादी उपन्यास सबपर तर्क-वितर्क प्रारम्भ कयलनि जे हिनक कृति सबसँ प्रभावित छल। सामाजिक उपन्याससबमे हरिभाऊक सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण योगदान व्यक्तिगत पात्र सभक

आ समाजक एकाइक रूप मे परिवारक चित्रण करबामे छनि। आधुनिक अधिकतर उपन्यासमे व्यक्ति परिवारसँ सम्बद्ध रूपमे चित्रित नहि प्रतीत होइछ आ हरिभाऊक उपन्यास सबमे व्यक्तिगत पात्रकेँ परिवारक अखण्डित रूपमे आ परिवारसँ उपजल हमरालोकनि देखैत छिऐनि। पुरुष अथवा नारी पात्र परिवारक भाग्य आ परिस्थितिसँ प्रभावित छनि। परिवारक माध्यमसँ हमरालोकनिकेँ एक विस्तृत समाजक झलक भेटि जाइत अछि। परिवार सामाजिक स्वरूपक एक अंग बुझि पड़ैछ। हरिभाऊक उपन्यास सबमे परिवार समाजक क्षयिष्णु अथवा गतिशील अथवा स्थिर पक्षकेँ प्रस्तुत करैत छनि आ एक दोसराक संग मिलिकय ओकर क्रिया आ प्रतिक्रियाकेँ निष्पन्न करैत छनि। एहि अर्थमे हरिभाऊक उपन्यास सब वस्तुतः सामाजिक उपन्यास थिकनि।

हरिभाऊ आप्टेक उपन्यास : ऐतिहासिक

एहन विषय संयोगेवश होइत अछि, मुदासे भेल अछि, जे हरिभाऊ एगारह गोट उपन्यास सामाजिक लिखलनि आ एगारह गोट ऐतिहासिक सेहो। एहन एक दोसरो संयोग अछि। जखन हिनक सामाजिक उपन्यास सबपर विचार करय लगलहुँ तखन एक उपन्यास चाणक्षपणाचा कलस (१८८९-९०) केँ छोड़ि देल कारण जे ई एक फ्रेंच जासूसी उपन्यासक अङरेजी रूपान्तरक अनुवाद छल।

हरिभाऊक प्रथम ऐतिहासिक उपन्यास मैसूरचावाघ (मैसूरक बाघ) क चर्चा सेहो नहि कयल जाय सकैछ। पहिल कारण तँ ई जे ई उपन्यास कर्नल मीडो टेलरक पुस्तक टीपूसुल्तानक अनुवाद थिकनि आ दोसर कारण ई जे ई मूल उपन्यासक संक्षिप्तीकरण सेहो अपूर्ण आ विकृत छनि।

शेष दस उपन्यास मे छओ गोटक कथावस्तु मराठा इतिहाससँ लेल गेल अछि। तेँ एहि सब पर एक संग विचार करब अपेक्षित अछि। से करबाक समय हमरालोकनि ओहि सभक प्रकाशनक अवधिक क्रमपर ध्यान नहि देबनि, प्रत्युत ऐतिहासिक घटना सभक काल क्रमकेँ आधार मानि विचार करब। ओ उपन्यास सब थिकनि १-उषःकाल, २-सूर्योदय, ३-सूर्यग्रहण, ४-गड़आला पणसिंह, गेला ५-केवल स्वराज्या साठी, ६-मध्याह्न। एहि छवो उपन्यासमे सूर्यग्रहण आ मध्याह्न अपूर्ण छनि। उनैसम शताब्दक उत्तरार्द्धमे, विशेषतः ग्रांट डफ केर पुस्तक हिस्ट्री आफ मराठाज आ नीलकण्ठ जनार्दन कीर्तन द्वारा कयल गेल एहि पोथीक आलोचना प्रकाशित भेलाक पछाति महाराष्ट्रमे सामान्यतः मराठा इतिहास ओ विशेष रूपसँ शिवाजीक इतिहासक प्रति रुचि जागृत होअय लागल छलैक। ई सर्वसाधारण जनताक राष्ट्रीय चेतनाक जागरणमे एक प्रभावोत्पादक पक्ष भेल। वृटिश शासनक प्रशंसा करबाक प्रफुल्लता जखन किछु अंश मे घटलैक तखन वैचारिक नेता लोकनि राजनीतिकपरतन्त्राक कारण आ राजनीतिक स्वतन्त्रता पुनः प्राप्त करबाक उपाय जोहय लगलाह। अनेक उपाय एहि हेतु सुझाओल जाय लागल, जेना सामाजिक आ धार्मिक सुधार, पुरुष आ

नारी दूनू वर्गमे शिक्षाक प्रसार, उद्योग सभक स्थापना, राजनीतिक सत्ताक हेतु संघर्ष आदि आदि। राष्ट्रीय आत्म-सम्मानकेँ जगायब आ भारतीय इतिहाससँ प्रेरणा प्राप्त करब सेहो एहि उपाय सबमे सम्मिलित छल।

१८९५ क अप्रैलसँ तिलक द्वारा संचालित केसरी नामक पत्रिकामे शिवाजीक सम्बन्धक लेख प्रकाशित होअय लगलनि आ हुनके प्रेरणासँ १८९६ क अप्रैलमे रायगढ़मे शिवाजीक प्रथम जन्मशताब्दी विशेष उत्साहसँ मनाओल गेलनि। एहि तरहेँ शिवाजी आ मराठा इतिहासमे रुचि लेबाक नवीन युगक आरम्भ भेल आ से रुचि आइओ विद्यमान अछि। सम्भव थीक जे यैह शक्ति शिवाजीक जीवन आ काजकेँ आधार बनाय हरिभाऊकेँ उपन्यास लिखबाक हेतु प्रेरित आ प्रोत्साहित कयने होइनि। उषःकाल (१८९५–६७) शिवाजी पर आधारित हिनक पहिल उपन्यास थिकनि।

शिवाजीक समयधरि, तीन शताब्दक अओन-पओन धरि मराठा कुलीन वर्ग अपन जागीर आ अपन अधीनस्थ सैन्य समूह सहित अपना इच्छासँ मुसलमान शासनक प्रति समर्पित भय चुकल छल आ यदि हुनक भूमि आ सुविधा हुनक अधिकारमे रहि जाइनि तँ विनु कोनो संकोचक एक सल्तनतसँ दोसर सल्तनतक प्रति अपन स्वामि-भक्ति स्थानान्तरित करबाक हेतु प्रस्तुत रहथि। हुनका लोकनिकेँ एहि विषयसँ कोनो प्रयोजन नहि छलनि जे जे हिन्दू एक समय ओहि भूमिक शासक छलाह सैह लोकनि सम्प्रति विदेशी प्रभुत्वक अधीन भय गेलाह। ओ लोकनि एहि विषयसँ अनभिज्ञ नहि रहथि जे हिन्दू लोकनिक आ हिन्दू धर्मक दमन भय रहल अछि, मुदा एहिसँ हुनकालोकनि बहुत उद्विग्न नहि छलाह। शिवाजीक पिता शाहाजी एकर विशिष्ट उदाहरण रहथि। एक वीर सैनिक, आ सेनापति आ एक सुयोग्य प्रशासक रूपमे ओ अहमद आ बीजापुरक सुलतानक प्रति बदलि-बदलि अपन सेवा समर्पित कयने रहलाह। से होइतो ओ तेजस्वी लोकनि मे एक छलाह।

परन्तु शिवाजी एक भिन्न प्रकारक व्यक्ति रहथि। ओ स्वतन्त्ररूपसँ अपन माताक आ दादूजी कोंद्देवक संरक्षणमे पालित आ प्रशिक्षित भेल छलाह। ओ अपना हेतु एक एहन राज्य स्थापित करबाक आकांक्षी भेलाह जाहिठाम हिन्दू लोकनि सम्मानजनक आ निर्भय जीवन बिताय सकथि। ओ एहन अनुभव कयलनि जे यैह हुनक जीवनक लक्ष्य थिकनि आ जहिना ओ चेतन भेलाह कि अपना चारुकात समानरूपेँ सोचनिहार युवक सबकेँ आ सह्याद्रि पर्वतपर रहनिहार गरीब, मुदा शूरवीर मावला जातिक लोक सबकेँ जुटाबय लगलाह। एहि काज हेतु ओ मराठा कुलीन वर्गक सहानुभूति आ समर्थन प्राप्त करबाक प्रयत्न करय लगलाह। किन्तु ओ लोकनि शिवाजीक एहि विचारक आ विद्रोहक योजनाकेँ पसिन्न नहि कयलथिन आ अपन स्थितिकेँ निर्विघ्न राखय चाहलनि।

एहि विषयकेँ लय स्वाधीनता-प्रिय युवकवर्ग आ स्थिर विचार रखनिहार पुरान पीढ़ीक बीच मुहाँठुट्ठी होइत रहलनि। उषःकाल उपन्यास एही दुइ पीढ़ीक संघर्षक चित्र थीक।

एहि उपन्यासमे शिवाजी जीवनक प्रथम अभियान अर्थात् १६४७ मे तोरण किलाकेँ अधिकारमे करबाक कथा अछि, जखन ओ मात्र सत्रह बरखक रहथि। उपन्यासमे किलाक नाम बदलि कय सुल्तानगढ़ राखल गेल अछि आ शिवाजी, तानाजी, येशाजी आ बीजापुरक सुल्तान रानादुल्लाह खाँक अतिरिक्त प्रायः सब पात्र काल्पनिक अछि।

रंगराव अप्पा सुल्तानगढ़क किलेदार छथि जे एक किला थीक, जतय बीजापुरक सुल्तानक दिससँ ओ शासन करैत छथि। हुनकर पुत्र नाना साहेब शिवाजीक प्रति सहानुभूति रखैत छथिन। उपन्यासक आरम्भ सुल्तानगढ़मे एक नाटकीय घटनाक संग होइत अछि। बीजापुरसँ सम्मानजनक राजकीय परिधान प्राप्त भेलैक अछि आ एक समारोहमे नानासाहेबकेँ प्रदान कयल जाइत छनि। नाना साहेब ओ ग्रहण करब अस्वीकार कय दैत छथिन। दूनू बापुतमे गरमागरम उत्तर प्रत्युत्तर होइत छनि आ नानासाहेब शिवाजीक संगी सभक दलमे सम्मिलित होयबाक लेल किला छोड़ि कय चल जाइत छथि। तकर बाद नानाजीक संग विशेष कार्यवश बीजापुर जाइत छथि। ओतय हुनका जहलमे राखि देल जाइत छनि, मुदा बीजापुर दरबारक रानादुल्लाह खाँक कन्या मेहरजानक सहयोगसँ मुक्त होइत छथि। तदनतर शिवाजी एक साहसिक यात्राक सङोर करैत छथि आ नानाजी, येशाजी, नानासाहेब आ मावला सभक सहायतासँ सुल्तानगढ़ पर अधिकार कय लैत छथि। एहि विजयक संग कथा समाप्त भय जाइछ।

ई अवश्य कथाक एक नग्न ढाँचा थीक। एहि दूनू घटनाकेँ घटित होयबाक क्रममे अन्य अनेक एहन घटनासब अछि जे उपन्यासक विषयवस्तु तैआर करैत अछि, उपन्यासकेँ मांसल आ जीवन्त बनबैत अछि।

भूमिगत तहखानामे विचार-विमर्श कयल जाइत अछि, सुरंग बाटेँ यात्रा होइत छैक, गुप्तचर वेश बदलि सूचना संग्रह करबाक हेतु जाइत अछि, शिवाजी समाधि लगबैत छथि, समाधिमे भवानीक दर्शन होइत छनि आ हुनकासँ आशीर्वाद प्राप्त करैत छथि। तदतिरिक्त स्त्री सभक अपहरण होइत छैक, आ ओकरा सबकेँ संकटमे राखल जाइत छैक, ओकरा सबकेँ बचाओल जाइत छैक अथवा किछु अपने बँचिकय निकलि अबैत अछि आ अपन सम्मानकेँ दूषित नहि होअय दैत अछि। ओ सब तेजस्विनी आ परिज्ञान रखनिहारि अछि। ई सब चित्रण ओहि अवधिक स्थिति आ चेतनाक अनुरूप अछि आ समस्त घटना आ गतिविधिक वर्णन तेहन विलक्षणतासँ भेल छैक जे अतीत जीवनकेँ समक्ष आनि दैत छैक।

जाहि तरहेँ पुरान आ युवापीढ़ीक विरोध नीक जकाँ उपस्थापित भेल अछि तहिना व्यक्तिगत पात्र सभक पारस्परिक विरोध सेहो । उदाहरणार्थ शिवाजी एक जन्मजात नेता छथि । हुनकामे विश्वास, प्रेरित करबाक, संगठित करबाक आ ओहि पर अपन धाख रखबाक क्षमता छनि । हुनका अपना मित्र लोकनिपर, समर्थक सभक विश्वसनीयतापर अधिकार छनि, ओ साहसी छथि आ सुचिन्तित खतरा उठयबाक हेतु सन्नद्ध रहैत छथि। ओ व्यक्ति आ स्थितिक प्रसंग नीक निर्णायक आ शान्तचित्तक लोक छथि ।

उपन्यासमे किछु दोषो छैक जे हरिभाऊक ऐतिहासिक आ सामाजिक दूनू प्रकारक उपन्यासमे देखल जाय सकैछ । पाठकसँ व्यक्तिक नामकेँ नुका कय रखबामे हिनका बेस रुचि छनि । तहिना छोट छोट पात्र सभकेँ, सहायक परिस्थिति सभकेँ आ उपकथानक सभकेँ अनावश्यक महत्त्व देबाक प्रवृत्ति सेहो । साधारणतया कोनो घटनाक वर्णन आधा पर छोड़ि देल जाइत छैक आ ओहि सूत्रकेँ बीचमे अनेक अध्याय आबि गेलाक बाद पुनः पकड़ल जाइत छैक । ओ प्रायः विसरि जाइत छलथिन जे हम पाठककेँ बहुत काल धरि प्रतीक्षा करबाक हेतु छोड़ि देने छिऐक । ओ जहिना पुनरावृत्तिक हेतु तहिना अकछा देबाक योग्य विस्तार करबाक हेतु बाध्य छथि ।

परन्तु एहि त्रुटि सभक अछैतो उपन्यास प्रभावित आ सन्तुष्ट करैत अछि, कारण जे एहिमे जीवनक स्पन्दन छैक । पात्र सभ जीवित छनि आ काल्पनिक अथवा यथार्थ, जे किछु हो, अपन पद्धतिमे उपयुक्त बैसैत छनि आ ओहि अबधिक वातावरण, स्थिति आ भावनाक प्रसंग प्रामाणिक छनि ।

उषःकाल उपन्यासक पृष्ठभूमि विस्तारसँ उपस्थित कयल गेल अछि, कारण जे ई शिवाजीक जीवनमे घटित घटनासबपर आधारित अन्य उपन्यास सभक पूर्वपीठिका थीक । आब हमसब सूर्योदय (१९०५-१९०६) क चर्चा करब । एहि उपन्यासक कथावस्तु शिवाजीक हाथेँ अफजल खाँक मृत्युसँ सम्बद्ध अछि । उषःकालक अर्थ थिकैक प्रात आ सूर्योदयक अर्थ थिकैक सूर्यक उगब । शिवाजी आब संकट निर्माता नहि छथि जेना कि ओ मराठा कुलीनवर्गक पुरान पीढ़ी आ सुल्तान द्वारा बूझल जाइत छलाह । हुनक प्रभाव बढ़लनि अछि, अनेक आक्रमणक सफल नेतृत्व कयलनि अछि, हुनकर अनेक सहायक छनि, हुनका लग सेना आ साधन छनि आ एक क्षेत्र पर अपन आधिपत्य स्थापित कयने छथि । बीजापुरक सुल्तानक दृष्टिमे ओ गंभीर शत्रु छथिन । तेँ शिवाजीकेँ जीवित अथवा मृत पकड़बाक विशेष उद्देश्यसँ अफजलखाँकेँ पठाओल जाइत छैक । शिवाजी अफजलखाँक मनोभावनासँ सचेत छलाह आ अपनादिससँ स्थितिक सामना करबाक हेतु प्रस्तुत छलाह । दूनू गोटेकेँ भेट करयबाक व्यवस्था कयल

गेल आ प्रतापगढ़मे दूनू गोटेकेँ एक दिन दुपहरियामे भेट भेलनि । अफजलखाँ शिवाजी द्वारा मारल गेल ।

अफजल खाँ सोचने छल जे पहिने शिवाजीक मूड़ीकेँ अपन वामा काँखतर दाबि, हुनका पीठमे तरुआरि भोँकि दी, मुदा शिवाजीकेँ पहिने चेताय देल गेल छलनि, ओ एहन घटनाक हेतु अपन सुरक्षाक जोगाड़ कय लेने छलाह, ओ फुर्तिगर सेहो रहथि । ओ चुमकीसँ अपनाकेँ ओहिसँ विमुक्त कय, अपन छूरा अफजलखाँक पेटमे ततेक दूरधरि घसा देलथिन जे ओकर पीठधरि पहुँचि गेलैक आ तखन छप दय ओकर मूड़ी छोपि लेलनि ।

यद्यपि एहि घटनाक राजनीतिक महत्त्व बहुत बेसी छैक, मुदा अपनामे ई घटना बेस छोटसन अछि । तेँ प्रायः एहिमे आरो सामग्री जोड़बाक बुद्धिएँ हरिभाऊ मुख्य कथाक संग एक उपकथाक अन्वेषण कयलनि जे एकर समानान्तर चलय । चारि बरख पहिने १६५५ मे शिवाजीक एक समर्थक प्रताप गढ़क पड़ोसमे चन्द्ररावमोरे नामक एक मराठाक हत्या कय देने छलैक । ई एक राजनीतिक कारणसँ कयल गेल छलैक । एहि उपन्यासमे हरिभाऊ चन्द्ररावमोरेक एक काल्पनिक बेटी तारावाईकेँ उपस्थित कयलनि अछि जे अपना बापक मृत्युक बदला शिवाजीसँ लेबाक हेतु षड़यन्त्र रचैत अछि, मुदा एहि कथावस्तुक वर्णन ततेक जगह उपन्यासमे छेकने अछि जे मुख्य कथावस्तुकेँ एक तरहेँ गीड़ि गेल अछि । उपन्यासमे एहि बातक उदाहरण स्पष्ट देखल जाय सकैत अछि जे हरिभाऊ वर्णनक मुख्य धारामे कोन रूपेँ व्यवधान अनैत छथि आ श्रमसाध्य एक दीर्घ अन्तरालक बाद ओतय घुरिकय अबैत छथि ।

एहि दोष सबसँ मुक्त जे वस्तु अछि से थीक अफजल खाँक पृथक् चरित्र, शिवाजी द्वारा दर्शाओल कौशलपूर्ण मध्यस्थता, गोपीनाथपन्त आ जाहि दिन शिवाजी अफजलखाँसँ भेट करबाक हेतु जायवाला छलाह ओहिसँ पछिला दिनुक चिन्ताजनक राति आ हुनकर माता जीजा बाईक अनुभूतिक वर्णन ।

सूर्यग्रहण (१९०८-१९०९) क अर्थ थीक सूर्य ग्रहण (राहु द्वारा सूर्यकेँ ग्रस्त करब) एहि उपन्यासक कथावस्तु १६६६ मे शिवाजीक आगरा जायब, ओतय बन्दी होयब आ ओतयसँ छूटि कय पड़ायब आ महाराष्ट्र घूरि अयबासँ सम्बद्ध अछि । उपन्यास अपूर्ण अछि । १६६५ मे जयसिंह द्वारा लादल गेल पुरन्दरक सन्धि शिवाजीक हेतु अपमानजनक छलनि, मुदा दोसर विकल्प नहि रहलाक कारणेँ शिवाजीकेँ ओहि सन्धिसँ सहमत होमय पड़लनि । शिवाजी ओहि समयमे निश्चित रूपेँ परिश्रान्त रहल होयताह । एहि ठाम हरिभाऊकेँ सुअवसर छलनि जे ताहि समयमे शिवाजीक मस्तिष्कमे चलैत अन्तः संघर्षक वर्णन करितथि, मुदा ओ स्वयं ओकर उपयोग नहि कय सकलाह । एकरा बदलामे ओ तीन गोट घटनाक वर्णन करैत छथि, जाहिमे शिवाजी एक अपहृत

युवतीक रक्षा करैत देखाओल गेल छथि । एक बात कहबाक हेतु बाध्य करैत अछि जे हरिभाऊ शिवाजीक चरित्रक विशिष्ट पक्षकेँ स्पष्ट करयबाला नाटकीय स्थितिसँ परिपूर्ण कथावस्तुक उचित निर्वाह नहि कय सकलाह अछि ।

गडआला पणसिंह गेला (१९०३) एक लघु उपन्यास थीक आ १६७० मे सिंहगढ़ पर तानाजी द्वारा विजय प्राप्त करबासँ सम्बद्ध अछि । सिंहगढ़ यद्यपि शिवाजीक जागीरक अधिकार क्षेत्रमे छलनि, मुदा ई गढ़ अनेक बेर अनेक व्यक्तिक हाथमे गेल छल आ ताहि समय मुगलक अधिकारमे छलैक आ ओकर मुख्य अधिकारी एक राजपूत उदयभानु छल । जीजाबाई आ शिवाजी दूनू गोटे एहि बातसँ दुखी रहथि जे ओ किला एक शत्रुक अधिकार मे अछि । तेँ ओहि किला पर फेर अधिकार करबाक हेतु दृढ़ निश्चय कयने छलाह । ४ फरवरी १६७० क रातिमे तीनसय मावलाक संग रस्साक सहायतासँ कलाक ऊपर चढ़ि गेलाह आ सबकेँ ऊपर पहुँचि गेलाक पछाति रस्साकेँ काटि देल गेलैक । तीन घंटाधरि घनघोर युद्धक बाद, जाहिमे तानाजी आ उदयभानु दूनू गोटे मारल गेलाह, किला पुनः मराठा लोकनिक कब्जामे आबि गेलनि । जेहन कि अफजलखाँक प्रसंग छल, ओहो एक उपकथा मात्र थीक आ एक उपन्यासक हेतु पूर्ण सामग्री नहि जुटबैत अछि । एहि सामग्रीकेँ समृद्ध करबाक हेतु हरिभाऊ एहिमे काल्पनिक अंश जोड़ि देने छथिन । से एक युवती राजपूत विधवा कमलाकुमारीक कथा थीक, जे उदयभानु द्वारा अपहृत कय सिंहगढ़मे राखलि छलि ओ सतीप्रथाक रीतिक पालन करबा पर उद्यत छलि कि तानाजी ओतय पहुँचि गेलाह आ ओकरा बचाय लेलथिन ।

एहि कथाक आधारभूमि छोट सन छैक आ घटना सभक बाहुल्य नहि छैक । काल्पनिक आ वीरतापूर्ण तत्त्व नीक जकाँ सन्निविष्ट छैक । घटना सब विशिष्ट रूपेँ घटित होइत छैक आ मुख्य चरित्र सब; जेना शिवाजी आ तानाजीक, नीक जकाँ चित्रित भेल छनि । आरम्भेसँ कथा पाठकक ध्यानकेँ बन्हने आ रुचिकेँ जगौने रहैत अछि आ अन्त ओहि बिन्दु पर विभिन्न आ उच्चस्तर लेने होइत छैक जतयसँ आरम्भ भेल छैक । सबकेँ मिलाजुला कय हरिभाऊक सर्वोत्तम उपन्यास सबमे ई एक छनि आ मराठा इतिहास पर आधारित उपन्यास सबमे सँ उषःकालक बाद दोसर स्थान एकरा प्राप्त होइत छैक ।

जखन शिवाजीक चरित्रसँ सम्बद्ध एहि चारू उपन्यासक विवेचना एक संग कयल जाइछ तँ किछु वस्तु देखबामे अबैछ । शिवाजीक चित्रण अवश्य एक नायकक आ विदेशी प्रभुत्वसँ जनताकेँ मुक्त करौनिहारक रूप भेलनि अछि, मुदा ओ देवतुल्य नहि छथि । ओहि कालक चेतना आ वातावरणक पुनः सर्जन करबाक एक सफल प्रयत्न कयल गेल अछि आ उपलब्ध ऐतिहासिक साधनसँ मृत इतिहासमे फेरसँ जीवन देल गेल अछि । जतय पात्र आ स्थितिक कल्पना

कयल गेल अछि, ततहु ओ वस्तु समयक चेतनाक अनुरूप भेल अछि, खाहे शिवाजीक पक्षक हो अथवा विरोधक।

केवल स्वराज्यासाठी (१८९८-९९) उपन्यासक सम्बन्ध १६८९ मे मुगल द्वारा संभाजीकेँ पकड़ब आ निर्दयतापूर्वक फांसी चढ़यबासँ उत्पन्न भ्रान्तिसँ छैक। हुनकर स्त्री येसुबाई आ पुत्रकेँ मुगल द्वारा बन्दी बनाय लेल गेलनि। परिणाम ई भेलैक जे मराठा लोकनिमे अव्यवस्था पसरि गेलैक। ताहि समय शिवाजीक दोसर बालक राजाराम उनैस बरखक छलथिन। ओ निष्कपट लोक छलाह, मुदा योग्यताक अभाव छलनि। हुनका लोककेँ चिन्हबाक परिज्ञान नहि छलनि आ जे सब हुनका सहवासमे रहनि से सब अखरकट्टू। ओ रायगढ़ सँ पड़ाय मद्रासक निकट जिंजी चल गेलाह, मुदा जे सब ओतय बाँचल रहल ताहिमे किछु एहनो लोक छल, जे सब शिवाजीक राज्यकेँ बचयबाक आ सुरक्षित रखबाक हेतु वीरतापूर्ण प्रयत्न कयलक।

एहि उपन्यासमे आरो अधिक प्रामाणिक ऐतिहासिक घटना सब आ व्यक्ति विद्यमान अछि। सम्भाजीक गिरफ्तारी आ फाँसी, हुनकर स्त्री पुत्रकेँ बन्दी बनायब चुनौती पूर्ण घटना छल आ मराठा लोकनि ओहि चुनौतीकेँ स्वीकार कयलनि आ गौरवक संग दायित्वक निर्वाह कयलनि। बहुतो मराठा महिला लोकनि पर्दा उतारि राज्यक रक्षाक हेतु बाहर आबि गेलीह। ओहि ठाम बहुतो नाटकीय आ उत्तेजक स्थिति अछि जकर उपयोग लेखक विशेष उद्देश्यसँ कय सकैत छलाह, मुदा से नहि कयल जाय सकल।

उपन्यासमे तीन गोट स्थिति छैक—१—सम्भाजीक गिरफ्तारी आ निर्दय, मुदा वीरतापूर्ण मृत्यु, २—रायगढ़क घेराव आ ओकर पतन, ३—राजारामक जिंजी पलायन आ ओतयसँ मराठा राज्यक रक्षाक प्रयत्न। एहि घटना सभक फराक-फराक आ व्यक्तिगत रूपमे प्रतिपादन आ वर्णन कुशलता पूर्वक कयल गेल अछि। मुदा विभिन्न स्थलक सघटन उचित रूपेँ नहि भेल अछि तेँ समन्वित प्रभाव नहि उत्पन्न करैत अछि। ओ फराके फराक आ असम्बद्ध रहि जाइत अछि।

तथापि सम्भाजी आ राजारामक चरित्र-चित्रण सुन्दर ढंगेँ भेल अछि। सम्भाजीमे आत्म सम्मान आ तेजस्विता, मृत्युकेँ वरण करबाक ढंग आ राजारामक अशान्त मानस आ परिस्थितिक वर्णन रेखांकन जकाँ स्पष्ट भेल अछि। ई सब तथ्य उपन्यासक गुण पक्षमे कहल जाय सकैत अछि।

हरिभाऊक छठम उपन्यास मध्याह्न (१९०६-१९०७) मराठा इतिहासक अठारहम शताब्दक अन्तिम बीस बरखक अवधिमे घटित घटनाकेँ अपनामे समाहित कयने अछि। मध्याह्नक अर्थ होइत छैक दिनक मध्य भाग अर्थात्,

दुपहर, जखन सूर्य अपन ऊर्ध्व बिन्दु पर रहैत छथि। १७७३ मे पेशवा नारायण रावक हत्यासँ आरम्भ कय १७९५ मे खड़दायुद्धमे मराठाक संयुक्त शक्ति द्वारा निजाम पर भेल विजयसँ समाप्त भेनिहार इतिहासक संकट कालीन घटनाक सन्दर्भ ई उपन्यास अभिव्यक्त करैत अछि। उपन्यास अपूर्ण अछि, तेँ ई कहब कठिन अछि जे हरिभाऊकेँ एहि शीर्षकसँ मस्तिष्कमे की तात्पर्य छलनि। ईहो प्रश्न भय सकैत अछि जे ताहि समय पेशवा लोकनिक शक्ति आ प्रताप अपन शीर्ष बिन्दु पर छलनि अथवा १७९५ मे निजाम पर विजय प्राप्त कयला पर ओ अपन शीर्ष बिन्दु पर पहुँचलनि यदि हरिभाऊक एहि शीर्षकसँ ई तात्पर्य रहल होइनि तँ सेहो कहब कठिन अछि। उपन्यास एहि ठाम अपूर्ण स्थितिमे समाप्त भय जाइत अछि। हरिभाऊ एहि प्रसंग किछु नहि कहैत छथि आ उपन्यास एहिसँ आगाँ नहि बढ़ैत अछि। हम सब ईहो नहि कहि सकैत छी जे उपन्यासक अन्तिम अध्याय पूर्ण अछि अथवा अपूर्ण।

उपन्यास तीन भागमे बनल अछि ओ तीनू भाग एके निरन्तर प्रक्रियाक तीन क्रम थीक। बहुतो प्रामाणिक सामग्री उपलब्ध छल, मुदा से रहितो उपन्यास पाठकक मन पर कोनो दीर्घ प्रभाव नहि छोड़ि पबैत अछि। जेहन हरिभाऊक अभ्यास छनि जे सामान्य घटना आ चरित्रकेँ ओ वेसी महत्त्व दैत छथिन। यदि उपन्यासक पक्षमे किछु कहल जाय सकैछ तँ एतवे जे कथाक निर्वाह बड़ रोचक ढंगसँ भय सकल अछि।

१७६१ क पानीपतक युद्धमे पराजय सामान्यतः मराठा लोकनिक आ विशेषतः पेशवा लोकनिक शक्ति पर एक आपत्तिजनक चोट छलनि। १७६१ मे नानासाहेवक उत्तराधिकारी माधवराव प्रथम, एक दृढ़ इच्छाशक्तिक लोक रहथि आ ओ राज्यक प्रसंग बहुत किछु सुव्यवस्था करबामे सफल भेलाह। किन्तु १७७२ मे ओ यक्ष्मासँ मरि गेलाह। हुनकर छोट भाय नारायणराव जे पेशवाक रूप मे हुनकर उत्तराधिकार ग्रहण कयलथिन, से निर्दयता पूर्वक १७७३ मे मारि देल गेलथिन। हुनकर स्त्री गंगाबाई गर्भवती छलथिन, यदि ओहिमे पुत्र उत्पन्न होइतनि तँ पेशवाक गद्दीक उचित उत्तराधिकारी वैह होइत। नारायणरावक मृत्युक बाद हुनकर पित्ती रघुनाथराव पेशवा होयबाक हेतु कुचक्र रचय लगलाथिन। दरबारक राजनीतिक पुरुषलोकनि रघुनाथरावक योजनाकेँ विफल करबाक हेतु सहमत भय गेलाह। किन्तु शीघ्रे हुनका लोकनिमे मतभेद भय गेलनि। एही मध्य नारायणरावक स्त्री गंगाबाई एक पुत्रकेँ जन्म देलथिन आ ओ पेशवा घोषित कय देल गेल। वैह बालक माधवराव द्वितीय छल। वास्तविक शक्ति नाना फड़नवीसक हाथमे छलनि आ खड़दा युद्धमे विजय केँ हुनका जीवनक सर्वोच्च घटना कहल जाय सकैछ।

एहि तरहेँ मराठा इतिहास पर आधारित छओ उपन्यास सबमे केवल दुइ गोट उपन्यास उषःकाल आ गड़आलापण सिंह गेला वस्तुतः सफल कथा साहित्य थीक जे आइओ कालिह युवक-युवती आ बूढ़ो-पुरानलोक द्वारा रुचिपूर्वक पढ़ल जाइत अछि।

एतदतिरिक्त जे चारि गोट ऐतिहासिक उपन्यास, जे हरिभाऊ लिखलनि से सब, भारतीय इतिहासक विभिन्नकालीन घटनासब पर आधारित अछि। जेँ हेतु ओहि सबमे समरूपता नहि छैक तेँ ओहि सभक चर्चा जाहि क्रममे ओ सब लिखल गेल, ताही क्रममे कयल जायत। ओ उपन्यास सब थीक रूपनगरची राज कन्या (१९००-१९०२) चन्द्रगुप्त (१९०२-१९०४) कालकूट (अपूर्ण—१९०९-१९११) आ वज्राघात (१९१३-१९१५)।

रूपनगरची राजकन्या (१९००-१९०२) ई उपन्यास औरंगजेबक जीवनमे रूपनगरपर आक्रमणसँ सम्बद्ध एक उपकथापर आधारित अछि। हरिभाऊकेँ एकर आधार टाडक एनाल्स आफ राजस्थान पुस्तकसँ प्राप्त भेल छलनि। उपन्यासक एक नीक अंश औरंगजेबक जनान-खानामे होइत अनुचित प्रेम सम्बन्धक कूट प्रबन्धसँ लेल अछि। हरिभाऊकेँ ई सामग्री इटलीक यात्री मानुक्कीक विवरणसँ प्राप्त भेल छलनि, जे मुगलशासन कालमे भारत आयल छल। महत्त्व-पूर्ण व्यक्ति आ घटना ऐतिहासिक थीक, शेष काल्पनिक।

राजकन्या रूपनगरक राजा विजयसिंहक कन्या राजकुमारी रूपमती थीक। ओ दिव्य सुन्दरी अछि आ विवाह योग्य भय गेलि अछि, मुदा मायकेँ नहि रहलाक कारणेँ अपन अधिकतम समय अपना पिताक संग व्यतीत करैत अछि। पिता ओकरा दरबार लय जाइत छथिन आ साहसिक यात्रा शिकार धारमे संग रखैत छथिन। रूपनगरकेँ यद्यपि रक्तक सम्बन्ध जोधपुरसँ छैक, मुदा ओ उदयपुरक करद राज्य अछि। ओकर स्त्री सेहो उदयपुर पारिवारक छलैक। उदयपुरक शासक राजसिंह युवक, सुन्दर, वीर, तेजस्वी आ अन्य राजकुमार जकाँ सर्वगुण सम्पन्न पराक्रमी अछि। औरंगजेब अपन एक सेनापति सादात खाँ केँ रूपमती आ विजयसिंहकेँ पकड़ि कय दिल्ली अनबाक हेतु पठबैत छैक आ आदेश दैत छैक जे जँ ओ विरोध करय तँ रूपनगर किलाकेँ ध्वस्त कय देल जाय। एकर कारण, जेना हमरा लोकनि उपन्यासमे देखैत छी, ने राजनीतिक छलैक ने धार्मिक। औरंगजेब अपन दुलारू बेगम उदयपुरी बेगमकेँ सन्तुष्ट करय चाहैत छल। उदयपुरी बेगम रूपमती द्वारा लिखल एक पत्रमे उल्लिखित टिप्पणीसँ अपनाकेँ अपमानित अनुभव कयने छलि जे औरंगजेबक आदमी द्वारा ओकराभग आनल गेल छलैक। तेँ उत्तेजनाक कारण बड़ तुच्छ महत्त्वक छलैक।

उपन्यासक शीर्षकसँ एहन प्रतीत होयत जे ई मुख्यत: रूपमतीसँ सम्बद्ध होयत, मुदा ओ सम्पूर्ण उपन्यासमे मात्र तीनचारि ठाम अबैत अछि आ कोनो सक्रिय अथवा महत्त्वपूर्ण भूमिकाक निर्वाह सेहो नहि करैत अछि। उपन्यासक विशेष अंश बादशाहक जनानखाना आ ओहि उत्साही, किन्तु सहायक पात्र सभक प्रतिद्वन्द्विता आ षड़यन्त्रसँ सम्बद्ध अछि जे सब कठिनतामे फँसैत अछि, ओहिसँ वहराइते अदि आ अपन-अपन स्वभावक अनुसारेँ गुण-अवगुण प्रदर्शित करैत अछि।

रूपनगर एक सुदृढ़ दुर्ग छल आ सादातखाँ जनैत छल जे विजयसिंहक सहायताक हेतु राजपूतसब दौड़ि आओत। तेँ ओ अधिक सहायताक हेतु दिल्ली एक पत्र पठौलक। तखन औरगजेब एक विशाल सेना संगलय स्वयं दक्षिण दिस बिदा भेल। जखन ओ माउण्ट आबूक निकट पहुंचल तँ ओकर सेना एक संकीर्ण घाटीमे फँसि गेलैक आ चारूकातसँ आक्रमण होअय लगलैक जतय नीक जकाँ मारि खाइत गेल।

एही बीच सादातखाँ रूपनगर पर आक्रमण कय चुकल छल। रूपमती राजसिंहकेँ सहायताक हेतु एक पत्र पठौलकैक आ आश्वासन देलकैक जे यदि ओ रूपमतीकेँ बचयबामे आ दुर्गक रक्षा करबामे सफल भेल तँ ओ राजसिंहसँ विवाह कय लेत। राजसिंह तुरन्त रूपनगर चलि पड़ल, सादातखाकेँ परास्तकय रूपमती आ विजयसिंहकेँ बचाय लेलक। एहि तरहेँ औरंगजेबक दोमाड़ हारि भेलैक आ राजसिंहक शर्त पर ओकरा सन्धि करबाक हेतु बाध्य होअय पड़लैक।

एकरासग अन्तर्गुम्फित एक दोसर कथा छैक। जोधपुरक राजा जसवन्त सिंह काबुल पर चढ़ाइ करबाक हेतु औरंगजेब द्वारा पठाओल जाइत छथि। हुनकर पुत्र पृथ्वी सिंह राज-दरबारमे पहिनेसँ रहैत छनि। औरगजेब विषाक्त वस्त्र पाहिरबा कय ओकर हत्या कराय दैत छैक। जसवन्तसिंहकेँ जखन ई समाचार भेटैत छनि तँ शोकसँ मरिजाइत छथि। ओहि समय हुनकर स्त्री गर्भवती छलाथिन आ समय अयला पर ओ एक पुत्रकेँ जन्म देलाथिन जकर नाम अजीतसिंह राखल जाइत छैक। ई समाचार पाबि औरगजेब नयनपाल नामक एक गोटेकेँ दूनू मायपूतकेँ परतारि दिल्ली आनयलेल पठौलकैक (ओ नयनपाल जोधपुर राज्य परिवारक एक सदस्य छल, मुदा ओ मुगल दरबारमे चाकरी पकड़ि लेने छल) जसवन्तसिंहक दुइगोट विश्वासपात्र सेवक, दुर्गादास आ इन्दिराकेँ एहिमे खतराक गन्ध अनुभव भेलैक। ओ चन्द्रावती आ अजीत सिंहकेँ चुपचाप राजपुताना पठाय देबाक प्रबन्ध कयलक। नयनपाल ई समाचार जानि कय क्रुद्ध भय उठल आ दुर्गादासँ एवं इन्दिराकेँ बन्दी बनाय दिल्ली लय गेल। मुदा ओ ओहि दूनूक साहस, स्वामिभक्ति आ साधनपूर्णतासँ तथा इन्दिराक सौन्दर्यसँ ततेक प्रभावित भेल जे इन्दिरासँ प्रेम करय लागल।

दिल्ली पहुँचला उत्तर नयनपाल अपन उद्देश्यमे विफल रहलाक कारणें औरंगजेब द्वारा फज्झतिक तर कय देल गेल । दुर्गादास कारागारमे राखि देल गेल आ इन्दिराकें जनानखाना पठाय देल गेलैक । तकरबाद ई तीनू राजपूत सभक सहायता करबाक हेतु निकसि कय राजपुताना पड़ाय जयबाक योजना बनौलक ।

उपन्यासक एक पैघ अंश दिल्लीमे एहितीनूक कार्यकलाप आ गतिविधि आ अन्ततः राजपुताना पड़ाय जयबाक वर्णनसँ भरल अछि । ई नयनपाले छल जे औरंगजेब आ ओकर सेनाकें परतारि कय माउण्ट आबूक संकीर्ण घाटीमे फँसा देने छलैक । ई कार्यकलाप कथाक बहुत रोचक अंश थिकैक ।

यद्यपि रूपमती उपन्यासक नायिका थीक, मुदा हमरा लोकनि उदयपुरी बेगम आ इन्दिराक चरित्रसँ बेसी प्रभावित होइत छी । एकरालोकनिक चरित्रक प्रसंग आओरो कतोक तथ्य छैक, जे किछु हो, ओहि स्थल मे ततेक गति आ ओत्सुक्य छैक जे उपन्यासकें अधिक रुचिगर आ पठनीय बनाय दैत छैक ।

चन्द्रगुप्त (१९०२-१००४) शीर्षकें सँ स्पष्ट अछि जे ई उपन्यास चन्द्रगुप्त मौर्यक विषयमे होयत । परन्तु एकर शीर्षक चाणक्य बेसी समुचित होइतैक । उपन्यास मुख्य रूपसँ ओहि धूर्ततापूर्ण राजनीतिक युक्तिसँ सम्बद्ध अछि जाहि युक्तिसँ चाणक्य राजा नन्द सहित ओकरा बेटा सभक हत्या कराय चन्द्रगुप्तकें मगधक राजसिंहासन पर आसीन करबाक प्रयत्न करैत छथि । चन्द्रगुप्तक माता मुराक सम्बन्धमे सेहो ओतबेक अओन-पओनमे वर्णन भेल छैक ।

हरिभाऊ जाहि स्रोतसँ ई सामग्री उपलब्ध करैत छथि तकर उल्लेख ओ स्वयं उपन्यासक संक्षिप्त भूमिकामे कयने छथि । ओ स्रोत सब थिकनि— १—ओ पुराण सब जाहिमे नन्दवंशीय शासक लोकनि आ चन्द्रगुप्तक उल्लेख छनि । २—भारतमे आयल ग्रीक यात्री लोकनिक विवरण, जाहि मे पाटलिपुत्र नगर (आधुनिक पटना) आ मगधराज्यक स्थितिक वर्णन छैक । ३—संस्कृत नाटक मुद्राराक्षस । ऐतिहासिक प्रमाणक आधार पर ई कहब सम्भव नहि अछि जे चन्द्रगुप्त पाटलिपुत्रक सिंहासन पर बैसबासँ पहिने अथवा पछाति ग्रीक लोकनिसँ युद्ध कयलनि आ ओकरासबकें परास्त कयने रहथि । किन्तु हरिभाऊ चन्द्रगुप्तक सिंहासनासीन भेलाक बाद एहि घटनाक वर्णन कयलनि अछि, कारण जे ई उपन्यासक योजनाक सर्वथा सटीक बैसैत अछि ।

चाणक्यक असल नाम विष्णुगुप्त छलनि आ ओ पंजाब तक्षशिलामे रहैत छलाह, जकरा ग्रीक सब लतखुर्दनिकय राखि देने छल । ओ सब ओतयसँ मालजाल हाँकिकय आ बहुधा स्त्रीगणक अपहरण कय लय जाइत छल आ जनताकें उच्छन्नर करैत रहैत छल । विष्णु गुप्त एक पैघ विद्वान ब्राह्मण रहथि आ सैन्यकलामे पूर्ण दक्ष । ओ बहुत संवेदनशील, अहंकारी आ संगहि चतुर

लोक छलाह । मगध साम्राज्य बहुत शक्तिशाली छल, तेँ विष्णुगुप्त पाटलिपुत्र जाय नन्दवंशीय राजा घनानन्दकेँ एहिबातक हेतु प्रोत्साहित करबाक निश्चय कयलनि जे ओ ग्रीक पर आक्रमण करथि आ भारतसँ ओकरा खेहारि मारथि ।

घनानन्द हिनक नीक जकाँ स्वागत सत्कार कयलथिन, मुदा दरबारक ब्राह्मण लोकनि ईर्ष्यालु रहथि आ ओ लोकनि परामर्श देलथिन जे ई ग्रीक सभक भेदिया ने होअय आ भेद ने लेबय आयल हो । एहिसँ विष्णुगुप्त ततेक क्रुद्ध भेलाह जे ओतयसँ उठलाह आ प्रतिज्ञा कयलनि जे जाधरि नन्दवंशक नाश नहि करब, अपन इच्छानुसार कोनो व्यक्तिकेँ सिंहासन पर नहि बैसायलेब आ ओकर सहायतासँ ग्रीक सबकेँ भारतसँ निकाल बाहर नहि कय लेब ताधरि दम नहि मारब । आ तुरन्त ओतयसँ बाहर चल गेलाह ।

किन्तु ओ तक्षशिला नहि घुरलाह । ओ उत्तर दिशामे हिमालय दिस चल गेलाह । बाटमे हुनका एक बालक सभक झुण्ड खेलाइत देखबामे अयलनि । ओहिम एकटा बालक देखबामे आ व्यवहारमे तेहन असाधारण छल जे विष्णुगुप्त तुरन्त सोचि लेलनि जे जाहि तरहक नेना सभक संग ई खेलाइत अछि ताहिसँ सर्वथा भिन्न अछि । जिज्ञासा कयला उतर ज्ञात भेलनि जे ई एक गोपालकक सग रहैत अछि, जे एकरा पन्द्रह वरख पाहुने निर्जनवनमे पौने छलैक । एक उज्जर कपड़ामे नाङट लेपटाओल छल । गट्टा पर एकटा फीता मात्र छोड़ि देह पर किछु नहि छलैक । वैह शिशु ई बालक थीक । गोपालक ओ फीता विष्णुगुप्तकेँ देखय देलकनि । विष्णुगुप्तकेँ ओहि फीतापर नन्दवंशक आधिकार चिह्न देखि पड़लनि । अतिशय प्रसन्न भेलाह । जेँ ओ बालक चन्द्रमा किरणमे (इजोड़िया रातिमे) भेटल छलैक, तेँ ओकर नाम चन्द्रगुप्त पड़लैक । विष्णुगुप्त ओहि बालककेँ अपना संग लय जयबाक आ जीवनक नीक प्रशिक्षण देबाक अनुमति चाहलनि ।

विष्णुगुप्त ओहि बालकेँ लय हिमालयक उपत्यकामे चल गेलाह आ ओतय वन्य जातीय बालक सभक एक दलक सग ओकरा युद्धकला सिखबय लगलथिन । विष्णुगुप्त तखन अपन नाम बदलि चाणक्य राखि लेलनि । चन्द्रगुप्त शीघ्रतासँ ज्ञान अर्जित कय लैत छल आ किछुए बरखमे समस्त युद्धकलामे निष्णात भय गेल । चाणक्य निश्चय कयलनि जे चन्द्रगुप्तकेँ पाटलिपुत्र लय जयबाक उपयुक्त समय अछि । किन्तु से करबासँ पहिने स्वयं पाटलिपुत्र जाय क्षेत्रक स्थितिक निरीक्षण कय लेबय चाहलनि ।

पाटलिपुत्र ओहि समय एक पैघ आनन्दोद्गारमे छल, कारण जे घनानन्दक जेठ बालक सुमाल्यकेँ उत्सव मनाय विधिवत् युवराज घोषित कयल गेल छलैक आ तुरन्त-तुरन्त जीतल गेल एक युद्धमे प्राप्त राजकुमारीसँ ओकर विवाह भेल छलैक । ओहि आनन्दोत्सवक अवसरमे राजा बहुतो बन्दीकेँ मुक्त कयने छलैक

आ ताहि मे रानी मुरा सेहो मुक्त कयल गेलि छलि, जकरा सोड़ह बरख पहिने कारागारमे बन्द कयल गेल छलैक ।

मुरा एक किरातराजक कन्या छलि । धनानन्दक एक सेनापति भागुरायण एक युद्धक क्रममे ओकरा पकड़ने छलैक आ ओकरे द्वारा उपहार स्वरूप राजाक समक्ष उपस्थित कयल गेलि छलि । राजा ओकरासँ गान्धर्वविधिएँ विवाह कय लेलक आ शीघ्रे ओ युवती एक बालककेँ जन्म देलक । धनानन्दक अन्य रानीकेँ कोनो पुत्र नहि छलैक । ओ सब सोचलक जे जँ मुराकेँ बेटा भेलैक तँ वैह युवराज होयत आ से ई सब नहि चाहैत छलि । तेँ ओ सब जन-प्रवाद पसारि देलकैक जे मुरा राजकुमारी नहि थीक, प्रत्युत किरातराजक शूद्र-दासीक बेटी थीक आ ईहो बेटा ओकर धनानन्दसँ उत्पन्न नहि भय सकैत छैक । राजा दुर्बलबुद्धिक लोक रहय, तेँ ओहि जनप्रवाद पर विश्वास कय मुराकेँ कारागार मे बन्द कराय देलकैक आ आदेश दय देलकैक जे बेटा होइक अथवा बेटी, मुदा ओकरा मरबा देल जाय । किन्तु जकरा सब पर ई भार देल गेल छलैक ओकरा सबकेँ ओहि नेना पर दया आबि गेलैक आ ओ सब ओकरा जंगलमे छोड़िकय चल अयलैक । सैह बालक चन्द्रगुप्त छल ।

चाणक्य जखन पाटलिपुत्र अयलाह आ हुनका मुराक इतिहास ज्ञात भेलनि तँ हुनका सन्देह नहि रहि गेलनि जे जाहि चन्द्रगुप्तकेँ ओ शिक्षित आ प्रशिक्षित कयलनि अछि से मुराक बेटा थिकैक । मुरा यद्यपि कारामुक्त कयल गेलि छलि, मुदा ओ प्रसन्न नहि रहय, प्रत्युत ओ आरो विषण्ण छलि आ राजा द्वारा कयल गेल अपनाप्रति दुर्व्यवहारक प्रतिशोध लेबय चाहैत छलि जे ओ अपन विश्वस्त दासीकेँ कहि देने छलैक ।

जे किछु हो, परम चतुर होयबाक कारणे बेस चातुरीसँ ओ अपन काज करैत रहलि । ओ अपना महलमे आमन्त्रित करैत राजाकेँ एक पत्र लिखलकनि । अपन मधुर बोली आ तीस बरख वयसक होइतो अपन शारीरिक रूपलावण्यक सहायतासँ राजाकेँ मोहि लेलक । राजा अपन पछिला कयल कुकृत्यसँ बहुत पश्चात्ताप कयलक आ ओकर वचन एवं मनमोहक व्यवहारसँ ततेक प्रभावित भेल जे ओ मुराक संग रहबाक आ ओकर महल नहि छोड़बाक घोषणा कय देलक । एहिसँ आन-आन रानी क्षुब्ध भय उठलि, मुदा मुरा राजासँ सम्बद्ध रहलि आ अन्य रानी सभक विरुद्ध राजाक मोनकेँ विषाक्त करबामे सफल भेलि ।

जखन चाणक्य पाटलिपुत्र पहुँचलाह तँ समाचारक पता लगबय लगलाह । हुनका ज्ञात भेलनि जे राजासँ प्रतिशोध लेबाक हेतु मुरा योजना बनाय रहलि अछि । ओ ईहो देखलनि जे बाहर-बाहर सब ठीक-ठाक रहितो तरे-तर असंतोषक लहरि चलि रहल छैक । प्रजा अथवा मन्त्रिपरिषदक सदस्य सब राजासँ सन्तुष्ट

नहि छलैक। केवल मुख्यमन्त्री राजा आ राजपरिवारक विश्वासपात्र छलैक आ सेनापति सेहो ओकरे समान।

चाणक्यकेँ बुझयलनि जे हुनक योजनाकेँ सफल होयबाक अनुकूल परिस्थिति विद्यमान छनि। तेँ ओ चन्द्रगुप्तकेँ लय अनबाक निर्णय लेलनि। ओ मुरासँ भेट करबाक जोगाड़ सेहो धरौलनि। ओ मुराकेँ कहलथिन जे ओकर माय मायादेवी आ भाय प्रद्युम्नदेव अपन शुभेच्छा पठौलथिन अछि। आ अपन सोड़ह बरखक पुत्रकेँ किछु दिनक हेतु पाटलिपुत्र पठयबाक इच्छा व्यक्त कयलथिन अछि जाहिसँ ओ किछु दिन ओतय बितावय आ एहि विशाल संसारक विषयमे किछु ज्ञान प्राप्त कय सकय। मुरा चन्द्रगुप्तकेँ अनबाक हेतु सहमत भय गेलि आ चन्द्रगुप्तकेँ लय आनल गेलैक।

चाणक्य हिमालयस्थित अपन आश्रम घुरिकय अयलाह आ चन्द्रगुप्तकेँ संग आनि, पाटलिपुत्रमे मुराकेँ सोपि देलथिन।

चन्द्रगुप्तकेँ महलमे छोड़ि चाणक्य अपन योजनाकेँ कार्यान्वित करबाक दिशामे व्यस्त भय गेलाह। उपन्यास हुनक एहि समस्त कूटनीतिक प्रपंचक प्रसंगकेँ लय रचल अछि। ओ भागुरायणक विश्वास सेहो प्राप्त कय लेलनि। ओ राक्षसक विश्वसनीय सेवक हिरण्यगुप्त आ मुराक विश्वस्त दासी सुमतिकाक विश्वास सेहो अर्जित कयलनि। ओ मुरासँ यदा कदा भेट करैत आ राजाकेँ समाप्त करबाक योजनाक प्रसंग ओकरा प्रोत्साहित करैत रहलथिन।

एही अवधिमे कोनो दिन मुराकेँ ओ राजकीय अधिकार चिह्नयुक्त ओ फीता देखय देलथिन आ प्रमाणित कय देलथिन जे चन्द्रगुप्त ओकर भातिज नहि, प्रत्युत ओकर बेटा थिकैक जकरा ओ मुइल बुझैत छलि। मुरा स्वभावतः प्रसन्न भेलि।

धनानन्द राजकाजक ततेक उपेक्षा करय लागल जे राक्षस ओकरासँ बहुत अप्रसन्न भय गेल छल। मुरा धनानन्दकेँ दरबार जयबाक हेतु बहुत दबाब दैक, मुदा ओ जायब अस्वीकार कय देल करैक। अन्ततः ओ किछु घंटाक हेतु जयबासँ सहमत भेल। दिन निर्धारित भेलैक। ओ एक महत्त्वपूर्ण अवसर छलैक। चाणक्य राजाकेँ समाप्त करबाक हेतु ओही दिनकेँ निश्चित कयने छलाह। ओ महलक प्रवेश द्वार पर एक एहन पैघ खाधि खुनयबाक प्रबन्ध कयने रहथि जे ऊपरसँ एकदम समतल बुझना जाइक, मुदा भीतरमे खाधि रहैक। जाहिसँ राजाक हाथी जखने ओहिठाम पैर रखैक कि बेटा सभक सहित राजा ओहि खाधिमे खसि पड़थि आ चाणक्यक लोक द्वारा सब ओतहि मारल जाय।

यद्यपि मुरा सेहो राजाक हत्याक योजना बनबैत छलि, मुदा ओकरा अन्तर्द्वन्द्व छलैक जे एहन करब उचित होयत वा नहि। ओ उद्विग्न आ दुविधामे छलि। अन्ततः जहिया राजाकेँ दरबार जयबाक ओ दिन अयलैक तँ ओ राजाकेँ नहि जयबाक हेतु विनम्र याचना कयलैकक, कारण जे ओ जनैत छलि जे गेला

उत्तर राजा मृत्युक गर्त्तमे खसि पड़ताह । किन्तु तखन राजा जयबाक हेतु दृढ़ रहथि । मुराक अन्तर्द्वन्द्व तीव्र भय गेलैक । के रहय ? पति अथवा पुत्र ? ओ पतिएकेँ बचयबाक निर्णय लेलक आ एक पालकी अनबाक आज्ञा देलकैक, राजाकेँ सचेत बनेबाक आ बचयबाक उद्देश्यसँ विदा भय गेलि, मुदा बहुत विलम्ब भय चुकल छलैक । राजा पुत्रसभक संगहि ओहि खाधिमे खसि पड़लाह आ पहिने सँ चाणक्यद्वारा नियुक्त भील सब द्वारा मारल गेलाह । मुरा चाणक्य द्वारा सचेत कइओ देल गेलि छलि, मुदा ओहो ओहिमे कूदलि आ मारल गेलि ।

चन्द्रगुप्त राजाक रूपमे राज्याभिषिक्त कयल गेल आ चाणक्य अनेक तरहेँ राक्षसकेँ राजाक रूपमे चन्द्रगुप्तकेँ स्वीकार करैत ओकर सेवामे रहबाक हेतु सहमत करबाक चेष्टा कयलनि । किन्तु राक्षस नन्दक अतिरिक्त ककरो सेवा करब अस्वीकार कय देलकनि । वस्तुतः चन्द्रगुप्त नन्दवंशक सन्तान थिकैक से प्रमाणित करबाक हेतु चाणक्य पहुँचीपर बान्हल ओ फीता राक्षसकेँ देखय देलथिन, तखन ओ मुख्य मन्त्रीक रूपमे सेवा करब मानि गेलनि । एहि तरहेँ चाणक्य अपन संकल्पित लक्ष्यकेँ प्राप्त कय लेलनि ।

हरिभाऊ एहि छोटसन ऐतिहासिक सामग्रीक आधार पर ई रोचक उपन्यास लिखने छथि । ओ पात्र आ विषयवस्तुक अनुरूप भाषाक प्रयोग कयलनि अछि । उपन्यास चाणक्यक कूटनीतिसँ भरल-पूरल अछि । मुदा जाहि सुविधा आ गतिसँ ओ प्रत्येक व्यक्तिकेँ अपना पक्षमे कय लैत छथि आ इच्छानुकूल सबकाज कराय लैत छथि से विशेष विश्वसनीय अछि । मुराक चरित्र उपन्यासक सर्वोत्तम अंश अछि । ओकरा चरित्रक जटिलता, ओकर, धूर्तता आ चतुरता, राजाकेँ वशमे करबाक प्रयत्न आ अन्ततः ओकरा मस्तिष्कमे नैतिक संघर्षक वर्णन बहुतनीक जकाँ कयल गेल अछि । राक्षसक चरित्रक वर्णन एक स्वामि-भक्त मन्त्रीक रूपमे ओहने भेल अछि । एक तरहेँ चाणक्य यद्यपि अपन कपट पूर्ण चालिमे सफल होइत छथि तथापि अन्तमे हुनका ई बुझबाक योग्य भय जाइत छनि जे धूर्तता सदिखन, विशेष रूपेँ अपन कर्त्तव्यनिष्ठापर दृढ़ आ इमानदार लोक लग, सफल नहि भय पबैत छैक । यद्यपि उपन्यासक शीर्षक चन्द्रगुप्तक नामपर छैक, मुदा ओ एक कठपुतरी नायक मात्र अछि । ने ओ किछु करैत अछि ने वर्णनयोग्य ओकर चरित्रे छैक ।

जे किछु हो हरिभाऊक ई उपन्यास नीक जकाँ प्रतिपादित छनि ।

कालकूट (१९०९-१९११) अपूर्ण उपन्यास अछि । एकर पहिल खण्ड आ दोसर खण्डक प्रथम अध्याय मात्र लिखल गेल । एहिमे पृथ्वीराज चौहान आ जयचन्द राठौरक प्रारम्भिक जीवनक किछु घटनाक वर्णन अछि । किन्तु अपूर्ण रहलाक कारणेँ हम सब ई नहि कहि सकैत छी जे ई कोन रूपेँ विकसित होइत आ कोन-कोन घटना एहिमे समाहित कयल जाइत ।

हस्तिनापुर-दिल्लीक राजा अनंगपालकेँ विमला आ कमला नामक दुइटा कन्या छलैक। विमलाक विवाह कन्नौजक शासक विजयपालक संग आ कमलाक विवाह अजमेरक शासक सोमेश्वरक संग भेल छलैक। विमलाक बेटा जयचन्द आ कमलाक बेटा पृथ्वीराज रहैक। कमलाक छोट भाय धनंजय नामक रहैक जकर हेवनिमे मृत्यु भय गेल रहैक। कमला आ विमला शोकक जिज्ञासा मे दिल्ली आइलि छलि, ओहीठामसँ ई उपन्यास आरम्भ होइत अछि। दूनू बहिनमे विमला ईर्ष्यालु, संकीर्ण विचारक आ झगड़ाहु रहैक। दोसर दिस कमला स्नेहशीला, उदार आ सोझरायल विचारक रहैक।

एक दिन दूनू बहिनी एक ठाम बैसलि छलि, ओ दूनू मसियौत पृथ्वीराज आ जयचन्द झगड़ा करय लागल एहि बातकेँ लय जे नानाक कोन जाँघपर के बैसत। यद्यपि अनंगपाल दूनू नातिकेँ दुलार करैत छलथिन तैओ पृथ्वीराजकेँ कनेक बेसी मानैत रहथिन। ई कोनो विशेष बात नहि रहैक तथापि विमला कमलासँ झगड़ा करय लगलैक। कमला आ दोसर-दोसर ओकरा जतेक शान्त करय चाहलकैक ओ ततेक उग्र होइत गेलि आ उलहन उपराग देबय लगलैक। वृद्ध अनंगपाल ततेक दुखी भय गेलाह जे ओ विमलाकेँ कन्नौज आपस चल जाय कहलथिन आ ओ चल गेलि। कमला सेहो पृथ्वीराजकेँ दिल्लीएमे छोड़ि अजमेर घुरि आइल, कारण जे अनंगपाल पृथ्वीराजकेँ युवक क्षत्रिय राजकुमार बनयबाक हेतु अपेक्षित प्रशिक्षण देवय चाहैत छलथिन।

विमला बहिनिक विरुद्ध मोनमे डाहकेँ पोसने रहलि आ एक दिन जयचन्द-केँ संगलय हिमालय क्षेत्रमे अपन कापालिक गुरुक ओतय कोनो यन्त्र अथवा आध्यात्मिक शक्ति प्राप्त करय गेलि, जाहिसँ ओ अपन बेटा जयचन्दकेँ दिल्लीक सिंहासन देआय सकय। ओ कतेको दिन धरि एहिलेल प्रतीक्षा कयलक, मुदा किछु प्राप्त नहि भेलैक, ओ अधीर होअय लागलि। किछु दिनुकबाद ओ कठिन परिस्थितिमे पड़ि गेल तखन ओकरा अन्वेषणमे बहरायल अनंगपाल आ विजयपाल ओकरा ओहि संकटसँ मुक्त कयलथिन। तखन ओ लोकनि अपना अपना स्थान घुरि अबैत गेलाह। एतय आबि पहिल खण्ड समाप्त भय जाइत अछि।

दोसर खण्डक प्रथम अध्यायसँ ज्ञात होइत अछि जे विमला ओहि घटित घटनासँ अपनाकेँ पराजित आ अपमानित अनुभव कयलक आ तहियासँ ने ककरोसँ भेट करैत छलि आ ने बजैत-भुकैत छलि।

किछु मासक बाद अनंगपाल विमला आ ओकर परिवारकेँ पृथ्वीराजक राज्याभिषेक समारोहमे सम्मिलित होयबाक हेतु नोँत-हँकार पठौलथिन। ओकर पति अपन दूनू बालकक संग समारोहमे जाय चाहैत छलथिन। ओ विमलासँ पुछबो ने कयलथिन जे ओ की करय चाहैत अछि। विमला अपनहु एहि छओ-

पाँचमे छील जे जाइ कि नहि जाइ। अन्तमे नहिएँ जयवाक निश्चय कयलक आ जयचन्दकेँ सेहो नहि जयवाक समाद देलकैक आ अपना लग वजा पठौलकैक। मुदा ओ कहा पठौलकैक जे ओ ओहि समारोहमे सम्मिलित होयवाक हेतु दिल्ली जाय चाहैत अछि। विमला एकरा अपन हारि मानलक आ अनुभव कयलक जे कन्नौज मे आव ओकरा अधिक दिन रहव उचित नहि छैक। आब ओकरा क्यो नहि चाहैत छैक, जयचन्द पर्यन्त नहि। तेँ ओ फेर हिमालय दिस चल जयवाक निर्णय कयलक।

ई अध्याय एतहि समाप्त भय जाइत अछि आ लेखक हमरालोकनिकेँ प्रतीक्षा करय आ आगाँकी होइत छैक से देखय कहैत छथि। किन्तु आगाँ कोनो अध्याय नहि अछि। कालकूटक अर्थ होइत छैक घातक विष। एहि शब्दक प्रयोग विमलाक विषसँ भरल मस्तिष्कक चित्रण करवाक हेतु कयल गेल अछि। यदि ई उपन्यास पूर्ण कयल जाइत तँ हम सव प्रायः जयचन्द आ मुहम्मद गोरीक सम्मिलित षड्यन्त्रक आ पृथ्वीराजक पराजयक प्रसंग जानि सकैत छलहुँ। किन्तु ई केवल अनुमान थीक।

एहि उपन्यासमे, जेहन ई अछि, विमला आ कमलाक चारित्रिक वैषम्यकेँ नीक जकाँ निखारल गेलैक अछि। कापालिक आश्रम, मुख्यकापालिकक चेला सभक पारस्परिक ईर्ष्या आ द्वन्द्व आ ओकरा लोकनिक अमानवीय कुकृत्य सभक वर्णन सेहो नीक वनि सकल अछि।

वज्राघात (१९१३-१५) हरिभाऊक अन्तिम ऐतिहासिक उपन्यास थिकनि आ हिनक उपन्यासमे ई सर्वोत्तम छनि। उपन्यासक उपशीर्षक थिकैक-विजय नगरक अन्तिम दिन। उपन्यासक ऐतिहासिक सामग्री सेवेलक पुस्तक ए फारगाटेन एम्पायर आ फैरिश्तसँ लेल गेल छैक। हरिभाऊ ब्रिग्गक फेरिश्तसँ एक टिप्पणीक उल्लेख करैत कहैत छथि जे सीजर फ्रेडेरिकक अनुसार रामराजक सेनामे दुइ गोट मुसलमान सेनापतिक विश्वासघातक कारणेँ युद्धमे हिन्दू लोकनिक पराजय भेलनि। एक परिस्थितिक विवरण फेरिश्तामे उल्लखित नहि अछि सीजरफ्रेडेरक इटालियन यात्री जे तालिकोटा युद्धक दुइ वरखक बाद १५६७ मे विजयनगर आयल छल। ओहियुद्धमे रामराज हारल रहथि। एहि ऐतिहासिक सामग्रीमे किछु वरख पहिने एक दक्षिणभारतीय लेखक हिन्दुस्तान रिव्यूमे लिखने रहथि, सेहो उपाख्यान जोड़ि देल गेल अछि। ओ उपाख्यान एहि रूपेँ अछि-युवाकालमे रामराज एक मुसलमान युवतीक प्रेममे फँसि गेलाह, ओकरा हिनकासँ एकटा बेटो भेलैक। ओ बेटाक संग कतहु निपत्ता भय गेलि आ कतोक वरखक बाद, जखन ओकर बेटा चेतन भय गेलैक तँ ओ रामराजक दरबारमे आयल आ कोनो नोकरी देबय कहलकैक। राजा अपन बेटाकेँ चीन्हि गेल आ अंगरक्षक रूपमे नियुक्त कय लेलकैक। बादमे एक दिन रामराज

दरबारमे बैसल छल, ओकर किछु आदमी एक मुसलमान युवतीकेँ पकड़ि कय अनलकैक। रामराज ओकर बुर्का (घोघ) हटाय देबाक आदेश देलकैक आ ओ हटाय देल गेलैक। ओ युवक एकरा अधलाह बुझलक आ राजासँ आपत्ति कयलकनि। राजा ई सोचि जे ई युवती कन्या ओकरा बेटाक हेतु नीक स्त्री भय सकैत छैक, तेँ ओ कन्या ओहि युवककेँ सुंझा देलकैक। ओ युवक अनेक तरहेँ ओकरा विवाहक हेतु मनौलक, मुदा ओ उत्तर देलकैक जे जाधरि ओहि हिन्दूक राज्य, जे ओकरा अपमानित कयलकै अछि, विनष्ट नहि भय जाइत छैक ताधरि विवाह नहि करति आ जे व्यक्ति नष्ट करत तकरेसँ ओ विवाह करति। ओ युवक, ओ जे चाहैत छलि, तकरा पूरा करबाक प्रतिज्ञा कयलक आ ताहिकाजमे भिड़ि गेल।

उपन्यास वास्तवमे ओही उपाख्यानक विकसित रूप थीक।

रामराज एक ऐतिहासिक व्यक्ति थीक आ तालिकोटाक युद्ध सेहो ऐतिहासिक तथ्य थीक, जाहिमे विजयनगरक सेना पराजित भेल छलैक आ रामराजक मूड़ी काटि लेल गेल छलैक। ई ऐतिहासिक तथ्य आ ओ उपरि वर्णित उपाख्यान उपन्यासक रूपरेखाक निर्माण करैत अछि जकरा हरिभाऊ रक्तमांस दय, पात्र आ स्थितिकेँ निखारि, ओहिमे जीवन देलथिन अछि।

जाहि नारीसँ रामराजकेँ प्रेम भय गेल छलनि तकर नाम मेहरजान रहैक। ओहि दूनूसँ उत्पन्न बेटाक नाम रणमस्त छलैक। नूरजहाँ ओहि युवतीकन्याक नाम रहैक जे ओहि हिन्दू राज्यक विनाश चाहैत छलि। चारिम पात्र धनमल्ल अछि जे देखबामे कारी-लोआठ, पचहत्था जवान आ भयाओन लगैत अछि, जे मेहरजानक चारुकात चक्कर कटैत रहैत अछि आ ओकरा जीह छैक, मुदा तकर उपयोग नहि करैत अछि। एहि उपन्यासमे एक नाममात्रक राजनीति, कल्पनाश्रय आ त्रासदी अछि। हरिभाऊक एहिसँ पछिलो ऐतिहासिक उपन्यास सबमे गति पर बेसी जोर छनि, यद्यपि ईहो सत्य जे किछु चरित्र एहि कसौटीसँ बहिर्भूत अछि। ओहिसबमे विदेशी शासनक विरुद्ध विरोध आ प्रतिरोध सेहो अछि। ई तत्त्व चन्द्रगुप्तमे सेहो देखल जाय सकैछ, जतय राक्षस कोनो विदेशी सैन्यक संग सहयोग करब अस्वीकार कय दैत अछि। वज्राघातमें विजयनगर आ बहमनी सुल्तानक संयुक्त सेनाक बीचक युद्धकेँ हिन्दू आ मुसलमानक युद्ध रूपमे वर्णन कयल गेल अछि, मुदा एकर प्रयोग मुसलमानक प्रभुत्वक विरोधक प्रतीक रूपमे नहि भेल अछि। त्रासदीक परिमाणकेँ ऊपर उठयबाक हेतुएँ हिन्दू आ मुसलमानमे त्रासदी देखाओल गेल अछि आ कथाकेँ चरमोत्कर्ष प्रदान करबाक हेतु एकर प्रयोग भेल अछि। एहि उपन्यासमे मुख्य चिन्तनाधार विभिन्न व्यक्तिक सम्बन्धमे विरोध आ तनाव तथा व्यक्तिगत पात्रक मस्तिष्कमे अन्तःसमम्बन्धकेँ लय कय अछि।

पैंतीस बरख वयसक रामराज मेहरजानकें एक यात्रीक दलसँ लय अनने छलथिन आ विजयनगरसँ कनेके दूरपर स्थित एक उद्यानगृहमे ओकरा रखने छलथिन । ओकर एकमात्र विश्वासपात्र दासी मरजीना संग छैक । रामराज आ मेहरजान एक दोसरसँ अतिशय प्रेम करैत छैक आ दूनू गोटे अपन प्रेममे पूर्ण प्रसन्न अछि । ई उद्यान चारू भागसँ आवृत आ सुरक्षित अछि । ओहिमे एक सुन्दर पोखरि छैक जाहिमे एकटा नाओ छैक आ चारूकात कुंज छैक । ई एक आदर्श स्थान अछि । उपन्यास एहि उद्यानमे इजोड़ियाराति क दृश्यसँ आरम्भ होइत अछि । रामराज आ मेहरजान प्रसन्नचित्त अछि । मेहरजान राग-रागिणीसँ सम्बद्ध तालबद्ध गीत गावि रहल अछि, रामराज जयदेव रचित किछु छन्द गाबि ओकर उत्तर दैत छैक । मेहरजान विशेष रूपेँ एहि हेतु प्रसन्न छलि जे ओकर दूनूक सहवासक फल प्राप्त होयबाक समय निकट छलैक । किन्तु चिन्ताक एक अन्तर्धारा सेहो छलैक । प्रायः ई सुखक दिन अधिक समयक हेतु नहि अछि । ओ दूनू गोटे ओहि पोखरिमे नौका-विहार कय रहल अछि, अकस्मात् मेहरजान कहैत छैक, की यदि दूनूगोटे एहि पोखरिमे डूबि जाइ तँ प्रेमक सर्वोत्तम सुखद संसिद्धि नहि होयत ? रामराज ओकरा हँसयबाक चेष्टा करैत एहन अशुभ विचारकेँ दूर कात करबाक हेतु कहैत आश्वस्त करैत छैक । किन्तु प्राते भेने रामराज ओकरा छोड़ि कोनो राजाक बेटीसँ विवाह करय चल जाइत अछि, कारणजे ताहिसँ ओकरा राजकीय विषयमे राजनीतिक शक्ति प्राप्त भय सकैत छलैक । शीघ्रे ओ राज्यक प्रतिनिधि आ वास्तविक शासक बनि गेल । प्रेम आ राजनीतिक शक्तिमेसँ ओ राजनीतिक शक्तिएक वरण करैत अछि । मेहरजानक हेतु ई विश्वासघात बहुत कष्टकर छलैक । तेँ ओ एहि उद्यानगृह केँ त्यागि उत्तर भारत चल गेलि । कतेको बरख धरि ओकर सूरि-पता नहि रहैत छैक । किन्तु रामराजसँ प्रतिशोध लेबाक हेतु ओ दृढ़ अछि । समय पूर भेला उत्तर ओ एक बालककेँ जन्म दैत अछि जे रामराजसँ उत्पन्न छलैक आ जकर नाम रणमस्त खाँ राखल गेलैक ।

कतोक बरखक बाद, जखन ओ बेटा समर्थ भय गेलैक तँ ओकरा संग ओ बीजापुर आबि गेलि आ अपन प्रभावक उपयोगसँ अपना बेटाक परिचय सुल्तानक दरबारमे कराय देलकैक । एहि अवधिमे ओ रामराजक प्रति अपना हृदयमे घृणाभावकेँ पोसैत रहलि आ द्वेष रखने रहलि, कारण जे रामराज केवल ओकर प्रेमेटाकेँ नहि थकुचने छलैक, अपितु ओकर आत्मसम्मानकेँ सेहो चोट पहुँचौने रहैक । शीघ्रे रणमस्त खाँ विजयनगर दरबारमे बीजापुरक सुल्तानक राजदूत नियुक्त कयल गेल । ओहि समय ओ पैंतीस बरख वयसक छल । ओकर वैह वयस छलैक जाहि वयसमे रामराजकेँ मेहरजानसँ भेंट भेल रहैक ।

मेहरजान रणमस्तखाँके ई धारणा बना देने छलैक जे रामराज मुसलमानसँ घृणा कयनिहार आ स्त्रीक सतीत्व हरण कयनिहार अछि; मुदा ई कनेको संकेत नहि देने छलैक जे ओ ओकर पिता थिकैक।

एमहर रामराज मेहरजानकेँ चल जयबाक कारणेँ बहुत दुखी छल। उद्यानगृहसँ ओकरा छोड़ि कय अयबाक समय ओकर ई भावना नहि रहैक जे ओकरा सब दिनुक हेतु छोड़ि रहल छिऐक। ओकरा प्रति ओकर कोनो छद्म प्रेम नहि रहैक। ओ केवल किछुए दिनुक लेल ओकरासँ फराक रहय चाहैत छल। ओ अधिककाल ओकरा स्मरण करैत छलैक, ओहि उद्यानगृहमे गेल करैत छल आ ओहि स्थानपर टहलैत छल जतय अतिशय आनन्दक कतोक क्षण ओकरा संग बितौने छल।

जाहि समय रणमस्त खाँ बीजापुरक सुल्तानक प्रतिनिधि भय विजयनगर आयल छल ताहि समय मेहरजान आ मरजीना सेहो संग रहैक। ओकरा लोकनिकेँ ओही उद्यानगृहमे डेरा देल गेलैक जे रामराज आ मेहरजानक प्रेमक साक्षी रहैक।

रणमस्तखाँ रामराजक दरबारमे अपनाकेँ उपस्थित कयलक तँ ओकरा देखैत देरी रामराजकेँ बुझबामे आवि गेलैक जे ई ओकरे बेटा होयतैक। तखनसँ ओ एक राजनीतिक प्रतिनिधि थीक से बिसरि ओकरा संग स्नेहपूर्ण व्यवहार कयलकैक, मुदा रणमस्तखाँ ई बूझि नहि सकल आ तेँ ओकरा ई व्यवहार नीको नहि लगलैक। कारण जे ओकरा हृदयमे रामराजक प्रति बीजापुरक सुल्तानक बैरी आ व्यक्तिगत दूनू दृष्टिएँ तिरस्कार आ घृणाक अतिरिक्त अन्य कोनो दोसर भाव नहि छलैक। ओहिदू नू चरित्रमे अन्तर्विरोधी अनुभूति आ व्यापक विरोधक वर्णन हरिभाऊ बड़कुशलतासँ कयने छथि।

एक अवसरपर जखन रामराज दर्शक दीर्घमे बैसल रहथि, बुर्कामे झाँपलि एक मुसलमानिनी हुनका सोझाँ आनलि गेलनि आ हुनका कहल गेलनि जे एकरा सन्देहजनक स्थितिमे पकड़ल गेलैक अछि। रामराज ओकर बुर्का हटाय देबाक आदेश देलथिन। एहि पर रणमस्तखाँ क्रोधेँ धधकि उठल आ घोर आपत्ति कयलक। से होइतो बुर्का हटाय देल गेलैक। ओतय सभक समक्ष ओ परम सुन्दरी मुसलमान युवती ठाढ़ि छलि। ओ क्रोधेँ कापि रहलि छलि। एक मुसलमान युवतीक हेतु सभक सोझाँ एहि रूपेँ उघाड़ि देबासँ पैघ कोनो अपमान भइए ने सकैत छलैक। रामराज ओहि दूनू रणमस्तखाँ आ नवयुवती नूरजहाँक भावनाक प्रशंसा कयलथिन आ विवाहक हेतु ओहि युवतीकेँ रणमस्तखाँक हाथमे स मर्पि कय ओही उद्यानगृहमे रखबाक आदेश देलथिन जतय रणमस्त खाँ आ ओकरा मायकेँ राखल गेल छलैक।

रणमस्तखाँ सेहो नूरजहाँक उच्चभावना आ सुन्दरतापर चकित छल आ यद्यपि रामराजक प्रति घृणा छलैक तँओ नूरजहाँक प्रति ओकर प्रेमासक्ति कम नहि छलैक। किन्तु ओकर आत्मा तेहन लोहसन कठोर भय गेल छलैक जे कहलकैक जे जाबत ओहि हिन्दू राज्यक विनाश नहि भय जयतैक, जतय ओकर अपमान भेलैक अछि, तावत पर्यन्त ओ विवाह नहि कय सकैत अछि आ ओ ओकरेसँ विवाह करति जे ओहिराज्यक विनाश करत।

रणमस्तखाँ ओकरासँ विवाह करबाक हेतु ततेक इच्छुक रहय जे ई काज करबाक भार अपना पर उठाय लेलक। एनेक दिनधरि रणमस्तखाँकेँ सम्पूर्ण ध्यान आ मोह अपना मायपर छलैक। किन्तु नूरजहाँक अयलाकबाद ओ क्रमशः नूरजहाँ दिस घुरि गेलैक। मेहरजान एहि परिवर्तनकेँ बहुत सूक्ष्मतासँ अनुभव कयलक। हरिभाऊ ओकर एहि अप्रसन्नताक चित्रण, जे ओ अनुभव करैत छलि, बहुत रोचकतापूर्वक निखारलनि अछि।

तकरबादमेँ रणमस्तखाँक समस्त प्रयास ओहि कर्त्तव्यकेँ सम्पादित करबा मे समर्पित भय गेलैक। ओ बीजापुरक सुल्तानक सेवाकेँ नापसिन्न करबाक लाथ कयलक, आ रामराजक सेवामे रहबाक इच्छा व्यक्त कयलक, जाहिसँ ओ सदा रामराजक निकट रहि सकय। रामराज एहिसँ नीक आओर किछु ने चाहैत छल। बस, ओ एकरा अपन अंगरक्षक नियुक्त कय लेलकैक आ एकरापर सम्पूर्ण विश्वास अर्पित कय देलकैक। ओकरा रहि बातक प्रसन्नता छलैक जे आब ओकर बेटा सतत ओकरा संग रहतैक।

रणमस्त जाहि सुअवसरक प्रतीक्षामे छल से तखन अयलैक जखन चारू बहमनी सुल्तान संयुक्त सैन्य संगठित कय विजयनगर पर अन्तिम धक्का मारबाक निर्णय लेलक। ओहि समय धरि ओहि चारू सुल्तानमे विभेद उत्पन्न कराय विजयनगर लाभ उठाय रहल छल ओ सब एक दोसराक विरुद्ध छल, जाहिसँ ओकरालोकनिक अपन-अपन अधिकृत क्षेत्र उपद्रवग्रस्त रहैत छलैक। चारू सुल्तानक संयुक्त सेना आ विजयनगरक सेनाक मध्य तालिकोटामे युद्ध भेलैक। रणमस्तखाँ युद्ध क्षेत्रमे अंगरक्षकक रूपमे रामराजक समीप छल। ओ शत्रु सेनाक पंक्ति-रचनाक प्रसंग राजाकेँ भ्रान्तिमे राखि देलकैक आ ओकरा एहि बातक लेल मनाय लेलक जे राजाक अपन लोक सबकेँ ओकरासँ दूर हटाय देल जाइक। जखन शत्रु आक्रमण कयलकैक तँ राजाक समीपवर्तीलोक मारि खाय लागल आ ओकरा छोड़ि सब पड़ाय गेल। रणमस्तखाँ सुअवसर बूझि राजाक मूड़ी काटि लेलक आ लेने उद्यानगृह पहुँचि गेल। ई कथाक चरमोत्कर्ष थीक। रणमस्तखाँ अपन लक्ष्य प्राप्त कय लेलक। ऐतिहासिक तथ्यक अनुसार अहमदनगरक हुसैन निजाम शाह रामराजक मूड़ी काटि बर्छीक नोक पर टाङि देलकैक जे सब देखि सकय। किन्तु हरिभाऊ उपन्यासकेँ काव्यमय बनयबाक

उद्देश्यें एहिमे परिवर्तन कय देलथिन अछि।

रणमस्तखाँ परम आनन्द आ गर्वक संग मुण्डकें एक थारमे राखि अपन माय मेहरजानकें देखयवाक हेतु लय अनलक। ओ वस्तुतः सोचलक जे एहि हेतु ओ पुरस्कृत होयत, किन्तु मुण्डकें देखैत देरी ओ चीत्कारि उठल-बेटा रे बेटा! तों अपना बापकें मारि देलें! रामराजक हेतु ओकरा हृदयमे एखनहु अगाध प्रेम छलैक। ओ प्रतिशोध चाहैत छलि, मुदा प्रेमीक मृत्यु नहि। ओ गम्भीर अनुभूतिसँ ओहि मूड़ीकें अपना हाथें उठौलक आ लेनहि पोखरिमे कूदि पड़लि। एहि तरहें कतेको बरख पहिने अपना प्रेमीक संग पोखरिमे डूबि जयवाक जे भावना व्यक्त कयने छलि से पूर्ण भय गेलैक। धनमल्ल, जे कतेको दिन पहिने निपत्ता भय गेल छल, कतयदनसँ ओही काल आबि, अकस्मात् ओकरा पाछाँ पोखरिमे कूदि गेल। नूरजहाँकें ई जानि आघात लगलैक जे ओकर प्रेमी हिन्दूक विजन्मा सन्तति थिकैक, आ पितृघाती अछि, ओकरासँ ओ कोना विवाह करति, ओहो पोखरि दिस दौड़लि। रणमस्तखांकें ई तेसर धक्का लगलैक, ओहो ओकरा पाछाँ दौड़ल, दूनू कूदल आ पोखरिमे डूबि मुइल। एहि तरहें कथा जतयसँ आरम्भ भेल छल ततहि समाप्त भेल, अर्थात् उद्यानगृह आ ओहि ठामक पोखरि।

एहि कथामे किछु विस्तार आओरो होयबाक चाहैत छल, बिनु से कयने एकर त्रासद-कल्पनाश्रित चरित्र नहि बूझल जाय सकैत।

सब दृष्टिएँ एहि कथाक आत्मा काम आ प्रेम अछि, जेना कि पुरुष आ नारी मे, पिता आ पुत्रमे तथा माता आ पुत्रमे। एकर ऊर्मि मे जे चारू व्यक्ति फँसल से सब एकर तलधरि चल जाइत अछि। मेहरजानक प्रति आन्तरिक प्रेम कय निहार, ओ जतय जतय जाय, ओकर पछोड़ धयनिहार, महाबौक, कारी खटखट, भयाओन आकृतिक लोक धनमल्ल सेहो एही प्रेमक जालरन्ध्र मे फँसल आ ओहीमे नष्ट भय गेल। हरिभाऊ वस्तुतः ओकर चित्रण पोखरिक भीतर सेमारमे फँसल रूपमे कयने छथि। ओ कामक कुटिल आ पशुवत् आकृतिक प्रतीक प्रतीत होइछ जे सतत पछोड़ धयने, निर्वाक आ उत्तरदायित्व-हीन अछि। ओ पोखरि सेहो अपना भीतर ओझराबय वाला सेमारकें नुकौने कामक प्रतीक मानल जाय सकैत अछि जे पुरुष आ नारी दूनूकें अपना दिस घीचैत अछि आ ओकरा नष्ट करवाक हेतु अपना जालमे समटि लैत अछि।

ई उपन्यास चारि व्यक्तिक उपयुक्त भाव-संवेगक तानी-भरनीसँ बूनल कथा थीक, जाहिमे एकटा पाँचम सेहो जोड़ल अछि। हरिभाऊ परम कुशलता सँ एकरा बुनलनि अछि। किछु त्रुटि जे हिनक अन्य उपन्यासमे पाओल जाइत छनि से एहूमे विद्यमान अछि। परन्तु अपन सम्पूर्ण प्रभावमे एहि उपन्यासकें हुनक सब उपन्यासमे एक उत्तम आ ऐतिहासिक उपन्यासमे सर्वोत्तम गनल

जयतनि । ई हुनक अन्तिम पूर्ण उपन्यास थिकनि आ एहिमे हुनक आन्तरिक सर्जक कलाकारक रूप सम्पूर्ण रूपमे निखरि उठलनि अछि । एहिमे एक मात्र ऐतिहासिक व्यक्ति अछि रामराज आ एक मात्र ऐतिहासिक घटना तालिकोटाक युद्ध, आ कथा एक क्षीण तागक समान अछि । एहि वस्तुकेँ लय हरिभाऊ मानवीय दौर्बल्य, शक्ति आ भावात्मक संवेग सभक सुसंघटित ढाँचा बनाय, उत्कृष्ट कथाक सृष्टि कयलनि अछि । हरिभाऊ सामान्यतः कवि नहि छथि, मुदा ई उपन्यास काव्यमयताक गुणसँ ओतप्रोत अछि ।

हरिभाऊक ऐतिहासिक उपन्यास सब पर दृष्टि निक्षेप कयला उत्तर स्पष्ट देखि पड़ैत अछि जे काल्पनिक आ आविष्कृत चरित्र आ स्थिति सभक प्रयोगमे ओ पूर्ण दक्ष छथि आ पूर्ण स्वतन्त्रतापूर्वक ओकर प्रयोग करैत छथि । यैह कारण थीक जे प्रायः सामान्य रूपसँ हुनका द्वारा आविष्कृत पात्र आ परिस्थिति पाठकक मस्तिष्क पर गभीर प्रभाव छाड़ैत अछि । ईहो अवश्य स्वीकार कयल जायत जे कखनहु-कखनहु एकर स्वरूप विकृत भय जाइत छनि, किन्तु सौभाग्य-वश वज्राघात आ शिवाजीसँ सम्बद्ध हुनक उपन्यास मे बहुत सीमा धरि पाठककेँ से अनुभव नहि होइत छनि । हरिभाऊ ऐतिहासक सन्दर्भमे जे किछु स्वतन्त्रता रखलनि अछि से कलात्मक दृष्टिएँ उचिते छनि ।

हरिभाऊक तुलना सर वाल्टर स्काटसँ करब प्रायः उचित नहि होयत । परन्तु जँ हुनु ई मराठी भाषामे ऐतिहासिक उपन्यासक प्रथम महान लेखक थिकाह आ अपन परवर्ती लेखक लोकनिकेँ पर्याप्त प्रभावित कयने छथि, तेँ ई देखब बसी महत्त्वक होयत जे हुनका स्वयं एहि प्रसग की कहबाक छनि । वज्राघातक आमुखमे ओ कहैत छथि—यथार्थक भ्रमे समकालीन सामाजिक उपन्यासक सारभाग थीक । ऐतिहासिक उपन्यासक सार ऐतिहासिक यथार्थ आ भ्रम अथवा इतिहास आ उपाख्यानक मिश्रण थीक । ई विषय कथाकारक कुशलता पर निर्भर रहैत अछि जे एहि दूनू अवयवक कोन अनुपात एक दोसराक हेतु सगत आ सहायक सिद्ध होयत, आकृतिक सौन्दर्यात्मक मूल्यमे वृद्धि करत । एकरा स्वीकार नहि कयल जाय सकैछ जे हरिभाऊ अपन सर्वोत्तम रचनामे यथासम्भव लाभ उठयबाक हेतु ऐतिहासिक तथ्य आ उपाख्यान अथवा आविष्कृत सामग्रीक उपयोग कयलनि अछि । ओ उपकथाक रूपमे इतिहास नहि लिखि रहल छथि । ओ कथा-साहित्य आ एहि तरहेँ ओहि समयक वातावरण आ भावनाक पुनः रचनाक हेतु ऐतिहासिक सामग्रीक उपयोग कयलनि अछि । आशय ई जे बल इतिहास पर नहि, प्रत्युत कथा पर देल गेल अछि । एहि अर्थमे हुनकर उपन्यास सब ऐतिहासिक उपन्यास थिकनि, ऐतिहासिक दस्तावेज नहि, प्रत्युत ऐतिहासिक कल्पनाश्रय थिकनि, आ एहीमे ओकर सौन्दर्यात्मक मूल्य छैक ।

५

अन्यान्य रचना आ निष्कर्ष

अपन चौंतीस बरखक सक्रिय जीवनमे हरिभाऊ एकैस उपन्यास आ एक लघु उपन्यास लिखबाक अतिरिक्त आनो आन विधा सबमे सेहो पर्याप्त लिखलनि आ कतेको अवसर पर भाषण सेहो देलनि । एहि सब रचना आ प्रकाशित भाषण सबकेँ मिलाकय सहज रूपेँ दू हजार पृष्ठ भय सकैत अछि ।

ओ आगरकरक हैमलेटक मराठी अनुवादक जे आलोचना लिखने रहथि; तकर उल्लेख पहिने कयल जाय चुकल अछि । एहि आलोचनाक संग ओ हैमलेटक दोसर अनुवादक समीक्षाकेँ सेहो जोड़ि देलनि जे हुनक वरिष्ठ मित्र आ निर्देशक गोविन्दराव काणित्कर कयने छलथिन । ओ काणित्कर द्वारा कयल गेल अनुवादमे सेहो किछु त्रुटिक दिस संकेत कयलनि अछि, मुदा आगरकरक अनुवादक प्रसंगमे हुनक आलोचना यथार्थ भाव आ उपयुक्त भाषा दूनू सन्दर्भमे अत्यन्त कटु छनि । अपन आलोचनाक अन्तमे, जे लोकनि अनुवाद करय चाहैत छथि हुनका सभक हेतु, किछु नियमक निर्देश सेहो देने छथिन । ओ निर्देश बेस गम्भीर छनि । दोसर आलोचना ओ रोमिओ एण्ड जुलिएटक अनुवादक लिखने छथि । ई हैमलेटक आलोचनासँ सेहो बढ़ि चढ़ि कय छनि । ई हरिभाऊ द्वारा कयल गेल शेक्सपियरक नाटक सभक गहन अध्ययनक परिचायको छनि । ई विशेषरूपेँ ध्यातव्य थीक जे कतोक स्थलपर ओ डाक्टर सैमुअल जानसन आ ओलिवर गोल्डस्मिथ सदृश महान लेखक लोकनिक विचारसँ सेहो असहमति व्यक्त कयने छथि । ई देखि, जे जखन मात्र उनैस बरखक हरिभाऊ रहथि तखने ई आलोचना लिखने रहथि तँ, क्यौ हिनक निर्भीकता आ दृढ़ आत्मविश्वासक प्रशंसा कय सकैत अछि ।

१९१२ ई० मे ओ शेक्सपियर पर तीन शीर्षकसँ लिखब आरम्भ कयलनि, ओ छल १–शेक्सपियर आ हुनक रचना २–शेक्सपियरक काव्यकृति ३–शेक्सपियरक आत्म-कथात्मक कविता । ओ प्रत्येक शीर्षकक अभ्यन्तर दू-दू गोट लेख लिखलनि, मुदा दुर्भाग्यवश ओ अपूर्ण रहि गेलनि । यदि ई लेख सब पूर्ण भेल रहैत तँ हमरा लोकनिकेँ मराठीमे शेक्सपियरक प्रसंग ओहि व्यक्तिक विस्तृत अध्ययन प्राप्त होइत जे जीवन भरि शेक्सपियरकेँ पढ़ने रहथि । एहिसँ

मराठीक साहित्य-समीमामे एक नवीन प्रवत्तिक आरम्भ होइत जे कि आइओ मराठीमे कोनो महत्त्वपूर्ण अङरेजी लेखकक प्रसंग पूर्ण आ व्यापक अध्ययन उपलब्ध नहि अछि। किन्तु हरिभाऊ एक संग अनेक काज आरम्भ कय लेने छलाह आ ताहीं कारणें कतेको उपन्यास जकाँ ई लेख सेहो अपूर्ण रहि गेलनि।

जाहि दशकमे हरिभाऊ उपन्यास लिखब आरम्भ कयलनि, ओहिमे ओ छओ गोट नाटकक अनुवाद सेहो कयलनि। ताहिमे मौलियरक तीन गोट नाटकक था ला मैरिज फोर्स (१८८७) ले तार्तुफ्फ (१८८८-८९) आ ले मेडिसिन मालग्रे लुई (१८९०) क सोझे फ्रेंच भाषासं अनुवाद कयलनि, जे फ्रेंच ओ ओहि समय सीखि रहल छलाह। ओ अनुवाद सब बाढ़िआ भय सकल छनि आ ताहिमसं अन्तिम तँ बहुत लोकाप्रिय भेलनि। ओ कांग्रेवक मार्निंग ब्राइडक सेहो अनुवाद कयलनि संगहि विक्टर ह्यूगोक हेर्नानी आ शेक्सपियरक मेजर फार मेजर सेहो। हुनकर मूल फ्रेंचसँ सोझे अनुवाद करब विशेष महत्त्वक अछि, कारण ज हुनकासं पहिने मूल फ्रेंचसँ क्यो गोटे अनुवाद नहि कयने छल। ओहि समय धरि मराठीमे उच्चकोटिक हास्य साहित्य नहि छलैक, मौलियरक नाटकक अनुवादसं हास्यक नीक उदाहरण समक्ष अयलैक। परन्तु दुर्भाग्यवश हुनक अन्य अनुवाद नहि भय सकल। अन्य तीन नाटकक अनुवादमे नाटकक मूल भावना नहि आबि सकल अछि आ ने उपन्यास जकाँ प्रवाहपूर्ण भाषा अछि। हरिभाऊ शेक्सपियरक गम्भीर अध्येता रहथि। तेँ ई एक आश्चयजनक बात अछि ज ओ हुनक महत्त्वपूर्ण नाटकक अनुवाद करबाक बदलामे मेजरक अनुवादकेँ प्रश्रय दलान, इहो एक अद्‌भुत बात अछि जे रोमिओ एण्ड जुलिएट आ हमलटक अनुवाद पर जे आलोचना कयने रहथिन से हेनको अनुवादपर घटित होइत छनि।

एहि अनुवाद सभक अतिरिक्त ओ दुइ गोट सन्त सखुबाई आ सती पिंगला नामक मौलिक नाटक सेहो लिखलनि। दूनू नाटक सुपरिचित कथावस्तु पर आधारित छनि आ ओहिमसं एक सन्त सखुबाई अभिनयमंच पर पूर्ण सफल भेलनि। जे किछु हो, सबकेँ मिला कय इ कहल जाय सकैत अछि जे नाटक लिखब हुनकर ध्येय नहि रहनि। हुनक प्रतिभा एकर उपयुक्तो नहि छलनि।

हुनक अन्य स्फुट रचनासब स्फुट गोष्ठी शीर्षकसँ चारि खण्डमे प्रकाशित भेल छनि, एहि शीर्षकसँ एहन प्रतीत होइत अछि जे एहि सब खण्डमे केवल कथा संकलित छनि। एहि सब खण्डमे केवल बीसगोट कथा छनि। अन्यान्य रचनामे विभिन्न विषय पर आठ गोट लेख छनि, बारह गोट जीवनी (ओहिमे किछु अनुवाद) आ एकैस गोट चिट्ठी।

सब मिलाकय तीससँ अधिक कथा हरिभाऊ लिखलनि। ओहिमे चारि गोट दीर्घ कथा छनि। ओहिमेसँ एकटामे महाराष्ट्रमे पड़ल दुर्भिक्षक व न

छनि जकर रामजी शीर्षक अङरेजी अनुवाद फिशर एण्ड अनविन द्वारा भेल छनि आ इङलैण्डसँ प्रकाशित छनि। ई इङलैण्डमे खूब पढ़ल गेलनि, पछाति सरकार द्वारा एकर विक्रय पर प्रतिबन्ध एहि कारणें लगाय देल गेलैक जे एकरा पढ़लासँ अङरेजी जननिहारक बीच भारतमे बृटिश शासनक विरुद्ध प्रभाव पड़ितैक। ओहिमे कमसँ कम आध दर्जन कथा एहन अछि जकर तुलना, बादमे शैली दृष्टिएँ विशिष्ट कथा विधाक रूपमे जे जानल जाल लागय, ताहिसँ कयल जय-बाक योग्य अछि। ई सिद्ध करैत अछि जे हरिभाऊ आधुनिक मराठी उपन्यास मात्रक संस्थापक नहि छलाह, अपितु आधुनिक कथाक सेहो जनक रहथि। एहसँ पहिन एहे रूपमे कोनो रचना समक्ष नाह आयल छल। ई हरिभाऊ छलाह जे ई लक्ष्य कयलनि जे कतिपय कथावस्तुकें संक्षिप्ते रूपमे उचित निर्वाह कयल जाय सकैछ। ओ ई नहि बुझैत छलाह जे ओ एक नवीन शैलीक जन्म दय रहल छथि, मुदा प्रभावक दृष्टिएँ से कयलनि।

अपन लखन-जीवनक दोसर दशकमे, जखन पणलक्ष्यान्तकोण धेतो? आ मी लिखल जाय रहल छल, हरिभाऊ पत्र-साहित्यक दू खण्ड प्रकाशित कयलनि-एक सगुन-बीचेन, मुलीस पत्रेण शीर्षक, जाहिमे माय द्वारा पुत्रीक नामें सम्बोधित आ दोसर गोविन्द बीचेन, मुलास पत्रेण नामसँ जाहिमे पिता द्वारा पुत्रकें सम्बोधित पत्र सब अछि। हरिभाऊक गणपतराव आ पणलक्ष्यान्तकोण धेतो? उपन्यासमे अपन स्वामीसँ शिक्षा प्राप्त करबाक प्रयासक जे नवयुवती लोकनिकें बूढ़-पुराणन स्त्रीगण द्वारा विरोध सहन करय पड़ैत छलनि तकर वर्णन कयल गेल अछि। माय द्वारा लिखल गेल पत्रमे बुढ़ियासभक, विशेषतः सासुक संग सम्बन्धमे नवयुवती लोकनिक अधीरताकें शान्त करबाक भाव प्रदर्शित अछि। सगुनबाई अपना बेटीकें प्रभावित करैत अछि जे सब सासु दुष्टे स्व-भावक नाह होइत छैक आ परिवारमे बूढ़ स्त्रीगणक बिनु विरोध कयनहु नवयुवताकें शिक्षा प्राप्त करब सम्भव भय सकैत छैक। गोविन्द रावक पत्रमे नवका पीढ़ीकें परामर्श देल गेल छैक जे पुरान पीढ़ीक अनुभवसँ लाभ उठयबाक चाहा, ओकरासं अकच्छ नहि होयबाक चाही।

ई पत्र सब सिद्ध करैत अछि जे यद्यपि हरिभाऊ एक उत्साही समाज-सुधारक छलाह, तथापि स्वभावसँ उदार रहथि। हुनक उपन्यासमे हमरा लोकनि देखलहु अछि जे सामाजिक समस्याक अतिरिक्त ओ राजनीतिक, आर्थिक, औद्योगिक आ अन्यान्य विषय सभक प्रति सेहो सचेत छलाह। व्यापकतम अर्थमे ओ मुख्यरूपसँ एक शिक्षक आ समाजसुधारक रहथि।

हरिभाऊ एक दर्जनसँ अधिक सुप्रसिद्ध पुरुष एवं महिला लोकनिक संक्षिप्त जीवन-वृत्त सेहो लिखलनि, ताहिमे किछु अङरेजीसँ अनुवाद छनि। ओ विभिन्न विषयपर सूचनात्मक आ उत्तेजनात्मक लेख सेहो लिखलनि।

एक उपन्यासकार आ सामाजिक कार्यकर्त्ताक रूपमे ख्याति बढ़ला उत्तर अनेक महत्त्वपूर्ण अवसरपर भाषण करबाक हेतु आमन्त्रित कयल गेलनि । ताहिमे स्वभावतः अधिकांश साहित्यसँ संबद्ध विषय रहैत छलनि जाहिसँ स्पष्ट होइत अछि जे हृदयसँ सबसँ निकट ई साहित्ये विषयमे छलाह । ताहिमेसँ दुइ गोट भाषण-'दी फिलासफीआफ फिक्शन' आ 'रियलिज्म इन फिक्शन' पूनामे फ्रेण्ड्स लिबरल एसोसियेशनक बैसकमे अङरेजीमे कयने रहथि । ई दूनू भाषण उपलब्ध नहि अछि । तेसर भाषण मराठीमे उपन्यास विषयपर, बम्बैमे शरत् कालीन भाषणमालाक अन्तर्गत कयने रहथि, सेहो अनुपलब्धे अछि । एहि भाषणमे ओ उपन्यासकेँ चारि श्रेणीमे विभाजित कयने रहथि –आदर्शवादी, काल्पनाश्रित, संवेदनावादी आ यथार्थवादी । एही श्रेणी सभक उल्लेख ओ आनोठाम कयने छथि ।

मराठीमे कयल गेल अन्य तीन भाषण पर विस्तारसँ विचार करब अपेक्षित अछि । १९०३ मे ओ थाना मराठी ग्रन्थ संग्रहालयक वार्षिकोत्सवक दिन अध्यक्षीय भाषण कयलनि । विषय छल मराठी साहित्यक अध्ययन । एहि भाषण क्रममे पहिने वाक् (भाषण अथवा शब्द) क अर्थपर विचार कयलनि, तदुत्तर लार्ड मोर्ले आ संत वीवोक साहित्यक परिभाषा पर विचार कयलनि, मराठी साहित्यक सर्वेक्षण कयलनि आ अन्तमे समाजक सांस्कृतिक जीवनमे, पुस्तकालयक महत्त्वपर प्रकाश देलनि ।

अद्यपर्यन्त हुनक सबसँ अधिक ओ बहुचर्चित जे भाषण छनि से थिकनि १९११ मे मुम्बई मराठी ग्रन्थ संग्रहालयक वार्षिकोत्सवक अवसर पर बम्बैमे कयल गेल अध्यक्षीय भाषण । ओहि भाषणक शीर्षक थिकैक विदग्धवाङ्मय आ हरिभाऊ ओहिमे साहित्यक सन्दर्भमे विदग्ध शब्दक अर्थ पर विचार कयने छथि । डिक्वेन्सीक अनुसरण करैत, मुदा नामोच्चारण नहि कयलथिन, ओ साहित्यकेँ पहिने दुइ भागमे विभाजित करैत छथि-पहिल वैज्ञानिक साहित्य अथवा ज्ञानक साहित्य, जाहिमे सत्य अथवा तथ्य कथन सँह मुख्य उद्देश्य रहैत छैक । दोसर प्रकारक साहित्य ओ थीक, जाहिमे कहबाक शैली अधिक महत्त्वक होइत छैक आ ओकरा कलात्मक होयबेक चाहिऐक । एहि सन्दर्भमे ओकर अन्तिम उद्देश्य पाठकेँ सत्यक निकट लय जायब होइत छैक, मुदा से काज मनोहर, सुरुचिपूर्ण आ आकर्षक ढंगसँ होयबाक चाही । डिक्वेन्सी द्वारा निर्दिष्ट साहित्यक शक्ति यैह थीक । परन्तु हरिभाऊ ललित साहित्य, जतय मुख्य उद्देश्य सौन्दर्य आ अभिव्यक्तिक सुन्दरता छैक, आ कलात्मक साहित्यमे पार्थक्य स्पष्ट करैत छथि । हुनका अनुसारेँ उच्चतम अनुभूतिक अर्थमे कलात्मके साहित्य विदग्ध वाङ्मय थीक । अन्तिम लक्ष्य सत्यधरि पहुँचब थीक, मुदा से पहुँचबाक हेतु पहिल पाठकक ध्यानकेँ आकृष्ट करब आ शैलीक विभिन्न कलात्मक उप-

करणक प्रयोग करब, कथावस्तुक रचना आदि आदि थीक । एहन साहित्यमे स्फुट आ तत्कालिक उद्देश्य पाठककेँ आनन्दित करब आ ओकर मनोरंजन करब रहैछ, किन्तु गुप्त ओ अन्तिमलक्ष्य ओकरा प्रबुद्ध करब आ सत्य अथवा ईश्वर धरि पहुँचायब रहैत अछि । ई कथन मधलीस्थितिमे हुनक आमुखसँ सादृश्य रखैत अछि । ओ एक श्लोक उद्धृत कयने छथि—

स्वादुकाव्य रसोन्मिश्रं वाक्यार्थमुप भुञ्जते
प्रथमालीढ़मधवः पिबन्तिकटु भेषजम् ॥

तदुत्तर ओ चित्र ओ रंगकलाक सग तुलना करैत काव्य पर (व्यापक अर्थमे एकर तात्पर्य साहित्यसँ छनि) विचार करैत छथि । ओ संस्कृत काव्यशास्त्र आ यूरोपियन दार्शनिक आ कवि लोकनिक रचनामे देल गेल काव्यक परिभाषा सबकेँ उद्धृत करैत छथि । हुनका अनुसारेँ कविता (कलात्मक साहित्य) निष्कर्षतः कल्पना-प्रसूत थीक जे पाठककेँ गतिशील बनबैत अछि, आनन्द दैत अछि आ मनोरजन करैत अछि आ एकर आशय ई जे प्रकृतिक आ मानव मस्तिष्कक आन्तरिक सत्यकेँ ग्रहण करबामे सहायता पहुचबैत अछि । कविताक क्षेत्रक कोनो सीमा नहि होइत छैक आ ने कोनो विषय एकरा हेतु आन होइत छैक अथवा ने बहुत छोट अथवा ने बहुत पैघ होइत छैक ।

हिनकर साहित्यसँ सम्बद्ध दोसर आग्रम भाषण मराठी साहित्य सम्मेलनक अकोला अधिवेशनमे १९१२ मे कयलगे ल अध्यक्षीय भाषण थिकनि । एहि भाषणमे ओ साहित्यपर विचार करबाक अतिरिक्त चारि गोट सुझाव देन छथिन जकर प्रासगिकता एखनहु नष्ट नहि भेल अछि । ओ सुझाव सब थीक—

१—विश्वविद्यालयस्तर धरि भारतीय भाषाक अध्ययन अनिवार्य होयबाक चाही ।

२—मैट्रिक परीक्षा धरि मराठीकेँ शिक्षाक माध्यम बनाओल जाय ।

३—मराठी शब्दकोषक नवीन सस्करण प्रस्तुत कयल जाय ।

४—समस्त भारतीय भाषाक हेतु एक समान टेक्निकल शब्दावली होयबाक चाही ।

एहि भाषण सबसँ स्पष्ट होइत अछि जे ओ साहित्यसँ कतेक घनिष्ठरूपसँ सम्बद्ध छलाह आ एकरा कतेक महत्त्व दैत छलथिन आ भारतीयभाषाक प्रोन्नतिक हेतु केहन हार्दिकतासँ प्रतिबद्ध रहथि ।

हिनक अन्यान्य भाषणमेसँ एक भाषण विशेष उल्लेखनीय छनि । ई भाषण १९०१ मे भगवद्गीताक शिक्षा विषयपर ओ अङरेजीमे कयने छलाह । भाषणक क्रममे ओ तीन गोट केन्द्रीय प्रश्न कयने छलथिन-हम के थिकहुँ ? हम की करू आ हमरा की आशा करबाक चाही । जे प्रत्येक व्यक्ति अपनाकेँ पूछैत अछि । पहिल प्राथमिक प्रश्न अछि आ तेसर ओकर पूरक । दोसर प्रश्न

एहि तीनूमे सबसँ अधिक महत्त्वक अछि । एकर उत्तर थीक अवसरक जे माङ होइक आ अहाँक क्षमता अहाँकेँ जतेक अनुमति दैत हो, तदनुकूल अपन कर्त्तव्य अवश्य करू । क्यौ एहिमे कर्मयोगक बीज देखि सकैत अछि । ओ ईहो दर्शौलनि जे गीतामे ओहि विभिन्न व्यवस्थाकेँ समेकित करबाक प्रयास कयल गेल अछि जकर चरम लक्ष्य आत्माक अनुभूति थिकैक ।

हरिभाऊ ओहिमेसँ एक प्रमुख लोक छलाह जे लोकनि विष्णुशास्त्री चिपलूण करक स्मृतिकेँ चिरस्थायी करबाक हेतु नूतन मराठी विद्यालयक स्थापना कयने छलाह । प्रतिवर्ष गर्मी छुट्टी होयबाक दिनमे ओ छात्रसभक समक्ष दीक्षान्त भाषण करैत छलाह । ओहिमेसँ दस गोट भाषण नवयुवक लोकनि केँ परामर्श शीर्षकसँ संकलित छनि ।

काशीबाई काणित्करक नामें लिखल हरिभाऊक पत्रक उल्लेख पहिने कयल गेल अछि, मुदा तकर पुनः एतय उल्लेख करब अप्रासंगिक नहि होयत । ओहि खण्डमे तँतीस गोट दिनांकित पत्र छनि । पहिलुक तिथि ६ मई १८८५ आ अन्तिमक तिथि ७ मार्च १८८९ छनि । आओरो दूगोटपत्र अछि जाहिमे तिथि अंकित नहि अछि आ अपूर्ण अछि । ताहिमेसँ अधिकतर काशीबाईकेँ सम्बोधित छनि, मुदा किछु पत्र हुनक पति गोविन्दरावकेँ सम्बोधित सेहो छनि । ई पत्र सब सार्वजनिक उपयोगक हेतु नहि लिखल गेल छल आ तेँ हेतु स्वभावतः स्पष्टतासँ लिखल गेल अछि । ई पत्र सब हरिभाऊक पारिवारिक जीवन, अनेक विषयपर हुनकर हुनक बिगड़ब, हुनक पाठन-पाठनक क्षेत्र, पत्रिका सम्पादित आ प्रकाशित करबाक योजना सब आ सार्वजनिक जीवनमे लोक सभक प्रसंग हुनकर उल्लेख आदि-आदि पर नीक जकां प्रकाश दैत अछि, एक दीर्घपत्रक विशेषरूपे उल्लेख होयबाक चाही जाहिमे ओ भारतमे ईसाई मिशनरी सभक द्वारा कयल गेल काज सभक प्रशंसा कयने छथिन । ताहि समयमे व्यक्तिगत स्तरपर एहन विचार व्यक्त करबाक हेतु पर्याप्त साहसक प्रयोजन होइत छलैक । पत्रसभक सकलनक एहि खण्डमे काशीबाई काणित्कर जे भूमिका लिखने छथिन ताहिसँ ज्ञात होइत अछि जे हरिभाऊ ओहि पत्र सबकेँ सुरक्षित रखबाक वचन देने छलथिन जे पत्र ओ आ हुनक स्वामी हरिभाऊकेँ लिखने छलथिन । हुनकर विश्वास छलनि जे हरिभाऊ ओहि पत्र सबकेँ अवश्य सुरक्षित रखने होयताह । किन्तु जे हेतु हुनक मृत्युक बाद अन्य कागतपत्रमे सेहो हुनकर ओ पत्र सब नहि प्राप्त भेलनि तेँ काशीबाई काणित्कर अनुमान कयलनि जे हरिभाऊक खबास आन-आन कागतपत्रक संग हुनकर ओ चिट्ठी सबकेँ सेहो डाहि देने होयतनि । ओ ईहो कहैत छथि जे हरिभाऊ आत्मकथा सेहो लिखब आरम्भ कयने छलाह, मुदा ओहो प्रायः ओही कागत सभक संग जरि गेलनि । ई परम दुःखद बात थीक । हरिभाऊक आत्मकथा तथा हुनका नामें लिखल कावशीई काणित्कर

आ हुनक पति द्वारा लिखल पत्रसभक क्षति विशेष गंभीर बात थीक। यदि ओ दूनू वस्तु उपलब्ध रहैत आ ओकरा प्रकाशित कयल जाइत तँ आइ हमरा लोकनिकेँ हरिभाऊक प्रसंग आओरो विषय सबसँ परिचय भेटैत।

विभिन्न प्रकारक एहि रचना आ भाषणसबकेँ देखला उत्तर ई निःसन्दिग्ध प्रभाव पड़ैत अछि जे हरिभाऊक रुचि विस्तृत आ विभिन्न प्रकारक छलनि, हुनका लग ज्ञानक एक विशाल भण्डार छलनि आ रचना तथा भाषणक माध्यमसँ पुरुष आ स्त्रीगण, युवावर्ग आ वृद्ध लोकनि आ जनसमान्यकेँ सूचना देब, शिक्षत आ प्रबुद्ध करब हुनक मुख्य उद्देश्य छलनि। संगहि समाजक प्रति कर्त्तव्यबोध बहुत दृढ़ छलनि।

हुनकर सम्पूर्ण रचनामे उपन्यासहिक सबसँ अधिक चिरस्थायी प्रभाव मराठीक पाठक आ उपन्यास-लेखन पर पड़लैक। ओ उपन्यास-लेखनकेँ ततेक लोक-प्रिय बनौलनि जे हुनकर जीवनकालेमे कतेको उपन्यास-लेखक समक्ष अयलाह आ शताब्दक अन्तधरि उपन्यासमाला प्रकाशित करबाक हेतु अनेक प्रकाशनसंस्था स्थापित भेल आ हुनके जीवनकालमे कथा सेहो साहित्यक विशेष विधाक रूपमे प्रतिष्ठित भेल ओ लोक-प्रिय बनिगेल।

हुनक विभिन्न प्रकारक रचना आ भाषण सबमे १९११ मे मुम्बई मराठी ग्रंथ संग्रहालयमे कयल गेल भाषण, १९१२ मे अकोलामे कयल गेल अध्यक्षीय भाषण आ शेक्सपियरक नाटक सभक अनुवादक हुनका द्वारा कयल गेल आलोचना मराठी साहित्य-समीक्षा आ साहित्यिक समस्या सभक विचार विमर्शक इतिहासमे-युग प्रवर्त्तक मानल जाइत अछि। हरिभाऊक पहिल उपन्यास लेखनक बाद एक शताब्दक अओन-पओन आ अन्तिम उपन्यासक प्रकाशनक बाद साठि बरखक अओन-पओन समय बीति चुकल अछि, किन्तु आइओ सामान्य पाठकक मध्य उपन्यासकारक रूपमे हुनक नाम पर्याप्त प्रिय छनि आ लेखक एवं आलोचक लोकनिक मध्य हुनका विशेष सम्मान प्राप्त छनि।

हरिनारायण आप्टेक मुख्य कृति

सामाजिक उपन्यास

मधली स्थिति
गणपतराव
पण लक्ष्यांत कोण घेतो ?
यशवंतराव खरे
मी
जग हें असें आहे
भयंकर दिव्य
आजच
मायेचा बाजार
कर्मयोग
चाणाक्षपणाचा कळस

ऐतिहासिक उपन्यास

म्हैसूरचा वाघ
उषःकाल
केवळ स्वराज्यासाठी
रूपनगरची राजकन्या
चन्द्रगुप्त
सूर्योदय
मध्याहन
सूर्यग्रहण
कालकूट
वज्राघात
गड आला पण सिंह गेला

नाटक

जबरीचा विवाह
धूर्त–विलसित

मारून मुटकून वैद्यबुवा
(मौलिअरक फ्रेंच-भाषा नाटकक अनुवाद)
श्रुतकीर्तिचरित
जयध्वज अथवा असूर्यांगिनशमन
सुमतिविजय
संत सखूबाई
सती पिंगला

विविध कृति

१. स्फुट गोष्ठी, भाग-१ सं ४
२. १९०३ मे ठाणेमे देल गेल अध्यक्षीय भाषण
३. १९११ मे बम्बइमे देल गेल अध्यक्षीय भाषण
४. १९१२ मे अकोलामे देल गेल अध्यक्षीय भाषण

परिशिष्ट ख

परिगणित सन्दर्भ-ग्रन्थ

हरिभाऊ	डा० ल०म० भिंगारे
हरिनारायण आप्टे (चरित्र व वाङ्मय-विवेचन)	कु० वेणुबाई पानसे
प० वा० हरिनारायण आप्टे यांच्या आठवणी व कादंब या	वाग्भट नारायण देशपांडे
हरिभाऊंची सामाजिक कादंबरी	वा० ल० कुलकर्णी
हरिभाऊच्या कादंबरींतील व्यक्ती	उषा हस्तक
हरिभाऊ आप्टे ह्यांच्या कादंब या	अचला जोशी
ह०ना० आप्टे यांचे कादंबरी-तंत्र	डा० कु०रा० सावंत
मराठी कादंबरीचें पहिलें शतक	सौ० कुसुमावती देशपांडे
कोलटकरांचा लेखसंग्रह	संपादित
हरिभाऊंची पत्रें	सं० वाग्भट नारायण देशपांडे
मासिक मनोरंजन : अप्रैल, १९१९, हरिभाऊ विशेषांक शेक्सपिअरच्या	सं० डा० सं० गं० मालशे
भाषांतराची दोन परीक्षणे—ह० नारायण आपटे (शेक्सपियरके दुइ नाटकक अनुवादक हरिभाऊ द्वारा समीक्षा)	

117136
9.12.04

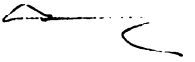

हरिनारायण आप्टेक मुख्य कृति

सामाजिक उपन्यास

मधली स्थिति
गणपतराव
पण लक्ष्यांत कोण घेतो ?
यशवंतराव खरे
मी
जग हें असें आहे
भयंकर दिव्य
आजच
मायेचा बाजार
कर्मयोग
चाणाक्षपणाचा कळस

ऐतिहासिक उपन्यास

म्हैसूरचा वाघ
उषःकाल
केवळ स्वराज्यासाठी
रूपनगरची राजकन्या
चन्द्रगुप्त
सूर्योदय
मध्याह्न
सूर्यग्रहण
कालकूट
वज्राघात
गड आला पण सिंह गेला

नाटक

जबरीचा विवाह
धूर्त–विलसित

मारून मुटकून वैद्यबुवा
(मौलिअरक फ्रेंच-भाषा नाटकक अनुवाद)
श्रुतकीर्तिचरित
जयध्वज अथवा असूर्यांगिनशमन
सुमतिविजय
संत सखूबाई
सती पिंगला

विविध कृति

१. स्फुट गोष्ठी, भाग-१ सं ४
२. १९०३ मे ठाणेमे देल गेल अध्यक्षीय भाषण
३. १९११ मे बम्बइमे देल गेल अध्यक्षीय भाषण
४. १९१२ मे अकोलामे देल गेल अध्यक्षीय भाषण

परिशिष्ट ख

परिगणित सन्दर्भ-ग्रन्थ

हरिभाऊ	डा० ल०म० भिंगारे
हरिनारायण आप्टे (चरित्र व वाङ्मय-विवेचन)	कु० वेणुबाई पानसे
प० वा० हरिनारायण आप्टे यांच्या आठवणी व कादंब या	वाग्भट नारायण देशपांडे
हरिभाऊंची सामाजिक कादंबरी	वा० ल० कुलकर्णी
हरिभाऊच्या कादंबरींतील व्यक्ती	उषा हस्तक
हरिभाऊ आप्टे ह्यांच्या कादंब या	अचला जोशी
ह०ना० आप्टे यांचे कादंबरी-तंत्र	डा० कु०रा० सावंत
मराठी कादंबरीचें पहिलें शतक	सौ० कुसुमावती देशपांडे
कोलटकरांचा लेखसंग्रह	संपादित
हरिभाऊंची पत्रें	सं० वाग्भट नारायण देशपांडे
मासिक मनोरंजन : अप्रैल, १९१९, हरिभाऊ विशेषांक शेक्सपिअरच्या	सं० डा० सं० गं० मालशे
भाषांतराचीं दोन परीक्षणे—ह० नारायण आपटे (शेक्सपियरके दुइ नाटकक अनुवादक हरिभाऊ द्वारा समीक्षा)	

117136
9.12.04

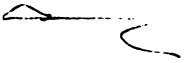

हरिनारायण आप्टे (१८६४–१९१९) सर्वसम्मति सँ आधुनिक मराठीक सामाजिक एवं ऐतिहासिक दूनू प्रकारक उपन्यास क संगहि मराठी कथा-साहित्य कें केवल मनोरंजन क स्तर सँकला क एक गंभीर लेखनक स्तर धरि ऊपर उठौ लनि। ओ संस्कृत ग्रन्थ सभक अनुशीलन कयनहि छलाह, अंग्रेज़ी एवं अन्यान्य पाश्चात्य साहित्यहु मे हुनक जकां प्रवेश छलनि।

यद्यपि पढ़ब-लिखब हुनक मुख्य आजीविका छलनि, किन्तु ओ ने पुस्तकीय कीट रहथि आ ने हस्तिदन्त-निर्मित स्तूपाकार उपन्यास कारे। ओ सार्वजनिक जीवनमे से हो सक्रिय भाग लेनिहार रहथि। १८९० मे ओ अपन एक पत्रिका 'कर्मणुक' नामक प्रकाशित करय लगलाह जाहि मे अपन उपन्यास तथा कथा सब प्रकाशित कयलनि। आगरकरक मृत्युक पछाति 'सुधारक' नामक पत्रक सम्पादन मे सहायता कयलथिन आ किछु दिनुक हेतु उदारवादी विचारक एक पत्र 'ध्यान प्रकाश' क सम्पादन कयलनि। एखनहु सामान्य पाठक, संगहि मराठी साहित्यक गंभीर अध्येता लोकनि द्वारा हिनक उपन्यास सब बड़ रुचि पूर्वक पढ़ल जाइत छनि।

एहि प्रबन्धक लेखक **श्री आर० बी० जोशी** १९६८ मे अंग्रेज़ीक प्राचार्यक रूप मे सेवा-निवृत भेल छलाह। ई सुविख्यात लेखक छथि आ मराठीक प्रमुख पत्र-पत्रिका मे सामाजिक विषय पर कथा, निबन्ध, आलोचना, यात्रा-विवरण एवं अन्यान्य विधा मे रचना सब लिखने छथि।

Library IIAS, Shimla
MT 891.463 092 Ap 83 J
00117136

SAHITYA AKADEMI
REVISED PRICE Rs. 15.00